होली विशेषांक

मूल्य - १५/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

मार्च ९४

होली : दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का पर्व

हीरक जयन्ती महोत्सव (जन्मदिन २१ अप्रैल)

इलाहाबाद

जहां पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी के जन्मोत्सव-पीयूषोत्सव में उनकी कृपा का अमृत छलकेगा!

तीर्थराज की संज्ञा से विभूषित प्रयागराज में आज से पांच वर्ष पूर्व इस युग में भी अमृत की बूंदें छलकी थीं, जब पूज्यपाद गुरुदेव ने पूर्ण कुम्भ के अवसर पर अपने सभी शिष्यों को कुम्भ दीक्षा दी थी और आशीर्वाद दिया था कि तुम सब भी निरन्तर मंथन करते हुए अमृत के कणों को इस धरा पर बिखेरो, तब से निरन्तर वहां साधनाओं का एक क्रम आरम्भ हुआ था।

पूज्यपाद गुरुदेव के आशीर्वचन और तपः रश्मियों के कण निरन्तर छलकते ही रहे। ऐसा अमृत जो उनके तप, उनके हृदय के रस और उनके हृदय के प्रेम से निर्मित हुआ। पिछले ही वर्ष जन्मोत्सव के अवसर पर सभी शिष्यों और साधकों ने ऐसे अमृत रस का एक बार पुनः पूरी मस्ती से रस पान किया ही था।

पावन तीर्थ राज का संगः

वही तीर्थराज प्रयाग इस वर्ष पुनः **२१ अप्रैल** को सम्पन्न होने वाले जन्मोत्सव का स्वागतकर्त्ता बनेगा, जिसके तीर्थराज होने का गौरव पुनः पूज्यपाद गुरुदेव के पावन चरण पड़ने से एवं साधनाओं की सरस्वती बहने से जागृत होगा **क्योंकि यह जन्मोत्सव अतिविशिष्ट हीरक जयन्ती का प्रारम्भ भी तो है। आने वाला युग जिस इतिहास को पढ़ेगा उसके एक पन्ने पर प्रयाग राज का नाम कुछ अलग ढंग से लिखा होगा जहां ऐसी दिव्यात्मा पता नहीं किन संयोंगो से न केवल बार-बार उपस्थित हुई, वरन वहां के साधकों ने एक जुट होकर इतिहास निर्मित कर दिया।**

सम्पूर्ण भारत वर्ष से :

किन्तु यह केवल एक प्रदेश व तीर्थ स्थान विशेष पर होने वाला सामान्य साधना शिविर मात्र नहीं है यह तो सभी शिष्यों के जीवन आधार पूज्यपाद गुरुदेव के जन्म दिन का अति पवित्र, समस्त भारत भर में फैले सारे शिष्यों का महापर्व है। साथ ही विदेशों में रह रहे शिष्यों के उल्लास का भी, जो इसमें आने के लिए कई माह से पत्रों व फोन द्वारा स्थान का पता निरन्तर करते रहे हैं और जो इस पर्व पर भी न उपस्थित न हो सके उसके जैसा दुर्भाग्यशाली तो कोई हो ही नहीं सकता, जो किसी बन्धन में बंध जाए और उमड़ता हुआ आकर अपने जीवन को गुरुचरणों में धन्य न बना ले उसके जैसा तो हतभाग्य कोई हो ही नहीं सकता। गुरु चरणों से बहते अमृत रस में जो निमग्न न हो सका वह फिर जीवन में और कुछ प्राप्त भी क्या कर सकेगा? जो किसी सीमा में बंध गया, मन में कुछ दबाए रह गया वह शिष्य तो हो ही नहीं सकता।

क्योंकि यह सिद्धाश्रम के योगियों के संग कुछ क्षण व्यतीत करने का सौभाग्य भी होगा। पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय दादा गुरुदेव **स्वामी सच्चिदानन्द जी** का कृपाकांक्षी बनने व उनके दर्शन प्राप्त करने का दुर्लभ अवसर होगा।

\अजय कुमार \उत्तम "निखिल"

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

वाममद्य सवितर्वाममुश्वो दिवे दिवे वाममस्मभ्त गूं सावीः।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेस्या धिया वामभाजः स्याम।।

(यजुर्वेद ८/६)

हे सर्वश्रेष्ठ सविता देव! आप मेरे लिए शुभ फल को प्रेरित करने वाले हों, आगामी दिवस में भी इसी प्रकार शुभ प्रदान करें और नित्य शुभ्रता व सिद्धि प्रदान करते हुए हमें दिव्यता की प्राप्ति कराएं।

नियम

विषय सूची

साधना

सद्गुरुदेव

कथ्य

स्तम्भ

विशेष

सम्पादकीय

''जब मैं फल के हृदय में गया तो एक बीज को कहते सुना – 'मैं भी एक दिन वृक्ष बनूंगा, तब पवन का संगीत मेरी टहनियों में होगा, सूर्य की किरणों की लुकाछिपी मेरे पत्तों पर नर्तन सा करेगी, और मैं हर ऋतु में अलग ढंग से गाऊंगा।'

लेकिन दूसरा बीज बोला – 'काश! ऐसा ही हो। मैं भी पहले ऐसा ही सोचा करता था, अब तो मुझे निराशा ही आती है।'

तीसरे बीज ने भी उसका समर्थन किया लेकिन चौथा बीज बोला – 'भविष्य के विषय में सदैव आशापूर्ण ढंग से ही सोचो।' पांचवे का मत निराशाजनक था – 'हम कुछ नहीं होंगे, जैसे हैं वैसे ही रहेंगे।' . . . . छठा, सातवां, आठवां– धीरे - धीरे करके सभी बीज इस विवाद में आ जुड़े।

मैं किसी का मत नहीं सुन पा रहा था और उस कोलाहल से निकल उस कली के अन्तस में प्रवेश कर गया, जहां अधिक बातचीत नहीं है।''

. . . . यह कथा कही थी सूफी मत के मानने वाले विद्वान खलील जिब्रान ने। भिन्न-भिन्न रंगों, मत-मतान्तरों और विचारों के कोलाहल से भरे इस जगत की वास्तविकता भी यही है किन्तु अनेक अनुभवों, जीवन शैलियों से पार होकर उस मौन कली का ही आश्रय लेना पड़ता है जिसमें सौम्यता और शांति है।

यही हमारा अंतस है, जो अवगुंठित कली की ही भांति अनेक सम्भावनाओं को समेटे हुए मौन है। **इसका प्रस्फुटन और विकास केवल गुरु- ऊष्मा से ही होता है–** कभी स्नेह की उष्मा, कभी करुणा की, कभी स्मित हास्य की, कभी कृपा-कटाक्ष की अथवा मार्मिक वचन की और एक - एक पंखुड़ी खिलकर अपने अंतस में प्रकाश व सुगन्ध भर जाती है। आश्चर्य होता है – ***''मेरे अन्दर इतना अधिक आनन्द, इतनी अधिक सुगन्ध और रंग भरा था, और मैं उससे वंचित रहा!''***

इसी माह में होली है। आप सभी बाह्य रूप से जितने अधिक रंगों में सराबोर हों, आंतरिक रूप से भी उतना ही भीग जाएं, रंगों में रंग जाएं। आंतरिक रूप से रंगने के लिए ही विभिन्न रंगों को शब्दों में बांधकर यह अंक प्रस्तुत है, जिसमें शुभकामनाओं की गुलाल और अपनेपन की अबीर अतिरिक्त है।

शुभ कामनाओं सहित

नन्दकिशोर श्रीमाली

पाठकों के पत्र

♦ मैंने आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका का एक अंक अपने रिश्तेदार के यहां पढ़ा। मुझे जून ९३ के सम्मोहन विशेषांक की पृष्ठ संख्या २७ पर सौन्दर्य समस्या के विषय में यह जानने की इच्छा है कि क्या यह प्रयोग लड़कों के लिए भी है?

गिरधारी लाल, रायपुर

-- यह समस्त प्रयोग विशेषतः स्त्रियों के लिए ही हैं — **सहा० सम्पादक**

♦ नवम्बर ९३ का अंक मैंने पढ़ा, ये अंक मेरे लिए प्राण स्वरूप है। मेरी आध्यात्मिक रुचि आपकी पत्रिका को पढ़ने के बाद बढ़ती जा रही है। हे गुरुदेव! आप-अपने इस शिष्य को कृपा और आशीर्वाद दें।

पलास अरविन्द जी, पंचमहाल

♦ राशियों पर मैं कभी विश्वास नहीं करता था किन्तु **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** की राशि हर बार सही उतरने लगी है, इसलिए मैं अब बेचैनी से पत्रिका का हर माह इंतजार करता हूं।

प्रहलाद जसवानी, मंडला

♦ नवम्बर ९३ के **अलौकिक विशेषांक** के पृष्ठ ६१ पर चार दीक्षाओं से सम्बन्धित कार्यक्रम निर्धारित किए गए हैं। यह अलौकिक विशेषांक दिसम्बर माह में घटित होने वाली एक अलौकिक घटना की पूर्व सूचना के साथ प्रत्येक शिष्य एवं गुरु भाइयों में सहृदयता का संचार तीव्र वेग के साथ उत्पन्न कर रही है।

राजेश कुमार वैश्य,
सदर बाजार, लखनऊ

-- यद्यपि यह पत्र हमें विलम्ब से मिला, किन्तु एक शिष्य की कैसी भावनाएं होती हैं यह उसको भली-भांति स्पष्ट करता है जिससे हमने इसे प्रकाशन के योग्य समझा।

— सहा० सम्पादक

– पूज्य गुरुदेव के शिष्य कहां-कहां तक फैले हैं और उनकी क्या मनोभावनाएं हैं, इसका परिचय हमें पत्रों के माध्यम से ही प्राप्त होता है। अभी कुछ दिनों पूर्व पाण्डिचेरी के एक अहिन्दी भाषी शिष्य ने अपनी टूटी-फूटी भाषा में जो भाव व्यक्त किए उसे हम ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर रहे हैं।

— सहा० सम्पादक

दर्शन की मुझे भूख प्रभु जी और नहीं कुछ मांगू
कर दो जीवन सफल हमारा, नाथ
हमें दर्शन की प्यास
हम अज्ञानी ज्ञान नहीं कुछ करम-धरम न जानी
जीवन नैया भागे ऐसे जैसे बहता पानी
अब तो हाथ नहीं पतवार
नाथ हम दर्शन के प्यासे
निखिल चरण में ध्यान में लगा के
जीवन ज्योति जलाऊं
निखिल हैं निखिल
बाती निशिदिन रोशन पाऊं
बोलो गुरु जी की जय जयकार
नाथ हम दर्शन के प्यासे
परम गुरु गुरुदेव नाथ हम दर्शन के प्यासे

जगत नारायण,
लॉसपेट, पाण्डिचेरी - ८

♦ मैं आपकी पत्रिका मई से पढ़ रहा हूं और इन पत्रिकाओं में जो भी बातचीत लिखी होती है, उनको पढ़कर हमें काफी आनन्द होता है, और काफी छोटी-मोटी समस्याएं पढ़कर हल भी हो गई।

हवलदार आर० पी० सिंह
द्वारा ५६ ए० पी० ओ०

♦ आपकी **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका का अक्टूबर ९३ का अंक पढ़कर मेरे अपने में आत्मस्वाभिमान जाग उठा और मैं आप तक पहुंचने का रास्ता ढूंढ रहा हूं। मैं आपका शिष्यत्व आत्मसात करना चाहता हूं और शायद शीघ्र ही ऐसा बन सकूं।

विजय गोविन्द आचरेकर,
बम्बई

♦ पत्रिका के फरवरी अंक में प्रकाशित **जलगमन साधना** तो आश्चर्यजनक ही कही जा सकती है। विश्वास नहीं होता कि इस विद्या के ज्ञाता अभी भी उपस्थित है। मैं इससे सम्बन्धित दीक्षा प्राप्त करने का इच्छुक हूं।

ज्योति पी. नांदरेकर,
पुणे

★

वर्ष १४ **अंक ३** **मार्च ९४**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक,गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार** - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

सिद्ध सफल- २७.०३.९४

होली तो पूरे वर्ष का पर्व है, यों तो प्रत्येक पर्व वापस एक साल वाद ही आता है लेकिन जो होलिका-दहन की रात्रि को चूक जाता है वह केवल एक साल ही नहीं, जीवन की वेशकीमती घड़ियां खो देता है, क्योंकि एक साल वाद कुछ कहा नहीं जा सकता कि क्या स्थितियां हों . . .

इस वर्ष जो ग्रह-संयोग वना है उसमें तो यही वात सौ फीसदी खरी उतरती है।

इसी से प्रयत्न कर वे प्रयोग ढूंढ निकाले गए जिनसे जीवन का कोई पहलू छूट न जाए . . .

होली, उल्लास और रंगों का पर्व है यही रंग आपके जीवन में स्थायी भी हो सकते हैं। तांत्रिक और साधक ही सही रूप में होली का महत्व समझते हैं क्योंकि होलिका-दहन की रात सामान्य रात नहीं होती। यह तो तंत्र-साधनाओं का ऐसा सिद्ध मुहूर्त होता है जिसकी कोई मिसाल ही नहीं। दीपावाली की रात के बाद यही तो होती है वह रात जिस दिन कोई भी साधना, चाहे वह तांत्रोक्त हो या मांत्रोक्त, यदि सम्पन्न की जाए तो पूरा-पूरा फल दे देती है।

होली का पर्व तो साधना का **स्वतः सिद्ध** ऐसा मुहूर्त है जो दुर्भाग्य को पूर्णता से सौभाग्य में बदलने की सामर्थ्य रखता है और **चैत्र-नवरात्रि अर्थात् नए वर्ष के प्रारम्भ से पहले विशेष सौभाग्यदायक साधनाएं सम्पन्न कर लेने से आगामी वर्ष पूरी तरह से उल्लास, सफलता और सुख-शांति में व्यतीत होता है।**

इस वर्ष होली के अवसर पर ग्रह-संयोगों से मेल खाती हुई जो विशेष साधनाएं सामने आयीं, उन्हें हम अपने पाठकों को नवसंवत् की अग्रिम शुभकामनाओं के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं --

१. दरिद्रता का सम्पूर्ण रूप से समापन करें

किसी भी त्यौहार को मनाने का सही अर्थ यही है कि सबसे पहले तो घर से दरिद्रता दूर की जाए एवं सुख-सौभाग्य के क्षण आएं। इसके बिना न तो पर्व का कोई अर्थ है और न ही आगे की किसी साधना का। इस वर्ष पर्व को सही रूप से उल्लासमय बनाने के लिए ही यह विशिष्ट प्रयोग सबसे पहले प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रयोग में एक **लघु मोती शंख** लेकर

दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का सिद्ध पर्व

इसी पर संक्षिप्त साधना करनी है।

होलिका दहन की रात्रि में ११.३५ बजे से १२.४० के मध्य इसे केसर से पूरी तरह रंग कर पीले चावलों की ढेरी पर स्थापित कर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की केवल एक माला-मंत्र जप करना है, और सुबह होने पर उसे चावलों सहित होलिका की अग्नि में विसर्जित कर देना है।

होली का अर्थ सीमित नहीं विस्तृत है साधना ग्रंथों में शिवरात्रि से लेकर होलिका दहन की रात्रि तक का सारा काल ही 'होली' माना गया है और होलिका दहन की रात्रि तो. . .

यह प्रयोग अत्यंत ही तीक्ष्ण तथा सम्पूर्ण रूप से दरिद्रता का विनाश करने वाला है।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं

मंत्र-जप के उपरांत माला भी शेष सामग्री के साथ होलिका की अग्नि में विसर्जित कर देने का विधान है।

२. रोग का निवारण आवश्यक है

दरिद्रता के विनाश के बाद दूसरी प्रमुख आवश्यकता है कि न तो साधक के शरीर में कोई बीमारी या क्षीणता रहे, और न ही उसकी पत्नी और बच्चों के साथ किसी प्रकार की कोई शारीरिक बाधा हो। होली की रात्रि तांत्रोक्त दृष्टि से चैतन्य होने के कारण, ऐसे निवारक प्रयोगों में सफलता शीघ्रता से मिलती है। एक **तांत्रोक्त नारियल** लेकर (परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए अलग-अलग तांत्रोक्त नारियल आवश्यक है) उसे सिंदूर से पूरी तरह रंग लें और स्वयं को भी सिंदूर से तिलक कर अपनी बीमारी बोलें तथा परिवार के लिए भी प्रयोग करने पर उनकी भी बाधाएं बोलकर, परिवार का मुखिया **मूंगे की माला** से एक माला निम्न मंत्र का जाप करे, **इसमें अलग-अलग सदस्यों के लिए मंत्र-जप आवश्यक नहीं है। एक माला मंत्र जप से ही प्रत्येक को पूर्ण प्रभाव प्राप्त हो जाता है।**

मंत्र –

ॐ चितू पिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञा ज्ञापय स्वाहा ।।

मंत्र जप के उपरांत साधक माला और सभी तांत्रोक्त नारियलों को होलिका-दहन की रात्रि में ही जाकर अग्नि में समर्पित कर दे और लौट कर हाथ पांव-धो ले। यह प्रत्येक जटिल एवं पीड़ाकारक व्याधियों का भी अचूक प्रयोग है।

३. तांत्रिक प्रयोगों का पलट कर वार हो

समाज ऊपरी तौर पर भले ही सभ्य और आधुनिक कहा जाने लगा है लेकिन अंदर ही अंदर जिस प्रकार से तीव्र घात-प्रत्याघात चलते रहते हैं, उनके बाद तो यह आवश्यक है कि होली की रात्रि में ऐसा प्रयोग कर जहां एक ओर सुरक्षा-चक्र बना लिया जाए वहीं ऐसा प्रयोग करने से यदि कोई तांत्रिक प्रयोग, व्यापार बंध, बुद्धि-स्तम्भन, गर्भ बंधन जैसे काले प्रयोग करे या करवाए गए हों तो वे भी पलट कर विपक्षी के पास लौट जाते हैं।

दस तांत्रोक्त फलों को लेकर भूमि पर रखें तथा प्रत्येक फल के आगे एक तेल का दीपक जला कर **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें --

मंत्र –

ॐ स्त्रां ॐ स्त्रीं ॐ स्त्रूं ॐ स्त्रः ।।

यह मंत्र-जप एक ही रात्रि में पूर्ण हो जाना चाहिए। साधक दस बजे के बाद इस साधना में कभी भी बैठ सकता है और दूसरे दिन सुबह सभी तांत्रोक्त फलों को कहीं सुनसान स्थान पर गहरा गड्ढा खोद कर दबा दें। इससे व्यापार बंध, स्तम्भन आदि प्रयोगों से मुक्ति मिल जाती है।

४. गृह-दोष, पितृ-दोष जीवन में अभिशाप है

घर में अभिशप्त आत्माओं की उपस्थिति जीवन में ऐसा अभिशाप है जिससे पूरा का पूरा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और स्थिति यहां तक बिगड़ते देखी गई है कि पीड़ित व्यक्ति घबरा कर आत्महत्या करने की बात भी सोचने लगता है। ऐसे समस्त दोषों और पितृ-दोषों की समाप्ति यदि पूर्ण रूप से संभव हो सकती है तो केवल होली की ही रात्रि

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

जाग! ! ! मछिन्दर गोरख आया . . .

योग के प्रवर्तक भगवान शिव और भगवान शिव द्वारा प्रवर्तित ज्ञान का विस्तार करते हुए गुरु गोरखनाथ . . .

जो अपनी हठधर्मिता और नवीन शैली के कारण एक नवीन पथ की ही रचना कर गए।

वेदोक्त मंत्रों की दुरुहता और उनमें अस्पष्टता कर दिए जाने के कारण क्रुद्ध होकर उन्होंने जन सामान्य की भाषा में ही रच डाले – साबर मंत्र

कुछ विद्वानों का मत है कि साबर मंत्रों के मूल प्रवर्तक साबरी ऋषि थे लेकिन जनश्रुतियों में विख्यात तथ्य और प्रामाणिकता यही है कि सर्वप्रथम गुरु गोरखनाथ ने ही संस्कृत भाषा के एकाधिकार और उस के द्वारा पुरोहितों का दुरुपयोग नष्ट करने के लिए ही यह कदम उठाया।

गुरु गोरखनाथ की यह विशेषता रही, कि जहां उन्होंने अपने गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी से प्राप्त योग का ज्ञान समाज में वितरित किया वहीं नित्य प्रति के जीवन में आने वाली कठिनाइयों को समाप्त करने के लिए अनोखे और अत्यन्त सरल विधान रचे। एक ओर पूरा पुरोहित वर्ग . . . उनको चुनौती देता हुआ, हास्य-मिश्रित दृष्टि से उनकी साधनाओं पर दृष्टिपात करता हुआ, और दूसरी ओर अडिग खड़े गुरु गोरखनाथ! उन्होंने अपने साधना के द्वारा हिन्दी भाषा में और वह भी अटपटे शब्दों में सर्वथा नूतन शैली के साबर मंत्रों की रचना कर साधना जगत में एक नया पृष्ठ ही खोल दिया।

कालान्तर में उनके द्वारा प्रतिपादित साबर मंत्रों की तीक्ष्णता तो सभी ने स्वयं प्रयोग कर समझी, साथ ही अन्य मतों के अनुयायियों ने भी साबर मंत्रों की रचना की। **जिस प्रकार से नाथ साबर मंत्र हैं उसी प्रकार से जैन साबर मंत्र आदि भी पर्याप्त प्रभावशाली और सफल सिद्ध हुए।**

नाथ योगियों से सम्बन्धित कथाएं जन-सामान्य में अत्यन्त लोकप्रिय हैं और साबर मंत्र के ज्ञाता इन योगियों के साथ भांति-भांति की रोचक कथाएं व किंवदन्तियां जुड़ी हैं जिनमें से गुरु गोरखनाथ से सम्बन्धित पक्ष ही सबसे अधिक हैं। **छिन-छिन जोगी नाना रूप–** कहीं पर वे अपनी विशिष्ट शैली में ज्ञान का अत्यन्त दुरुह वर्णन करते मिलते हैं, और कहीं आधा सीसी दूर करने या पौरुष प्राप्त करने के लिए

प्रयोग वर्णित करते सामने आते हैं। **जो जीवन की सम्पूर्णता से परिचित होते हैं उनके समक्ष जीवन का प्रत्येक रंग इसी प्रकार से एक पक्ष मात्र होता है और प्रत्येक ढंग से जनसामान्य का कल्याण करना, उसका भौतिक जीवन संवारना, उसको अध्यात्म की ऊंचाइयों से परिचित कराना, दोनों में अन्तर करने की मेधा देना और अन्तिम लक्ष्य तक ले जाना– यही सद्गुरु का वास्तविक चरित्र होता है।** इसी से व्यक्ति सहज ही भ्रमित हो जाता है, आलोचना करने लगता है और प्रायः अविश्वास भी कर बैठता है।

सद्गुरु केवल शुष्क अध्यात्म का ज्ञान ही नहीं देते, क्योंकि प्रारम्भ से ही सांसारिक विषय-वासनाओं और तृष्णाओं में लिप्त व्यक्ति उस ज्ञान को ग्रहण नहीं कर सकते और न वास्तव में यह जीवन का यथार्थ है। जीवन का उच्चतम लक्ष्य भौतिकता को स्पर्श करता हुआ, उससे अलिप्त होता हुआ उस शून्य पर जाकर पूर्ण होता है, जहां नित्यानन्द है–

कै चलिबा पंथा! कै सीबा कंथा।
कै धरिबा ध्यान! कै कथिबा ज्ञान।।

नाथ योगियों की महान परम्परा आगे चलकर उदात्त नहीं रह गई और पंचमकारों के सेवन द्वारा उनमें भोग-बुद्धि प्रधान हो गई। ईर्ष्या, द्वेष और दम्भ के कारण परम्परा को जो हानि पहुंची वह गुरु गोरखनाथ के नाम पर बट्टा रहा, साथ ही इस प्रकार से ऐसे अनेक साबर मंत्र लुप्त हो गए, जिनका संरक्षण नाथ योगियों ने भली प्रकार से नहीं किया, इन प्रयोगों में उलटवांसी भाषा में योग के गोपनीय रहस्य तो छुपे हैं ही, साथ ही नित्य प्रति के जीवन में आने वाली ऐसी अनेक कठिनाइयों के दुर्लभ हल हैं, जिनके लिए व्यक्ति को अन्यथा बहुत भटकना पड़ता है क्योंकि कुछ ऐसी स्थितियां भी होती हैं जहां व्यक्ति लज्जा से कुछ नहीं कह पाता या उसे प्रामाणिक उपाय नहीं मिल पाता।

अवधू अहार तोड़ौ निद्रा मोड़ौ
कवहूं न होइबो रोगी
• • •
छटे छमाहे काया पलटिवा
ते को विरला जोगी
• • •
फुरतै भोजन अल्प अहारी
कहे गोरख सो काया हमारी

पूज्यपाद गुरुदेव श्रीमाली जी के साधनात्मक जीवन का एक भाग गोरखपुर में भी व्यतीत हुआ है, जब वे अपनी नेपाल की यात्रा एवं शक्ति साधना की ओर अग्रसर थे, तब पूज्यपाद गुरुदेव ने न केवल गोरखपुर जिले में निवास कर शोध द्वारा वरन् अपनी योग साधना के द्वारा उन स्थानों का भी पता लगाया जहां कभी पूर्वकाल में गुरु गोरखनाथ ने तपस्या एवं साबर मंत्रों की रचना की थी। अपनी **प्रज्ञा साधना** विद्या के द्वारा उन्होंने ऐसे अनेक ज्ञात और अज्ञात स्थल तथा वह ज्ञान खोज निकाला जो मौखिक परम्परा में होने के कारण लुप्त हो गया था। **वर्ष १९९२ में पूज्यपाद गुरुदेव ने गुजरात के पंचमहल जिले के गोधरा नामक स्थान पर अपने सभी शिष्यों को साबर साधना सम्पन्न कराते समय यह रहस्योद्घाटन किया था कि यह क्षेत्र और यहां का कण-कण गुरु गोरखनाथ की तपस्या से आपूरित है तथा यहां के वायुमण्डल में आज भी वे ध्वनियां सुरक्षित हैं, जो कभी गुरु गोरखनाथ के श्रीमुख से उच्चरित हुई थीं।**

सौभाग्यवश पूज्यपाद गुरुदेव के एक शिष्य ने ऐसे समस्त प्रयोगों को एक स्थान पर संग्रहित किया है और उन दुर्लभ प्रयोगों में से चुनकर हम इस बार कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दे रहे हैं, जिनसे पाठकों को स्पष्ट हो सकेगा कि साबर मंत्र भी कितने अधिक प्रभावशाली और अचूक होते हैं तथा आज के युग में पूर्ण फलदायक सिद्ध हो सकते हैं।

१. खूनी बवासीर दूर करने का प्रयोग

बवासीर अपने-आप में ही लज्जादायक और अत्यन्त पीड़ा देने वाला रोग है। यदि व्यक्ति को मस्सों के रूप में यह रोग नहीं होता तो गुदा मार्ग में लम्बी-लम्बी धारियां पड़ जाती हैं, जिन्हें डॉक्टरी भाषा में फिशर कहते हैं, और मल-त्याग करते समय व्यक्ति को प्राणान्तक कष्ट होता है। ऑप्रेशन अथवा विटामिनों की सहायता से यह स्थिति सहज ही नहीं सम्भल पाती और तब व्यक्ति को बाध्य होकर अन्य उपाय भी ढूंढने पड़ते हैं। यदि इसके स्थान पर व्यक्ति प्रारम्भ से ही एक साबर प्रयोग सम्पन्न कर ले तो स्थिति गम्भीर होने के पूर्व ही आराम मिल जाता है।

साबर प्रयोग की विधि सरल और हानि रहित होती है, इसमें गुरु-भक्ति का विशेष महत्व है। साधक को चाहिए कि वह एक **जड़बुल** नामक गुटिका प्राप्त कर ले और किसी भी शुक्रवार अथवा रविवार की रात्रि में इसे सामने रखकर **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला अर्थात् १०८ बार मंत्र का उच्चारण करे।

मंत्र

ॐ उमती उमती चल स्वाहा

मंत्र-जप के उपरान्त साधक इन दोनों वस्तुओं को या तो गड्ढे में दबा दे अथवा जलाकर नष्ट कर दे। यह मात्र एक दिवस का प्रयोग है और साधक को पूर्ण व स्थायी लाभ देने में समर्थ है।

२. मन का उचाट रहनाः साबर मंत्रों द्वारा उपचार सम्भव है

आज के युग में मन का उचाट रहना, काम में मन न लगना एक आम समस्या हो गई है। प्रायः व्यक्ति नहीं समझ पाता कि वह क्यों सुखी और संतुष्ट नहीं है और क्यों मन उखड़ा-उखड़ा रहता है, जिसके फलस्वरूप उसकी बुद्धि और अधिक भ्रष्ट हो जाती है तथा वह अपने आप पर रहा-सहा नियन्त्रण भी खो बैठता है, दिग्भ्रमित-सा एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर भटकता रहता है। **गुरु गोरखनाथ ने मूल रूप में यह प्रयोग किसी के द्वारा द्वेषवश उच्चाटन प्रयोग करा दिए जाने के उपचार के रूप में खोजा था और आज भी मन के दिग्भ्रमित हो जाने की दशा में यही उपाय सर्वाधिक लाभप्रद और अनुकूल है।**

इस प्रयोग में व्यक्ति को किसी मंगलवार को साधना सम्पन्न करनी होती है तथा आगामी पांच मंगलवारों तक पांच बार इस साधना को सम्पन्न करना पड़ता है। साबर साधनाओं में गुटिकाओं व जड़ी का विशेष महत्व होता है, और इस साधना में भी **वैधृतिनाथ गुटिका** स्थापित कर उस पर तीन सफेद फूल-स्वगुरु, गुरु गोरखनाथ, एवं वैधृतिनाथ जी का स्मरण करके चढ़ाएं। वैधृतिनाथ जी ने इस साधना की पूर्णता के लिए इस गुटिका की खोज की थी अतः उनका स्मरण भी आवश्यक रहता है। अपने गुरु द्वारा प्रदत्त गुरु मंत्र का जप कर लौंग की कली गुटिका पर भेंट कर निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप **सफेद हकीक माला** से करें--

मंत्र –

ॐ नमो आदेश गुरु का आदेश उड़तो आवे चलो चलावे सात देश ले जाए बल को बांधे नाथ कहावे, मेरी रमती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा।

प्रथम मंगलवार की साधना के उपरान्त गुटिका एवं माला को कहीं सुरक्षित रख दें तथा अगले मंगलवार को पुनः यही साधना सम्पन्न करते हुए क्रमशः पांच मंगलवारों तक साधना सम्पन्न करें। अन्तिम दिन की साधना के उपरान्त गुटिका एवं माला किसी लाल वस्त्र में बांधकर किसी पवित्र स्थान पर रख दें, जहां जानवरों आदि का स्पर्श न हो।

व्यक्ति प्रथम मंगलवार के उपरान्त ही अनुकूलता अनुभव करने लगता है तथा पांच मंगलवार तक साधना करने के उपरान्त वह निश्चित रूप से अपने को अधिक स्वस्थ तथा मानसिक रूप से चैतन्य अनुभव करने लगता है।

३. अनिद्रा रोग और मानसिक तनाव भी सिमट जाता है इन्हीं साबर मंत्रों में

आज के युग की विडम्बना कहें या व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन की बात किन्तु अनिद्रा रोग और मानसिक तनाव सामान्य घटना होती जा रही है। व्यस्त जीवन में रहते हुए व्यक्ति जाने -अनजाने में सैकड़ों तनावों से घिरा रहता ही है जिसकी दुःखद परिणति मानसिक तनाव में ही होती है और फिर आगे चलकर व्यक्ति सारी की सारी रात आंखों में काटने के लिए मजबूर हो जाता है जिससे उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और निर्णय लेने की क्षमता घटने लग जाती है। साबर मंत्र का प्रयोग ऐसी स्थिति में लाभदायक सिद्ध होता है। मूल रूप से ये प्रयोग अभिचारिक क्रियाओं के समापन के लिए गुरु गोरखनाथ द्वारा रचे गए थे जिनका युग के अनुसार परिवर्तन कर इन समस्याओं में लाभ प्राप्त कर सकते हैं और **सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें प्रयोग कर्त्ता को कोई विपरीत प्रभाव या साइड इफेक्ट वाली बात देखनी नहीं पड़ती।**

गुरु चौरंगी नाथ जी द्वारा खोजी गई और उन्हीं के मंत्रों से सिद्ध एक विशेष गुटिका काले तिलों के ढेरी पर स्थापित कर किसी भी मंगलवार की रात से आरम्भ कर निम्न मंत्र की २ माला मंत्र जप **हकीक माला** से किया जाए तो ऐसी मानसिक शांति प्राप्त होने लगती है जिससे अनिद्रा और तनाव दूर होने लगते हैं।

मंत्र –

मेरे को सात वहन आवें यम और यम का दण्ड चलावे नीच का नाम जाए, काली का तेज और दुहाई भैरो राज की।

इस प्रयोग व उपरोक्त प्रयोग में अन्तर यह है कि उपरोक्त रोग जहां किसी विशेष कारण से होता है वहीं अनिद्रा और तनाव तो आज की परिस्थितियों की ही देन हैं। मंत्र जप के उपरान्त उपरोक्त चौरंगीनाथ गुटिका को किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें और माला को पवित्र जल में विसर्जित कर दें। यह मूल रूप से एक दिन का ही प्रयोग है।

हमें गुरु गोरखनाथ के साथ-साथ पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए जिनकी कृपा से एक लुप्त होती विद्या पुनर्प्रकाशित हो सकी। **समय-समय पर हम पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्राप्त सूत्र एवं मंत्रों के आधार पर साबर मंत्रों का ज्ञान प्रकाशित करते रहेंगे** जिससे पाठकों को साबर मंत्रों की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त हो सके। ★

मानसरोवर में आई कै हंसा!

गुरु सिद्धि सर्वार्थ सिद्धि
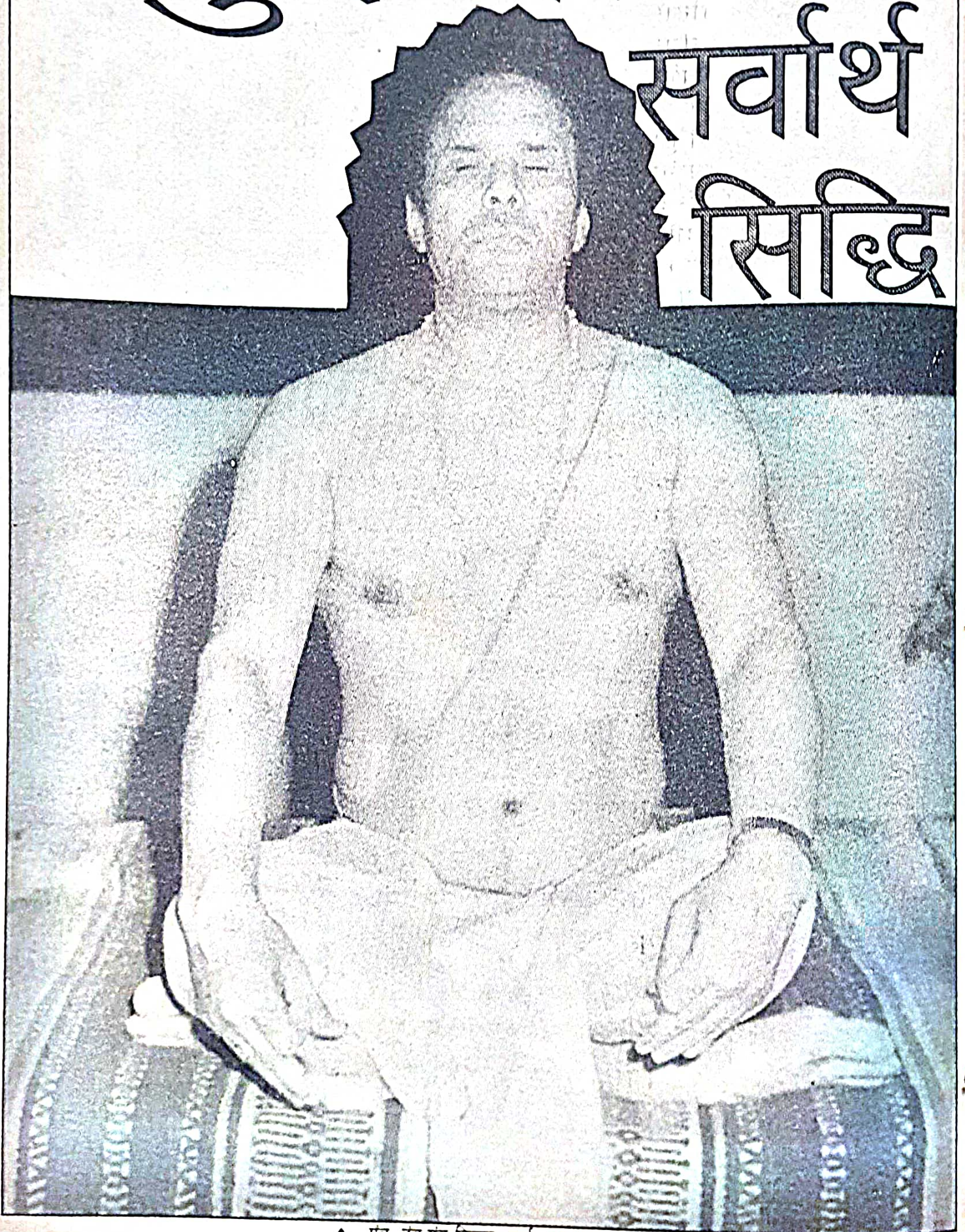
यह जीवन तो अपने विस्तार में बहुत छोटा हो गया है, औसतन ६५-७० साल की आयु के इस जीवन में २५-३० वर्ष की आयु तक व्यक्ति को सही बोध ही नहीं हो पाता कि उसका लक्ष्य क्या है, और उसे जो कुछ बोध होता भी है वह सांसारिक सम्बन्धों में होता है, अर्थोपार्जन के सन्दर्भ में होता है, या अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के सम्बन्ध में होता है। जीवन का वास्तविक आनन्द क्या है, जीवन की वास्तविक तृप्ति किसमें है, इसका बोध उसे नहीं हो पाता क्योंकि उसके जीवन में गुरु का पदार्पण होता ही नहीं, और बिना गुरु के जीवन में आये, बिना उनसे दीक्षित हुए साधना और ज्ञान के अभाव में यह जीवन पशुवत् चलते हुए एक दिन थक - हार कर श्मशान में जाकर सो जाता है।

और कटु सत्य तो यह है कि मध्य आयु के पश्चात् ही, तीस-पैंतीस वर्ष का हो जाने के पश्चात् ही, व्यक्ति फिर शेष जीवन उदासी और नैराश्य का कफन ओढ़ कर श्मशान यात्रा की ओर अग्रसर हो जाता है। इसका सीधा सा कारण है कि उसे जीवन में वह दुर्लभ रहस्य ज्ञात नहीं हो पाता जिसके मूल में ही जीवन का सत्व एवं आनन्द छुपा है।

जीवन में आनन्द की स्थिति प्राप्त करने का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति एक नैराश्य और नीरसता के साथ अध्यात्म पथ पर गतिशील हो जाए और इसी बात को वर्षों से पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों को समझाते आ रहे हैं कि जीवन तो एक सम्पूर्णता का पर्याय है। अनेक सिद्धियां, अनेक प्रकार की साधनाएं एवं उनमें सफलता इन्हीं के परस्पर सामन्जस्य से व्यक्ति का यह जीवन एवं पारलौकिक जीवन दोनों ही संवर सकते हैं। वास्तव में गुरु - कृपा एवं गुरु- साधना के द्वारा ही व्यक्ति अपने इस लघु जीवन में वे सभी साधनाएं और सिद्धियां सहजता से हस्तगत कर सकता है जिनसे जीवन का सम्पूर्ण रस प्राप्त हो सके, और उसकी अनेक इच्छाओं की पूर्ति हो सके। अब यह सम्भव नहीं रह गया और न व्यवहारिक ही कि व्यक्ति एक साधना को लेकर ही अपने जीवन का अधिकांश समय उसको दे और तब सभी साधनाओं को हस्तगत करने का एकमात्र उपाय **गुरु साधना** ही शेष रह जाता है।

केवल एक सामान्य सा सम्बन्ध या केवल विद्या के आदान-प्रदान का ही सम्बन्ध नहीं, गुरु-शिष्य सम्बन्ध तो युग - युगान्तर तक चलने वाला अटूट क्रम होता है।

गढ़ते रहते हैं शिष्य को गुरुदेव एक कुशल कुम्हार की तरह, कभी चोट देकर तो कभी सहारा देकर।

जिससे वह बन सके एक पूर्ण कुम्भ . . . जिसमें छलछलाहट हो, केवल शीतल जल ही नहीं वरन प्रेम, करुणा, ममता और दया का ऐसा अमृत हो जिससे अनेक लोग तृप्त हो सकें।

क्या-क्या प्रदान कर देती है गुरु की कृपा सहज अपने शिष्य को, और कैसे वह बन जाता है एक हाड़-मांस के देह की स्थान पर अमृत घट . . .

जीवन की पूर्णता छिपी है बावन सिद्धियों में

साधना जगत का एक गोपनीय ग्रंथ है **"श्री गुरु यामल तंत्र"** जो मूलतः **भविष्य पुराण** का अंश था किन्तु उसे कालांतर में लुप्त कर यह विषय केवल मुख- परम्परा ने सीमित कर दिया। इसी ग्रंथ में यह तथ्य पूर्णता से वर्णित किया गया है कि किस प्रकार से साधक सहज ही तांत्रोक्त गुरु साधना द्वारा वे बावन सिद्धियां प्राप्त कर सकता है जिनके द्वारा सम्पूर्ण जीवन गठित होता है। अधिकांश शास्त्रकारों को इन बावन सिद्धियों का नाम भी नहीं मालूम होगा जो तांत्रोक्त रूप से पूर्णतः प्रामाणिक हैं। अपने पाठकों के लाभार्थ मैं इन बावन सिद्धियों के नाम प्रस्तुत कर रहा हूं और **ये सिद्धियां कोई सहज और सामान्य सिद्धियां नहीं हैं, एक-एक सिद्धि को प्राप्त करने में साधकों ने अपना पूरा का पूरा जीवन लगा दिया है, और केवल मात्र एक सिद्धि द्वारा ही श्रेष्ठतम साधकों की श्रेणी में आ गए हैं और यदि वे गृहस्थ हैं तो सफल गृहस्थ की श्रेणी में आकर खड़े हो गए हैं।** जीवन में उन सभी सुख-वैभव और ऐश्वर्य को प्राप्त किया जिसकी

कामना प्रत्येक मानव को सहज रहती ही है।

इन बावन सिद्धियों के नाम इस प्रकार हैं --

१. देव सिद्धि २. अप्सरा सिद्धि ३. देवांगना सिद्धि ४. सौन्दर्य सिद्धि ५. अनंग सिद्धि ६. ब्रह्माण्ड सिद्धि ७. पितृ सिद्धि ८. भूत-प्रेत, पिशाच सिद्धि ९. गंधर्व सिद्धि १०. किन्नरी सिद्धि ११. स्वप्न रहस्य सिद्धि १२. ब्रह्माण्ड भेदन सिद्धि १३. अदृश्य को देखने की सिद्धि १४. वायु सिद्धि १५. गति सिद्धि १६. कालजय सिद्धि १७. इच्छामृत्यु सिद्धि १८. पौरुष सिद्धि १९. कुण्डलिनी जागरण सिद्धि २०. ब्रह्म सिद्धि २१. सहस्रार भेदन सिद्धि २२. मनोवांछित कार्य सम्पन्न सिद्धि २३. अप्सरा वशीकरण सिद्धि २४. श्राप सिद्धि २५. वर फलदायक सिद्धि २६. धनवंतरी सिद्धि २७. अष्ट महालक्ष्मी सिद्धि २८. बावन भैरव सिद्धि २९. दस महाविद्या सिद्धि ३०. गुरु सिद्धि ३१. गुरु आत्म सिद्धि ३२. गुरु प्राणश्चेतना सिद्धि ३३. जन्म-जन्मान्तर सिद्धि ३४. भूतकाल सिद्धि ३५. भविष्य दर्शन सिद्धि ३६. शून्य पदार्थ प्राप्त सिद्धि ३७. पदार्थ परिवर्तन सिद्धि ३८. स्वर्ण सिद्धि ३९. पारस सिद्धि ४. मोक्ष प्रदायक सिद्धि ४१. निर्जल निराहार सिद्धि ४२. पूर्ण यौवन सिद्धि ४३. पूर्वजन्म सिद्धि ४४. भविष्य जन्म सिद्धि ४५. अखण्ड लक्ष्मी सिद्धि ४६. ज्ञान चेतना सिद्धि ४७. अणिमा सिद्धि ४८. लघु सिद्धि ४९. दीर्घत्व सिद्धि ५०. पूर्ण प्रकाण्ड सिद्धि ५१. मनोवाञ्छित सिद्धि ५२. सूर्य ज्ञान सिद्धि।

अभी तक साधकों एवं पाठकों ने १८ सिद्धियों का ही वर्णन पढ़ा होगा किन्तु इन ५२ सिद्धियों का वर्णन उन्हें अज्ञात रहा होगा।

इसका कारण है कि इनको प्रदान करने के लिए जो शास्त्रीय नियम हैं वे अत्यन्त कठोर और दृढ़ रहे हैं। पहले शिष्य निष्काम भाव से कुछ वर्ष गुरु- गृह में सेवा कर व्यतीत करता था और तब गुरु उचित दीक्षाओं एवं शक्तिपात के माध्यम से ये सिद्धियां प्रदान कर उसे पूर्ण पुरुष बनने की ओर अग्रसर करते थे जिससे वह एक सामान्य मानव बनकर ही जीवन यापन न करे वरन् पूर्ण रूप से एक ज्योति पुंज बनकर अपने जीवन का उद्धार तो करे ही साथ ही सैकड़ों-हजारों अन्य लोगों के लिए भी पूर्ण रूप से लाभदायक सिद्ध हो सके।

इसके लिए गुरु अनेक प्रकार की कसौटियों पर शिष्य को देखते हुए उसकी परीक्षा लेते थे तथा विपरीत स्थितियों में डालकर उसके धैर्य, संयम और सहनशीलता का निर्धारण कर इन सिद्धियों को प्रदान करने का मानस बनाते थे।

सहज सुलभ हैं आज भी ये विद्याएं

युग बदला तो मान्यताओं में परिवर्तन आवश्यक हो गया। शास्त्रों में विधान है कि गुरु से तीन प्रकार से विद्या प्राप्त की जा सकती है, प्रथम और श्रेष्ठतम रूप है सेवा का, द्वितीय रूप में ज्ञान के बदले ज्ञान देने की परम्परा भी रही है, और इन दोनों स्थितियों के सम्भव न होने पर अंतिम उपाय धन के बदले ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा निर्मित हुई क्योंकि कोई न कोई प्रतिफल होना आवश्यक है, प्रतिफल के अभाव में कोई भी विद्या प्राप्त नहीं हो सकती।

गुरु- शिष्य का आन्तरिक सम्बन्ध स्थापित हो जाने के बाद वस्तुतः शिष्य से भी अधिक गुरु ही इस बात के लिए प्रयत्नशील होते हैं कि वे अपना सब कुछ अपने शिष्य को प्रदान कर दें, किन्तु उनकी कसौटी अपने ढंग की होती है जिस कारण सामान्य मनुष्य रह-रहकर भ्रम में पड़ जाता है — जानबूझ कर उपेक्षा करना, शिष्य को फटकार देना, सार्वजनिक रूप से उसका अपमान कर देना, तथा ऐसे कई अन्य कठोर विधानों द्वारा
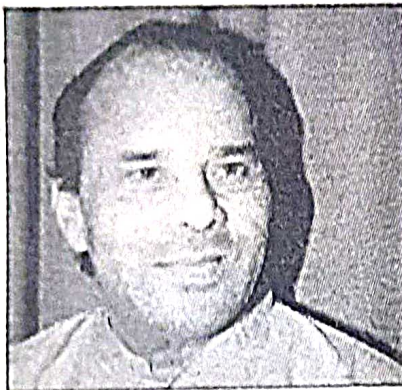
गाइ गाइ अव का कहि गाऊँ, गावन हार को निकट वताऊँ
जव लगि नदी न समुंद समावै, तव लगि वढ़ै हंकारा
जव मन मिल्यौ हरि सागर सौं, तव यह मिटी पुकारा
छाड़े आस निरास परमपद, तव सुख सतिकर होई
कहि रैदास जासौऔर करत है, परमतत्व अव सोई

गुरु अपने शिष्य को एक मिट्टी के लोंदे की भांति तोड़ते-मरोड़ते रहते आंखों में तो एक ही सपना तैरता रहता है कि कब मेरा यह शिष्य पूर्ण होगा, पूर्ण रूप से सुखी एवं जीवन मुक्त होगा, और वास्तव में जितनी राह शिष्य नहीं देखता उससे कहीं अधिक राह गुरु देखते हैं।

इसी से गुरु का पद सर्वाधिक महान और उच्चतम है। इसी से वे तीनों देव भी ऊपर और अनिवर्चनीय कहे गए हैं। सामान्य सी बात है कि जो गुरु यह सब प्रदान करने में समर्थ है उन्हें अपेक्षा या कामना किस वस्तु की हो सकती है, उस पद और बिंदु पर केवल एक ही बात शेष रह जाती है और वह होती है करुणा। **केवल करुणा के वशीभूत होकर ही गुरु इस पृथ्वी पर अवतीर्ण होते हैं, जीवोद्धार ही उनका एकमात्र लक्ष्य होता है, और पग-पग पर अपने शिष्य के जीवन को भौतिक व आध्यात्मिक रूप से सम्पूर्ण कर देना ही उनका चिंतन।**

गुरु - शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त मधुर, अत्यन्त पावन जीवन के किसी भी सम्वन्ध की अपेक्षा अधिक सहज व अधिक स्वाभाविक है।

यहां पर मुझे **एक विदेशी संत** की एक बात याद आ रही है जब उनसे पूछा गया कि क्या आप भारतीय हैं, तो उन्होंने कहा कि निश्चित रूप से, आपसे भी अधिक भारतीय हूं क्योंकि आप तो जन्म लेने के कारण भारतीय हुए और मैंने अपनी चेतना से इस देश की नागरिकता ग्रहण की है।

गुरु- शिष्य सम्बन्ध भी ठीक ऐसा ही सम्बन्ध है जहां व्यक्ति चेतनावान बन कर गुरु को अपना सब कुछ मान लेता है। जन्म से उसका गुरु से कोई सम्बन्ध नहीं होता लेकिन शनैः-शनैः वही उसका पितु, मातु, सहायक, स्वामी, सखा, सब कुछ बन जाता है। क्या एक अपरिचय से आरम्भ करता हुआ इस पूर्णता तक व्यक्ति यों ही आ सकता है? **तभी तो कहा गया है गुरु- शिष्य का सम्बन्ध युग - युगांतर की बात होती है, भले ही व्यक्ति उनसे प्रारम्भ में कितना ही अपरिचित क्यों न हो।** ★

निखिलेश्वरानन्द-षट्कम्

मनोबुध्दयहंकारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायु
र्निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।।१।।

न च प्राणसंज्ञो न वै पंचवायु
र्न वा सप्तधातुर्न वा पंचकोशः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू
र्निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।।२।।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः-
र्निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।।३।।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
र्निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।।४।।

न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बंधुर्न मित्रं गुरुदेव शिष्यः
र्निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।।५।।

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न मेयः
र्निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।।६।।

जब जीवन में विष घुल जाता है और समस्याओं के
हल सही नहीं सूझते. . .
यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाए

- कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
- शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
- पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
- विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
- घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
- ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
- निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना
- बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों

या फिर झगड़े झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमें बाजी,
जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं।

तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . .
उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है,
उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है
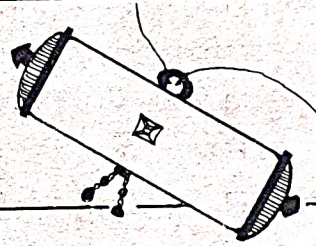
विशेष
तंत्र रक्षा कवच

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों
द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है**

सम्पर्क

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),फोन-०२९१-३२२०९

अथवा

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोनः ०११-७१८२२४८, फेक्स-०११-७१८६७००

रावणकृत उड्डीशतंत्रम्

वशीकरण के ये अनोखे विधान

उड्डीशं यो न जानति स स्पष्टं किं करिष्यति।
मेरुं चालयते स्थानत् सग्नं प्लाव्ये महान्महीम्।।

(उड्डीशतंत्र - १/२८)

जो उड्डीश तंत्र को नहीं जानता वह क्रोधित होकर कर भी क्या सकता है, (अर्थात् वह कुछ नहीं कर सकता) उड्डीश तंत्र की सामर्थ्य से मेरु पर्वत को उसके स्थान से हटाया जा सकता है और समुद्र में पृथ्वी को डुबोया जा सकता है।

ज्ञान और साधना पद्धतियों में जिस प्रकार से महापंडित रावण की अभिरुचि व गहरी सूझ-बूझ थी, वह अपने-आप में आश्चर्यचकित कर देने वाली ही कही जा सकती है। जहां एक ओर उसने लक्ष्मी साधना और शिव साधना में तंत्र की नवीन विधियाँ खोजीं, वहीं पर दिन-प्रतिदिन के जीवन को सुगम बनाने का, अत्यन्त सामान्य सी वस्तुओं के प्रयोग से, एक ऐसा ग्रंथ रच दिया जो कि अपनी विविधता और रोचकता से आज भी पठनीय व उल्लेखनीय बना हुआ है। यह महत्वपूर्ण ग्रंथ है **उड्डीशतंत्रम्,** जिसे रावण द्वारा रचित होने के कारण 'रावणकृत उड्डीशतंत्रम्' की संज्ञा भी दी जाती है और जिसके विषय में विख्यात है कि रावण ने अपनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न कर सीधे उनके द्वारा ही इस ज्ञान को अर्जित किया था। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ में षट्कर्म अर्थात् तंत्र की छह प्रमुख क्रियाओं - शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण का वर्णन विशद रूप से मिलता है।

प्रारम्भ में इस ग्रंथ में स्पष्ट किया गया है कि इस विद्या का ज्ञान और प्रयोग वास्तव में किस व्यक्ति को दिया जाना चाहिए। मारण आदि प्रयोगों के अतिरिक्त इस ग्रंथ में सम्मोहन, वशीकरण से सम्बन्धित प्रयोग, वास्तव में अत्यन्त रोचक और सरलता से अपनाए जाने योग्य है - इस ग्रंथ के तृतीय पटल **'मोहमिधानम्'** में इनका जो रोचक वर्णन मिलता है वह इस प्रकार से है।

१. यदि आंवले के रस में, कुंकुम और गोरोचन पीस कर तिलक किया जाए तो सभी जन शीघ्र ही आकर्षित होते हैं।
२. तुलसी के बीज को रविवार के दिन सहदेव्या के रस में पीस कर तिलक करना ही समस्त जगत को मोहित करने लिए पर्याप्त होता है।
३. मैनाशिल और कपूर को समान मात्रा में लेकर, केले के तने के रस में पीस कर, तिलक करने से सर्वजन मोहित होते ही हैं, इसमें संदेह का स्थान ही कहां?
४. हरताल, अष्टगंध एवं गोरोचन का चूर्ण कदली रस में पीसने से जो लेप बनता है, उसे **लोकमोहनम्** की संज्ञा दी गयी है।
५. काकड़ा सिंगी, चन्दन, वच और इत्र को एकत्र कर उसको धूप जैसा प्रज्ज्वलित कर सारे शरीर, वस्त्र एवं मुख पर आरोपित कर लेने से, सामान्य जन ही नहीं, राजा एवं पशु-पक्षी तक स्तम्भित से खड़े होकर व्यक्ति को निहारते ही रह जाते हैं।
६. अथवा ताम्बूल की जड़ का रस तो अपने किसी विशेष प्रिय को सम्मोहित करने का परीक्षित उपाय है ही!
७. विघड़ी, भांगरा, सहदेव्या और लाजवन्ती के मिश्रण का तिलक करने से, मनुष्य तो क्या, देवगण भी मोहित हो जाते हैं।
८. जीवन में जो सभी प्रकार से सुदर्शन बनने का इच्छुक और आग्रही हो, उसे नित्य सफेद दूब और हरताल का तिलक प्रातः

स्नान के पश्चात् करना चाहिए।

९. बेल का पत्र लाकर छाया में सुखाया हो तथा कपिला गौ के दूध में उसका लेप बनाकर तिलक किया गया हो, यह सर्वप्रकारेण सम्मोहन का अचूक उपाय है।

१०. बकरी के दूध में बेल की पत्ती और बिजोरा नीबूं पीस कर तिलक करना भी इस ग्रंथ में वशीकरण का एक अनुभूत उपाय बताया गया है।

रावणकृत इस षट्कर्म प्रधान ग्रंथ में इन प्रयोगों के साथ ही साथ तीव्र वशीकरण का भी एक ऐसा प्रयोग दिया गया है जो कि रावण सदृश्य तंत्राचार्य द्वारा प्रणीत होने के कारण; अपने प्रभाव और तीक्ष्णता में बेजोड़ कहा जा सकता है। यद्यपि यह प्रयोग मूलतः एक विशेष प्रकार की जड़ी-बूटियों से निर्मित गोली बनाकर अभिमंत्रित कर सम्बन्धित स्त्री या पुरुष को खिलाने के सम्बन्ध में वर्णित है लेकिन इसी विशेष मंत्र को अपने इच्छुक व्यक्ति या स्त्री का चित्र रखकर जप किया जाए, तब भी यह पूर्ण प्रभावशाली रहता है। जहां इस प्रकार की विशेष गोली खाने से व्यक्ति एक बार मना भी सकता है वहीं चित्र पर किया गया प्रयोग पूर्ण रूप से बाध्यकारी होता ही है। इस कार्य हेतु एक विशेष **उड्डीश गुटिका** की आवश्यकता पड़ती है तथा यदि आपके पास पहले से कोई **मूंगा माला** हो तो उसका उपयोग भी कर सकते हैं अन्यथा सफेद हकीक माला का भी, किन्तु ध्यान रखें कि **इस साधना के पश्चात् इन मालाओं का उपयोग केवल वशीकरण में करें,** अन्य कार्यों हेतु इसे प्रयोग में न लाएं। यदि यह प्रयोग रविवार की रात्रि में किया जाए तो अधिक तीव्र माना गया है, साधक लाल अथवा काले वस्त्र धारण कर गोरोचन, कुंकुम एवं बकरी के दूध का तिलक कर सामने किसी पात्र में **उड्डीश गुटिका** को सम्बन्धित व्यक्ति के चित्र के ऊपर रख कर निम्न मंत्र की एक माला जप करे।

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिलि मिलि ठः ठः। ।

यदि सम्बन्धित व्यक्ति का चित्र उपलब्ध न हो सके, तब इसी गुटिका को व्यक्ति के नाम से अभिमंत्रित कर उसके घर के आगे डाल दें, ज्यों ही उसकी निगाह इस पर पड़ेगी वह जीवन भर के लिए सम्मोहित हो जाएगा।

वशीकरण के अनेकों प्रयोगों में यह प्रयोग सर्वथा दुर्लभ एवं तीव्र प्रभावी माना गया है एवं उड्डीश तंत्र में स्पष्ट उल्लेख है कि ऐसे प्रयोगों को अकुलीन, अधम बुद्धि वाले, भक्तिहीन, क्षुधा से पीड़ित, मोहित, भयभीत, व्यर्थ की निंदा करने वाले व्यक्तियों को कदापि नहीं देना चाहिए।

शिव प्रार्थना

कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते।
नानाद्रुमलताकीर्णे नानापक्षिरवैर्युते। ।
सर्वर्तु कुसुमामोद-मोदिते सुमनोहरे।
शैत्यसौगन्ध्यमान्द्याढ्यैर्मरुद्भिरुपवीजिते। ।
अप्सरोगणसंगीत कलध्वनिनिनादिते।
स्थिरच्छायद्रुमच्छायच्छादिते स्निग्धमञ्जुले। ।
मत्तकोकिलसन्दोहसंघुष्टविपिनान्तरे।
सर्वदा स्वगणैः सार्धमृतुराजनिषेविते। ।
सिद्धचारणगन्धर्वैर्गाणपत्यगणैर्वृते।
तत्रमौनधरं देवं चराचरजगदगुरुम्। ।

"नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित विविध प्रकार की लताओं और वृक्षों से आच्छादित जिस कैलाश पर्वत पर अनेक प्रकार के पक्षी मधुर कलरव करते रहते हैं। विभिन्न ऋतुओं की ही भांति जहां भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प खिलते रहते हैं, जिनसे स्पर्श कर शीतल व सुगन्धित, चित्त को अद्भुत आह्लाद देने वाली वायु प्रवहित होती है। जहां के वृक्षों की शीतल छाया अतिरिक्त स्निग्धता प्रदान करने वाली है, जहां अप्सराओं के द्वारा गेय संगीत की मधुर लहरियां निनाद कर रहीं हैं, केवल एक कोकिला ही नहीं वरन समूह में कोकिलाएं मदोन्मत्त स्वर में ध्वनि कर रही हैं। ऋतु अपने अनुचरों के साथ जिस पर्वत की सेवा करती है, जहां सिद्ध, गंधर्व, गणपत्य सदा निवास करते हैं, वहीं समस्त संसार के सचराचर के जगत गुरु श्री शिव जी मौन धारण कर विराजमान हैं"

सिद्धाश्रम

जो सही अर्थों में साधक है उसकी तुलना यदि किसी से की जा सकती है तो केवल एक शिशु से – जो सब कुछ प्राप्त होने के बाद भी केवल अपनी मां की गोद के लिए ही आतुर रहता है।

ऐसे ही योगी परमहंस स्वामी प्रणवानन्द जी का भाव-भीना उद्‌गार जब वे गुरुमयता की उच्चतम भाव-भूमि पर आरूढ़ हो कर पूज्यपाद गुरुदेव के साहचर्य में सिद्धाश्रम तक जाने में सफल हुए. . .

जहां पूज्य गुरुदेव का यथार्थ रूप स्पष्ट है दिव्यता और आह्लाद से आपूरित . . .

. . . स्वामी प्रणवानन्द जी के संस्मरण उन्हीं के शब्दों में।

यदि कहूं कि ३० - ३२ वर्ष की अवस्था तक मैंने जीवन का कोई अर्थ समझा ही नहीं था, तो गलत नहीं होगा। सामान्य से परिवार में जन्म लेकर किन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए एक राजपत्रित अधिकारी के पद पर कार्यरत हो अपनी पहली नियुक्ति में उत्तर प्रदेश के कुमाऊं मण्डल के पिथौरागढ़ जिले में पहुंचा। एक राज अधिकारी का जितना सम्मान और आवभगत होती है, मेरी भी केवल उतनी ही नहीं शायद उससे कुछ ज्यादा ही थी, किन्तु पता नहीं क्यों उस पर्वतीय क्षेत्र में मेरा मन उस सम्मान और आवभगत से भी अधिक वहां के प्रायः जनशून्य और निर्जन वन- प्रान्तों में दौरे में लिए जाने में ही अधिक लगने लगा। वन-प्रान्तों की प्राकृतिक छटा को देखता हुआ मैं उनमें खो जाता था।

शुभ्र नीले स्वच्छ आकाश में चित्र सी लिखी बर्फ की चोटियां देखकर हर बार यही लगता कि मैं इन्हें पहली बार नहीं देख

चल हंसा घर आपने
रैन भई चहुं ओर

रहा और जहां मेरे साथ गए सभी सरकारी कर्मचारी रात्रि में कैम्प में सो जाते, वहीं मैं बाहर आग जला कर सारी की सारी रात उन चोटियों की ओर निहारता रह जाता था। एक - एक शिखर लगता था कुछ कह रहा हो या किसी मौन संकेत से मुझे अपने पास बुला रहा हो। **एक विचित्र सी रहस्यमयता मेरे आस - पास उतर आती और लगता कि रात की हल्की चांदनी में उन चोटियों की हल्की नीली आभा एक दिव्यता सी बन मेरे सारे शरीर में लिपट गयी है। मेरे नथुनों से, मेरी आंखों से और मेरे रोम - रोम से उतरती हुई ऐसा सुख दे रही है , जो पहले मुझे कभी मिला ही नहीं था।** उन घनी अंधेरी रातों में और सुनसान अजनबी जगह पर भी मुझे लगता ही नहीं था कि मैं किसी अपरिचित स्थान पर हूं, या अकेला हूं। कोई अदृश्य दिव्यता भी मेरे साथ- साथ चलती ही रहती थी।

धीमे - धीमे यह मेरा व्यसन हो गया। अन्य अधिकारी जहां ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों में जाने से कतराते थे, वहीं मैं अवसर ढूंढ - ढूंढ कर एक से एक दुर्गम क्षेत्रों में जाने की योजना बनाता रहता था। कभी किसी पुराने रहस्यमय डाक बंगले में तो कभी कैम्प लगा कर खुले आसमान के नीचे। धीरे - धीरे करके सारी रात बीत जाती और अपने साथ ही साथ दिव्यता और मूक वार्तालाप समेट ले जाती। सुबह की वह किरणें ज्यों मुझे व्यवहारिक जगत में झुलसने के लिए खींच लेतीं। धीरे - धीरे मेरा मन उदास से और अधिक उदास होता गया। मेरी पत्नी भी एक राजपत्रित अधिकारी होने के साथ - साथ सुन्दर और सुशील थी तथा हम दोनों के एक पुत्र भी था, किन्तु यह सब होते हुए भी मेरे लिए अर्थहीन था। मैं कोर्ट में बैठे - बैठे भी उन्हीं दृश्यों में खो जाता और **बस यही सोचता रहता कि यह जगत कितना अधिक बनावटी, उदास , खोखला और अर्थहीन है।** यह सासारिक
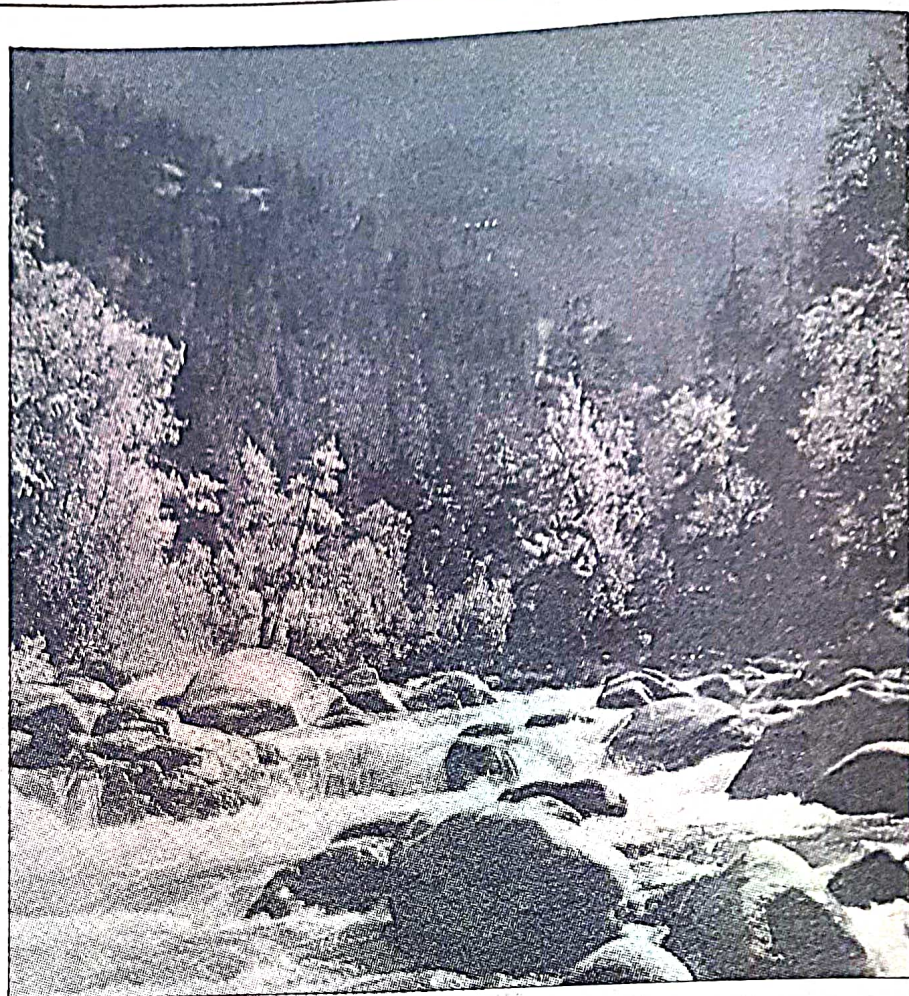
भोग क्षणिक तृप्ति देकर रिक्तता कितनी अधिक बढ़ा जाते हैं, और मैं अपने अन्दर की रिक्तता, सब कुछ होते हुए भी जो खालीपन था, उसे भरने का उपाय सोचता रहता।

उन्हीं दिनों की बात है, मेरे एक अधीनस्थ कर्मचारी ने मुझे **नारायण आश्रम** देखने की सलाह दी, और मैं भी जाने के लिए आतुर हो उठा, और वही क्षण मेरे सौभाग्य का क्षण बन गया। टनकपुर से ढाई सौ कि.मी. दूर जाकर तवाधार, थानीधार, पांगु और सोसा होते हुए मैं नारायण आश्रम तक पहुंचा और वहां की प्राकृतिक छटा देखकर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सका। किन्तु अब प्राकृतिक सुषमा और मौन वार्तालाप से भी अधिक मेरे मन में कसक यह हो गयी थी, कि काश! कोई जीवित जाग्रत व्यक्तित्व मेरे समक्ष हो और मैं उससे अपने हृदय की बात कह सकूं। शास्त्रों में ऐसे व्यक्तित्व को ही **गुरु** कहा गया है, और मैं वास्तव में गुरु की ही खोज में भटक रहा था।

कहते हैं चौथे दशक में मानसरोवर की ओर से एक युवा साधु यहां आए थे जिनका नाम **नारायण** था और उन्हीं की स्थापना के फलस्वरूप इसका नाम **''नारायण आश्रम''** पड़ा। नारायण आश्रम की यात्रा से मेरा मन कुछ शान्त हुआ, लेकिन सद्गुरु की प्राप्ति के लिए भटकाव और भी अधिक बढ़ गया।

कुछ खिन्नता और कुछ उत्कण्ठा के भावों से भरा हुआ मैं **नारायण आश्रम** से लौटते समय **जौलजीवि** के पास रुक गया और अपने एक विश्वासपात्र नौकर को लेकर धौली गंगा के उद्गम - मीलम ग्लेशियर की ओर बढ़ गया कि एकान्तवास कर मन का बोझ शायद कुछ हल्का हो। कैम्प लगा कर मैं निरुद्देश्य इधर से उधर भटकने लगा। थोड़ी दूर जाने पर जहां जंगल कुछ और घना हो जाता है, मैं एक

पहाड़ी सोते के पास उसके जल में पांव डालकर बैठ गया कि शायद इससे ही मस्तिष्क की तपन को कुछ राहत मिले। पहाड़ी सोते में पांव डालकर मैं बैठा ही रहा, जो एक छोटी पहाड़ी नदी के रूप में ही बह रहा था और मेरी अशान्त दृष्टि इधर से उधर भटकती रही।

कुछ देर बाद मेरी अशान्त दृष्टि एक ओर घूमती हुई गयी तो पाया कि एक अद्‌भुत व्यक्तित्व उस पार केवल एक अधोवस्त्र धारण किए हुए भीषण शीत में भी एक उभरी हुई चट्टान पर समाधिस्थ है। **मेरी अशान्त दृष्टि का क्षण मात्र के लिए उन पर पड़ना था कि सारी बेचैनी, ऊहापोह, भटकाव व खोज एक ही क्षण में तिरोहित हो गयी।** जो कुछ मैं खोज रहा था, जो मेरे अन्दर ही अन्दर घुट रहा था और जिसे मैं कुछ समझ पा रहा था और कुछ समझ नहीं पा रहा था, वह लक्ष्य मेरे सामने था। मेरी दृष्टि एकटक उसी व्यक्तित्व पर जम गयी। पूरी- पूरी रात जगने पर जिन ऊंचे विशाल पर्वत की चोटियों को देखते समय मन में एक अलौकिक ऋषि की कल्पना आती थी, वही तो मेरे समक्ष मूर्त रूप लेकर उपस्थित थे।

कुछ अवश्य था उस मुख मण्डल पर, और उस दिव्य देह में भी, मुझे बस यही लगने लगा कि ये सारे वृक्ष मात्र पवन के झोंकों से नहीं झूम रहे। ये तो इस व्यक्तित्व की अभ्यर्थना कर रहे हैं। ये जल बस यों ही नहीं बह रहा, ये तो संगीत की लहरियां तरल हो गयी हैं और बस यहीं तक ही नहीं — ये बादल, ये पुष्प, घास का एक - एक तिनका, एक - एक पुष्प इन्हीं की उपस्थिति से मुखरित और चैतन्य है। मेरी आंखें खुली थीं लेकिन मैं सम्पूर्ण प्रकृति के साथ एक गुंजरण और संगीत में खो गया। ऐसा लगने लगा कि मेरे अन्दर जो सारा दैन्य, पीड़ा और अतृप्ति थी, वह प्रकृति की संगीत की लहरियों के साथ ही

कब और कहां मिला यह तो स्पष्ट याद नहीं आ रहा था किन्तु आंखों से अविरल अश्रु धारा वह चली . . .

आज मेरे अश्रुओं में विलाप नहीं कातरता थी . . .

घुल गयी है या उस दिव्य व्यक्तित्व से जो मौन अनहद आ रहा है उसी में जाकर लीन हो रही हो।

आनन्द से मेरी आंखों से आंसुओं की अविरल धारा बह चली। मेरे सामने जो व्यक्तित्व था वह मुझे अपरिचित लग ही नहीं रहा था। कब देखा, कहां देखा - यह सब धुंधला सा याद आ रहा था। आज मेरे आंसुओं में विलाप का स्वर नहीं था, कोई एक कातरता और आनन्द की लहरियां थीं। सामने बहते हुए जल की तरह छलछलाहट और संगीत मेरे मन में फूट रहा था, और आंसुओं के रूप में बाहर आ रहा था। आज मन एक ऐसे सम्मोहन में जाकर बंध गया था, जिससे मुक्त होने की इच्छा ही नहीं हो रही थी . . . एक पदचाप से मेरा ध्यान भंग हुआ -- सामने ही आश्चर्यचकित मेरा सेवक खड़ा था, जिसे मैं पीछे छोड़कर आया था।

मेरी दृष्टि की दिशा में उसकी दृष्टि भी घूमी और सामने नदी के उस पार समाधिस्थ दिव्य व्यक्तित्व पर पड़ते ही चेहरे के भाव ही बदल गए और एक प्रकार से वह साष्टांग प्रणाम की मुद्रा में गिर ही पड़ा. . .

"धन्य भाग! ये तो परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी हैं! बाबू जी, आपके कितने सौभाग्य जो आज इनके दर्शन हो रहे हैं, मैंने बचपन में एक बार अपने दादा जी के साथ इनके दर्शन किए थे और तीस वर्षों बाद फिर आज इनके दर्शन पा रहा हूं, कहते हैं इनके ऊपर उम्र का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता. . ."

मैं अपने और उस दिव्य व्यक्तित्व के मध्य कुछ भी सहन करने की स्थिति में नहीं था, अतः उसे संकेत से चले जाने के लिए कह दिया। मैं निश्चय कर चुका था कि मुझे अपनी अतृप्ति, भटकाव का रहस्य प्राप्त कर ही लेना है।

उस दिव्य व्यक्तित्व का दर्शन या मेरे हृदय की छटपटाहट . . . कुछ ही क्षणों के बाद मैं उनके चरणों में था। एक खुमारी में डूबे - डूबे कब मैंने वह पहाड़ी नदी पार कर ली, मुझे खुद ही नहीं पता चला।

आधी खुली आंखें और उनमें झलकता हल्का नीलापन, करुणा और मातृत्व की तरलता से भरकर स्वच्छ झील की आभा प्रदर्शित करती हुई, अलिप्त और आत्म - घट में ही आनन्द का अक्षय स्रोत पाकर लीन . . . बाह्य जगत में सुख प्राप्त करने की वंचना से मुक्त, बाह्य जगत में लिप्त होने की बाध्यता से रहित. . . सब कुछ देखते हुए भी न देखने की स्थिति में अवस्थित . . .

मैं विज्ञान का छात्र रहा और फिर कानून का, इसी से भावुकता का जीवन में स्थान कम रहा, किन्तु इस व्यक्तित्व को देखने के बाद तो मन सोचने को बाध्य हो गया कि अवश्य ही कुछ ऐसा भी होता है जिसे प्राप्त कर जीवन में चिर शान्ति और वास्तविक सुख भी प्राप्त किया जा सकता है . . . जो इस दैदीप्यमान मुख मण्डल पर न केवल चमक रहा है, वरन छलक कर मुझे भी आपाद- मस्तक भिगोता जा रहा है।

शान्त, आप्तकाम गौरवर्णीय मुख मण्डल, हल्की भूरी जटाएं और नाभि को स्पर्श करती दाढ़ी, अजानु बाहु, क्षीण किन्तु तप की गरिमा से भरी देहयष्टि और उससे

भी अधिक उनके सामीप्य से आती दिव्य देह गंध - विभिन्न पुष्पों की सुगन्ध देती हुई या चन्दन में केवड़ा जल मिल गया हो . . . शायद वही अष्टगंध ही रही हो जो भगवान श्री कृष्ण के शरीर से निरन्तर आती रहती थी।

. . . मैं अपने को और नहीं रोक सका, जाकर गौर दुग्ध धवल रक्तिम चरणों से लिपट गया. . . एक मंद ऊष्मा से मेरा शरीर थरथरा उठा, किन्तु उन्हें तो सर्वस्व ज्ञात था. . . कोई कम्पन नहीं, कोई आश्चर्य नहीं और उसी अर्धनिमीलित मुख - मुद्रा में अविचलित रहते हुए भी उनका मृदु स्पर्श मेरे पीठ और सिर पर फिरने लगा।

जैसे शब्दों की कोई आवश्यकता ही नहीं रह गयी थी, कोई भूली- बिसरी कड़ी जुड़ गई थी। परिचय तो एक बौना शब्द है, कोई अनुपम आत्मीयता ही झलक उठी थी -- पिता की पुत्र के प्रति आत्मीयता या पूर्ण की अपने अंश के प्रति आत्मीयता, और यही सब तो ही मिल जुल कर गुरु-शिष्य का सम्बन्ध बनता है।

मैं समझ चुका था कि मेरे अन्दर जो अव्यक्त सी पीड़ा थी, वह वास्तव में इन्हीं के लिए थी। यही मेरे गुरुदेव हैं, यही मेरे जीवन की पूर्णता हैं। मैंने छात्र जीवन में योगानन्द जी की पुस्तक पढ़ी थी और उसमें वर्णित प्रसंग भी पढ़ा था कि किस प्रकार से गुरु अपने शिष्य को खोज ही नहीं निकालते वरन् उसे अपने पास तक खींच भी लाते हैं। मैंने तब सोचा भी नहीं था कि यह मेरे जीवन में भी घटने वाली घटना होगी।

धीरे-धीरे दिन बीता, शाम हुई और रात्रि के क्षण भी आ गए। तब तक मैं भी थोड़ा प्रकृतिस्थ हो गया था। अस्फुट शब्दों में केवल इतना ही कह सका कि मुझे मेरे जीवन का अर्थ मिल चुका है, अब आप मुझे आज्ञा दें कि मैं आपके पास ही रह जाऊं। पत्नी, पुत्र,पद, ऐश्वर्य सभी से मुक्त हो जाऊं, किन्तु उनकी दृष्टि में इसके प्रति

यह धारा तो रक्तपात से दूषित हो चुकी है, उच्च कोटि की साधनाएं, देवताओं का साक्षात्कार, मां भगवती जगदम्बा के प्रत्यक्ष दर्शन, ये सब तो केवल पवित्र भूमि पर साधनारत होकर ही सम्भव है

इन्कार देखकर आगे कुछ न बोल सका। बस आगे आते रहने की आज्ञा मांगकर ही वापस लौट गया। घर लौटकर सभी मातहत कर्मचारियों के चाटुकारिता से भरे सलाम, वही नित्य की शिकायतें, झगड़े, विवाद, कानाफूसियां और अधिक खिन्न कर देने वाली हो गयीं।

दो दिन बाद ही मैं पुनः उन्हीं चरणों में उपस्थित था। धीरे-धीरे यों ही एक माह बीत गया और मैं अपनी व्यथा कह न सका। शायद इकतीसवां दिन रहा होगा, जब मैं चलने लगा मेरे कानों में गुरु गम्भीर स्वर झंकृत हुआ -- **"शैलेन्द्र (मेरा पूर्व नाम) जब समुद्र किनारे तक आ ही गए हो तो डुबकी लगाने का हौसला भी मत छोड़ना, क्योंकि रत्न भण्डार तो बीच समुद्र में ही मिलेगा।"** मैं गुरु- वचन में छिपे आशीर्वाद और स्वीकृति को समझ गया। यही आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए तो मैं व्यग्र था। भीगे स्वरों में उन से आज्ञा लेकर मैं दूसरे दिन अपनी पत्नी को समझा कर और नौकरी से त्याग पत्र देकर श्री चरणों में सदैव - सदैव के लिए उपस्थित हो गया। पत्नी ने मेरी इच्छा का कोई विशेष विरोध नहीं किया क्योंकि वह भी मेरी उद्विग्नता से चिन्तित रहती थी।

यह घटना तब की है जब पूज्यपाद गुरुदेव अपने प्रखर सन्यस्त जीवन में थे, परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के बहुविख्यात रूप में।

एक वर्ष, दो वर्ष. . . . धीरे - धीरे करके सात वर्ष व्यतीत हो गए। **मंत्र शास्त्र, तंत्र विद्या, अघोर साधनाएं, श्मशान साधना, कापालिक विद्या, अवधूत जीवन, दस महाविद्याएं, ब्रह्मत्व साधना, ब्रह्माण्ड दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण . . .** अर्थात् साधना का कोई भी पक्ष छूटने नहीं दिया पूज्यपाद गुरुदेव ने, लेकिन सभी कुछ होते हुए भी जीवन में कुछ अतृप्ति शेष रह ही गयी थी।

वरिष्ठ गुरु भाइयों के बीच मैंने प्रायः चर्चा सुनी थी सिद्धाश्रम की, लेकिन उसका विस्तृत - वर्णन और विवरण नहीं जान सका। केवल इतना ही समझ सका कि कोई स्थली ऐसी भी है जो इस धरती की तरह मल-मूत्र और रक्तपात से दूषित नहीं हुई है, और वहीं पर रह कर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं। मैं अपने अन्दर की रिक्तता का सम्बन्ध उसी से जोड़ कर देखने लगा और उस दिन की कल्पना में खो गया जब मैं एक श्रेष्ठतम साधना स्थली पर जाकर उच्च कोटि की साधनाएं सम्पन्न कर सकूंगा। ऐसा लगने लगा था कि पूज्य गुरुदेव भी उस स्थली पर जाने के लिए व्यग्र हो उठे थे और वे अनमने रहने लग गये थे।

उन्हीं दिनों की बात है जब उन्होंने एक अवसर पर मुझे अपने सामने बैठाकर न केवल सिद्धाश्रम की चर्चा की वरन यह भी कह ही दिया कि तेरा लक्ष्य सशरीर सिद्धाश्रम में प्रवेश करना है जहां वृद्धता, अशक्तता और मृत्यु नहीं है, और ऐसा कहते- कहते समाधिस्थ हो गये।

साधना में अब एक नया ही क्रम आरम्भ हो गया। हादी- कादी दीक्षा (जिसके द्वारा भूख- प्यास और सर्दी - गर्मी पर काबू पाया जा सकता है), निद्रा स्तम्भन, शरीर सूक्ष्म प्रयोग, दो महाविद्याओं का पूर्ण

(शेष पृष्ठ ७० पर)

त्रिभुवनवशं करी सर्वाभरण भूषिते पद्म नयने!

भगवती लक्ष्मी के चित्र में आपने ध्यान दिया होगा कि उसमें कमल का बाहुल्य होता है। लक्ष्मी और कमल एक दूसरे के पूरक ही तो हैं, लक्ष्मी को यदि समझना है तो कमल से श्रेष्ठ कोई उपमा ही नहीं, ठीक उसी के समान गुलाबी आभा से दैदीप्यमान मुख मण्डल, उसी के समान उज्ज्वल और कोमल स्वरूप, उसी के समान समीप से निःसृत होती पद्मगंध, ठीक वैसी ही निर्लिप्तता और पद्म के सैकड़ों दलों की भांति सैकड़ों स्वरूप! लक्ष्मी अपने-आप में दैवी सौन्दर्य से भरी, नारीत्व की गरिमा की एक ऐसी देवी है, जिसका अभी तक शायद सही मूल्यांकन ही नहीं किया गया, एक ओर जहां उन्हें इस धन-लोलुप समाज ने धन देने की देवी मात्र समझ कर उनसे व्यापारिक सा सम्बन्ध जोड़ा, वहीं भक्ति के भोंडे रूप में उन्हें 'लक्ष्मी-मैया', 'लक्ष्मी-मैया' कहकर उनका ही नहीं मातृत्व का भी अपमान किया गया। **दूसरी ओर कुन्ठित और निराश शास्त्रकारों ने उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा, धन को सभी बुराइयों का मूल कहा और लक्ष्मी को चंचला आदि कहा।**

परन्तु वस्तुस्थिति इससे कुछ अलग हटकर ही है, धन की अधिष्ठात्री यह देवी मूल रूप से नारी ही तो है, जिस प्रकार एक नारी स्वभावतः कोमल, स्नेहशील, दयालु और ममत्व से भरी होती है, किन्तु प्रबल स्वाभिमानिनी भी। वह इस बात की तरफ इच्छुक और आतुर होती है कि उसकी सराहना की जाए और सप्रयास उसे कोई जीवन में लाए, उसी प्रकार इस तथ्य को हम लक्ष्मी साधना के सन्दर्भ में भी कह सकते हैं। नारी या तो प्रबल पौरुष के माध्यम से अथवा प्रबल प्रेम के माध्यम से ही वशीभूत होती है, अन्य कोई उपाय ही नहीं। इस तथ्य को ध्यान में रखकर जहां एक ओर तांत्रोक्त रूप से लक्ष्मी को वश में करने के उपाय खोजे गए हैं और

विश्वामित्र जैसे सरीखे, हठीले ऋषियों ने उन्हें चुनौती पूर्वक, पौरुषतापूर्वक अपने आश्रम में उसे बंधकर रहने को विवश कर दिया, वहीं दूसरी और वैदिक काल में यज्ञ के माध्यम से, स्तोत्र रचना के माध्यम से उनकी अभ्यर्थना की गई और उनके स्थापन की कामना की गई। **भगवती महालक्ष्मी को दस महाविद्याओं में एक महाविद्या कमला के रूप में प्रतिष्ठित कर एक प्रकार से उनके प्रति सम्मान ही व्यक्त किया गया।** यंत्र के माध्यम से भी उनके स्थापन में आबद्धीकरण के प्रयास किए गए। श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र, एवं अन्य विशिष्ट यंत्रों की रचना कर उनके आबद्धीकरण का ही तो प्रयास किया गया, सर्वथा निर्लिप्त रहने वाले और मोह-माया से परे रहने वाले औघड़ों ने भी उनके वशीकरण के उपाय ढूंढे।

लक्ष्मी ऐसी श्रेष्ठ देवी है जिसके स्पर्श मात्र से ही व्यक्ति में पूर्णता का प्रादुर्भाव हो जाता है, यदि लक्ष्मी को केवल धन का ही प्रतीक न मानें वरन् सम्पूर्ण जीवन के पूर्णत्व का आधार मानें तो एक पुरुष में पौरुष और आत्मविश्वास प्रदान करने की मूलभूत देवी लक्ष्मी ही है। एक पुरुष के जीवन में लक्ष्मी-आगमन से ही न केवल उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होकर उसे मानसिक सबलता देती है वरन् लक्ष्मी अपने विविध स्वरूपों से जिस प्रकार से उसके प्रत्येक पक्ष को स्पर्श कर जाती है, उससे व्यक्ति सहज ही आत्मविश्वास में भर उठता है। **लक्ष्मी की उपेक्षा ही व्यक्ति को जीवन में दरिद्री और अपमानित बनाती है। कई ऐसे धनाढ्य भी हैं जिन्हें छोटे-छोटे कार्यों के लिए सामान्य से व्यक्ति के सामने भी गिड़गिड़ाना पड़ता है, ऑफिसों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। यदि धन ही लक्ष्मी का प्रतीक होता तो यह सब क्यों होता?** लक्ष्मी सम्पूर्ण रूप से जीवन की आभा है, व्यक्ति का प्रभामण्डल है, आन्तरिक रूप से मिली तृप्ति का प्रकटीकरण है। लक्ष्मी को

धन लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, आयु लक्ष्मी, वाहन लक्ष्मी, धरा लक्ष्मी, कीर्ति लक्ष्मी, पुत्र लक्ष्मी . . . लक्ष्मी के तो सौ स्वरूप हैं, जो मनके में मंत्र बद्ध होकर लक्ष्मी माल्य बन जाते हैं

जीवन में और शरीर में समाहित कर लेना, सारे जीवन, तन और मन को पद्मगंध की दिव्य सुगन्ध से सुगन्धित कर लेने की क्रिया है। सम्मोहन की ऐसी गुलाबी आभा को अपने तन-मन में समा लेने की बात है कि ऐसे व्यक्ति के प्रभामण्डल से कोई अछूता रह ही नहीं सकता। **जिनके शरीर में लक्ष्मी का समाहितीकरण हो जाता है वह स्वतः ही ऐसे सम्मोहन से युक्त हो जाते हैं,** जो कि शायद किसी अन्य प्रकार से सम्भव नहीं। जैसे दूर कहीं किसी छोटे से तालाब में कोई कमल खिला हो और उसकी मादक गन्ध से वातावरण भीगा-भीगा हो, ठीक उसी तरह जिनके शरीर में लक्ष्मी समाहित हो जाती है, उनकी आभा और सम्मोहन से सारा वातावरण भीगा-भीगा हो जाता है। जिससे लोग खिंच-खिंच कर उनके पास आने लगते हैं। उन्हें सप्रयास किसी को अपनी ओर आकर्षित नहीं करना पड़ता, और इसी में जीवन की श्रेष्ठता है। यदि आपको गिड़गिड़ा कर या किसी के आस-पास मंडराकर उसे अपने वशीभूत करना पड़े तो फिर जीवन में पौरुष का अर्थ ही क्या? और आनन्द भी कहां?

लक्ष्मी के सौ स्वरूप

लक्ष्मी का तो अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र है। पत्नी को भी लक्ष्मी स्वरूपा माना गया है, **कहते हैं कि जिस व्यक्ति की पत्नी में लक्ष्मी तत्व समाविष्ट हो जाए, वह व्यक्ति स्वतः ही नारायण-तुल्य बन पूर्ण राजसी सुख का भोग करता है।** केवल पत्नी ही नहीं, वाहन-लक्ष्मी, आयु-लक्ष्मी, भू-लक्ष्मी, पुत्र-लक्ष्मी, धरा-लक्ष्मी, धान्य-लक्ष्मी — लक्ष्मी के तो सौ स्वरूप निर्धारित किए गए हैं। जो कुछ भी व्यक्ति के जीवन में 'श्री' वृद्धि करे, उसके प्रभामण्डल को और अधिक आलोकित करे, समाज में उसका और अधिक सम्मान बढ़ाए, उसके पीछे लक्ष्मी का ही स्वरूप है। स्थान भय के विस्तार से लक्ष्मी के सभी सौ स्वरूपों का वर्णन यहां कर पाना कठिन है, किन्तु इसका अनुमान तो आप जीवन में पग-पग पर लगा सकते हैं। **जहां भी आपको लगे कि काश! मेरे जीवन में यह होता, तो बस उसके पीछे लक्ष्मी का ही कोई स्वरूप छुपा है।** उसी रूप में आप लक्ष्मी का ही वह वरदान व्यक्त अथवा अव्यक्त रूप में मांग रहे होते हैं।

लक्ष्मी के विविध स्वरूपों को जान भी लें फिर भी मुख्य प्रश्न तो शेष रह ही जाता है कि हम इन्हें जीवन में कैसे प्राप्त करें? यह जीवन इतना बड़ा नहीं होता और न ही व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य होती है कि वह सप्रयास अपने जीवन में लक्ष्मी के विविध स्वरूपों को उतार सके। येन - केन - प्रकारेण व्यक्ति जीवन में मात्र चार या पांच प्रकार की लक्ष्मी का अर्जन ही कर पाता है और उनका भी केवल अर्जन मात्र, उपभोग नहीं। जबकि जीवन में होना तो यह चाहिए कि हम अपनी अर्जित वस्तु का सुख भी प्राप्त कर सकें। व्यक्ति अर्जित कर लेने के पश्चात् भी इस रूप में असफल रह जाता है कि वह उसे जीवन में धारण किए रह सके। लक्ष्मी का अर्थात् जीवन में सुख और 'श्री' का उपभोग न कर पाना, उसे बचा कर न रख पाना, एक प्रकार से उसे न प्राप्त करने के समान ही है।

इस तथ्य को लेकर पर्याप्त समय से मंत्रवेत्ता और श्रेष्ठ साधक शोध कर रहे थे कि ऐसा क्या उपाय प्राप्त किया जाए कि व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी तत्व के समावेश के साथ ही साथ उसे स्थायित्व भी दिया जा सके। श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र, अष्टलक्ष्मी यंत्र एवं कई अन्य यांत्रिक एवं मांत्रिक उपाय प्रचलित तो हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात तो यह है कि **ऐसा कौन सा उपाय हो कि व्यक्ति के शरीर में ही लक्ष्मी के समस्त सौ स्वरूपों को स्थापित किया जा सके और उसे अक्षुण बनाये रखा जा सके।** इन्हीं शोधों के परिणाम स्वरूप जो उपाय सामने आया, उसका नाम है **लक्ष्मी वर-वरद माल्य।** जिसके माध्यम से सदा-सदा के लिए व्यक्ति के शरीर में लक्ष्मी का स्थायी निवास हो सके, उसके जीवन में ऐसा हो कि लक्ष्मी उसके साथ छाया की भांति रहे।

विचित्र व अद्भुत मनकों से बनी लक्ष्मी आबद्धीकरण की क्रिया से युक्त इस दुर्लभ माला में कुल १०८ मनके होते हैं जिनमें से आवश्यकता तो केवल सौ मनकों की ही होती है लक्ष्मी के सौ स्वरूपों को स्थापित करने के लिए, आठ मनके विशेष सौन्दर्य प्रभाव के लिए प्रदान किए जाते हैं साधक के शरीर में। इसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मंत्रों से सिद्ध कर, प्रत्येक मनके में लक्ष्मी के किसी एक विशेष स्वरूप का स्थापन किया जाता है एवं **'श्री सूक्त'** में गुह्य रूप से वर्णित गोपनीय पद्धति से ऐसा विशेष प्रभाव दिया जाता है कि व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी के सौ स्वरूपों का स्थायी निवास हो सके। ऐसी माला केवल धारण करने वाले व्यक्ति के लिए ही नहीं, उसके पुत्रों-पौत्रों और वंशजों के लिए भी उसी प्रकार से उपयोगी रहती है। **स्पष्ट रूप से कहा जाए तो यह केवल एक माला नहीं अपितु धरोहर है, आपकी पीढ़ियों के लिए। आप जिस प्रकार अपने पुत्र-पौत्रों के लिए धन-संचय, भूमि व मकान के रूप में अपनी याद छोड़ जाते हैं, ठीक उसी प्रकार आने वाली पीढ़ियाँ कृतज्ञता से गद्गद् हो उठेंगी कि उनके पूर्वज उनके लिए कैसा अनोखा उपहार छोड़कर गए हैं!** यह ऐसी माला नहीं है कि इसे जब चाहें तब बाजार में जाकर खरीद लें और धारण कर लें। इस प्रकार की माला को तो बिरले ही सिद्ध करना जानते हैं।

वर वरद का अर्थ है कि हम जीवन में किसी को कुछ दे सकें, हमारे पास सामान्य से अधिक आवश्यकता से अधिक वैभव व धन हो. . . तभी तो पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ सकेंगे

पत्रिका परिवार ने अपने निर्देशन में सिद्धहस्त शिष्यों के द्वारा यह माला केवल भारत में रहने वाले शिष्यों के लिए तैयार कराई है एवं अत्यधिक कठिनाई व लम्बे अनुष्ठानों द्वारा सिद्ध होने के कारण यह माला अत्यन्त सीमित संख्या में ही उपलब्ध हो सकी है।

इस माला को धारण करने से व्यक्ति के शरीर में भगवती लक्ष्मी अपने सौ स्वरूपों के साथ पूर्णता से प्रवेश कर स्थापित होने के लिए बाध्य हो जाती है। इन मनकों के व्यक्ति के शरीर से स्पर्श करते रहने के कारण धीरे-धीरे उसके जीवन में परिवर्तन आने लगते हैं। लक्ष्मी-तत्व के स्पर्श से उसका चिन्तन भी बदल जाता है। आर्थिक दरिद्रता के साथ-साथ दैन्यता और कायरता समाप्त हो जाती है। उसके जीवन में सही अर्थों में आध्यात्मिकता का पूर्ण-सुख, सौभाग्य और मानसिक शान्ति का समय प्रारम्भ हो जाता है। लक्ष्मी भी अन्य देवी-देवताओं के समान मूल रूप में आध्यात्मिक स्वरूपा ही है। आध्यात्मिकता की प्रचलित परिभाषा के कारण उन्हें समझ नहीं पाए क्योंकि आध्यात्मिकता का अर्थ, भगवे वस्त्र धारण करने तक सीमित जो कर दिया गया है। घर में पुत्र हों, पौत्र हों, सुलक्षणा पत्नी हो, परस्पर मेल-मिलाप हो, अतिथि सत्कार हो, आत्मीय मित्रों के संग हास्य-विनोद के क्षण हों, साधु-संतजनों का सत्कार व दान हो, धार्मिक स्थानों की यात्राएं हों और फिर भी मन निरन्तर प्रभु चिन्तन में ही लीन रहे, यही आध्यात्मिकता की सही परिभाषा है। **पूज्यपाद गुरुदेव ने एक अवसर पर स्पष्ट किया था कि वर-वरद का तात्पर्य होता है हम किसी को कुछ प्रदान कर सकें। केवल अपने ही लिए अर्जित व संचित न करें। यह विशिष्ट माला इसी लक्ष्य की पूर्ति करती है कि आप अपने आप को समृद्ध करें ही, अपना जीवन सुख-पूर्वक व्यतीत कर निश्चिन्त भाव से प्रभु चरणों में लीन हो सकें- ताकि जो आपके सम्पर्क में आए उसे भी आप कुछ प्रदान करने की सामर्थ्य रखते हों।**

यह निश्चित है कि आध्यात्मिक उन्नति तभी हो सकती है, जब पारिवारिक समृद्धि एवं उन्नति हो। पारिवारिक उन्नति के अभाव में गृहस्थ की कठिनाइयों के साथ चलते व्यक्ति अपने जीवन में श्रेयता नहीं ला सकता। यह माला ऐसी ही अनेक पारिवारिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों का निदान प्रस्तुत करती है। पारिवारिक जीवन में तो कभी बच्चों की तबीयत खराब होती है, तो कभी अचानक अतिथियों का आगमन तो कभी किसी संकट में अचानक व्यय हो उठता है, साथ ही नित्य भरण-पोषण के पक्ष तो होते ही हैं। **सचमुच जो व्यक्ति गृहस्थ में रहते हुए साधना करता है, उसका प्रयास प्रशंसनीय है क्योंकि वह किन्हीं जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ कर केवल अपनी उन्नति में लीन होने वाला स्वार्थी प्राणी नहीं होता।**

(शेष पृष्ठ ७९ पर)

"पर अब तो मैं तुम्हारी हूं, तुम्हारी ही, सम्पूर्ण रूप से तुम्हारी ही तो . . . यह क्या सोचने लग गये तुम? किस बात से भयभीत हो रहे हो . . ." खिलखिलाहट के साथ गूंजती हुई आवाज मेरे अंदर तक उतरती चली गई . . .
क्या ऐसी ही होती है भैरवी, उफ! मैंने तो कुछ और ही सोचा था, पर यह तो . . .

आंख बंद करते ही गूंजने लगी कानों में खिलखिलाहटें . . . पूर्णाहुति की उन स्वर्णिम लपटों के पीछे स्वर्ण सी ही दमकती उसकी देह बंद नेत्रों के आगे आ-आकर लपटों की तरह ही धधकाने लगी मेरा तन-मन . . . और आंख खुलते ही ऊपर साफ आसमान में गुंथे सैकड़ों तारे जैसी उसकी फुलझड़ी सी छूटी खिलखिलाहटों की चिनगारियां बन कर मुझे मुंह चिढ़ा रहे थे . . . **चारों ओर जैसे उसका ही चेहरा एक - एक वृक्ष और एक - एक पत्ते पर उभर आया हो, और वह आमंत्रण . . .**

. . . लेकिन मैं तो अपनी साधना में अपनी सहयोगिनी बनाकर लाया था, बिना भैरवी के तंत्र की यह साधना पूर्ण होती भी तो कैसे? मैंने ही तो उसे बनाया था भैरवी, और कुछ भी तो नहीं सोचा था मैंने इसके सिवा, क्यों वह जाते-जाते मेरा रोम - रोम सुलगाती चली गई . . . अपने मादक आमंत्रण से . . . क्या वास्तव में वह मुझसे पूर्व जन्म में संबंधित रही? क्या वास्तव में वह मेरे साथ पहले भी साधनाओं में इसी तरह बैठ चुकी थी? क्या पथ भ्रष्ट होकर हम दोनों फिर इन दशाओं में आए? . . . दोष किसका था? . . . जाते - जाते कितने ही प्रश्न छोड़ती चली गई वह। बिलकुल निराधार भी तो नहीं लग रही थी उसकी बातें, कुछ-कुछ तो मुझे भी याद आने लगा था और याद आने पर भी भूला जा रहा था उसके मादक स्पर्श और संकेतों की आड़ से . . . ।

. . . पायल की रूनझुन की तरह ही मेरे कानों में रात भर घंटियां बजती रहीं एक - एक पल को याद कर . . .

पक्षियों का कलरव कह रहा था कि अब रात का वह खुली आंखों से देखा स्वप्न बीत गया, लेकिन कल रात की उस घटना की याद अभी तक मादक स्वप्न बनकर आंखों के सामने तैर रहा था।

कल रात ही तो पूर्ण हुई थी मेरी साधना! यह सामने बना बड़ा से अष्टकोणीय हवन कुंड इसी प्रातः की तरह लाल रक्त जवा के पुष्प, सिन्दूर और कुंकुम के कण कल रात के साक्षी बन यहां -वहां बिखरे पड़े थे। हवन कुण्ड की धधकती अग्नि के स्थान पर शेष रह गए अंगारों की

तरह मेरा मन भी हल्की - हल्की ऊष्मा से स्पंदनशील था लेकिन आंखों के सामने तो लपटों की तरह ऊपर शून्य में उठकर विलीन होती और नर्तन करती ज्वालाओं जैसा उसका नृत्य और नृत्य से ज्यादा मुझमें विलीन होने की कामना आंखों के सामने से हट नहीं रही थी। साधना तो पूर्ण हो गयी थी लेकिन नई साधना का पृष्ठ खुल गया था मेरे सामने . . . मुझे अपने जीवन में प्राप्त कर लेने की उसकी साधना का . .

कितने घूमने पर कितनी मुश्किल से मिली थी वह। **तंत्र की उस हस्तलिखित प्रति में वर्णित एक - एक रेखा ज्यों उसकी देह देख कर ही लिखी गई हो,** ग्रंथ के पन्नों से निकल कर मेरे सामने आकर खड़ी हो गई थी उस पहाड़ी वन के मोड़ पर . . कैसे - कैसे गांव वालों को और उसके माता - पिता को समझाना पड़ा था मुझे, कैसे - कैसे मेरे लाख मान-मनौव्वल के बाद सहमत हुई थी वह खुद भी और कल कैसे वही जाते - जाते मेरी ही शासिका बन मुझ पर हावी हो गई **. . . मृणालिनी, यही तो नाम बताया था उसने मुझे।** ज्यों जंगल की घनी घास फूंस के बीच कोई सुन्दर सा फूल खिल आए और झांक - झांक कर अपनी रूप राशि झलका दे। ऐसी ही तो अपने नाम से ही नहीं खुद अपने सौन्दर्य से भी बनी हुई थी, अविकसित और आदिवासी से लगते गांव के बीच . . . किसने दे दिया ऐसा सुगढ़ नाम उसे, लेकिन जिसने भी दिया था उसे यह नाम, उसने गलत भी तो नहीं कहा **. . . कमलनाल की ही तरह उसकी कोमल लचकती हुई देह यौवन के कुण्ड में ही तो डूबी हुई थी और कमल की पंखुड़ियों सी अर्धनिमिलित आंखें . . . जैसे कुमुदिनी सूरज की पहली किरण का स्पर्श पा अलस हो खिलने और न खिलने की दुविधा के बीच में जा पड़ी हो . . . ऐसा ही अर्धविकसित यौवन सारे तन और चेहरे पर बिखरा हुआ . . .** साथ में लिए हुए मादक गंध जो कल रात कितनी अधिक गहरी हो गई थी . . . उस मादक पुष्प गंध की जगह उसकी देह से कस्तूरी सी गंध कहां से फूट पड़ी मेरे बिलकुल समीप आ कर खड़े होने पर **. . . पता नहीं किस बात से खो गई मेरी सुध - बुध कस्तूरी मृग की तरह उसकी नाभि से फूटती उस यौवन गंध से या फिर उसकी देह की छुअन से. . .** मुझसे भी अधिक उसकी साधना सफल हो गई . . . तभी तो कोमल गुलाबी आंखों के डोरे सुर्ख लाल हो उठे और पतले होंठ भींच गए कुछ पीकर . . .

"मैं तुम्हारी संगिनी हूं, इसी जन्म से नहीं. . . जन्मों - जनम से! लेकिन हर बार ठुकराया तुमने मुझे. . . मेरी साधना की पूर्णाहुति हुई"

"मैं तुम्हारी संगिनी हूं इसी जन्म से नहीं कई - कई जन्मों से! तुमने लेकिन हर बार मुझे ठुकराया, हर बार मैं तुम्हारे कारण ही भटकी और पथ भ्रष्ट हुई . . . भटक रही हूं मैं जन्मों से लेकिन इस बार नहीं . . . इस बार तुम्हें अपनाना ही होगा मुझको। आज तुम्हारी साधना की पूर्णाहुति थी कल मेरी साधना की पूर्णाहुति होगी। कल मुझे पूर्णता देनी ही होगी तुमको। तुमने मुझको बनाया अपनी भैरवी और आज मैं तुम्हारी भैरवी हूं पर कल तो ऐसा बंधन नहीं रहेगा . . . तुम मुझे रोक नहीं सकोगे,पहले से ही सावधान करती जा रही हूं तुम्हें . . ." एक - एक वाक्य याद आ रहा था मुझे।

कहीं भाग कर दूर निकल जाने की कल्पना करना ही व्यर्थ था क्योंकि मैंने ही तो पूर्ण विधि - विधान से उसे साधारण नारी की जगह बना दिया था. . . **भैरवी! साक्षात् भैरवी! पूर्ण प्रचण्ड कामोन्मत्त, उद्दाम यौवन की उछलती हुई नदी . . .** मैं समझ रहा था कि अब उसमें कैसी - कैसी विलक्षण शक्तियां भर गई हैं, अब वह भले ही देह से कमल नाल जैसी हो लेकिन वह दो माह के अनुष्ठान के बाद साक्षात् शक्ति स्वरूपा बन गई है, मैं कहीं भी रहूं, कहीं भी छिपूं वह मुझे प्राप्त कर ही लेगी।

". . . यही पूर्णाहुति तुम्हारी पूर्णाहुति नहीं है अभी तो साक्षात हवन कुण्ड के रूप में मैं ही हूं तुम्हारे सामने, यदि मेरी पूर्णता संभव नहीं हो रही तो तुम्हारी भी कैसे संभव हो पाएगी।" लालसा, कामना, वासना और चुनौती का मिला - जुला स्वर मेरे कानों में देर तक गूंज रहा था और व्यर्थ लग रही थी मुझे कल की साधना में मिली सफलता, इस आपदा के समक्ष . . .

अब तो **कामदानाथ जी** ही सहायक हो सकते थे। मुझे वही उबार सकते थे मेरे इस गले आ पड़ी विपत्ति से, लेकिन रमता जोगी बहता पानी. . . पता नहीं कहां विचरण कर रहे होंगे वह इस समय – तिब्बत की बर्फीली पहाड़ियों में, कामाख्या की उन चिरयौवना पद्मगन्धा सुन्दरियों के बीच में या दार्जिलिंग के किसी बौद्ध मठ में . . . यह भी हो सकता है कि वह कलिंग देश के किसी घने जंगल में हों, कहीं भी तो हो सकते थे वे किसी भी समय . . . ज्ञान की अद्भुत पिपासा और पुराने ग्रन्थों के संग्रह में वे कहां - कहां तक जाने के लिए नहीं तैयार हो जाते और निरन्तर भटकते- भटकते क्या वह खुद भी एक चलते फिरते ग्रंथ ही नहीं बन गए थे?

चल दिया अनुमान से उस ओर

जहां उनके मिलने की सबसे अधिक संभावना थी, जहां उनसे पहली बार मेरी भेंट हुई थी, वही स्थान मेरे लिए बचाव का एक मात्र स्थान जो शेष रह गया था . . .

. . . दो सप्ताह बीत गये थे और अब दल - दल से भरी भूमि, उलझते, फंसते , गिरते और आगे बढ़ते हुए कभी कहीं घने वृक्षों का झुरमुट तो फिर कहीं जहरीली घासों और कीट- पतंगों की भरमार, लेकिन मुझे तो इधर कुंआ और उधर खाई वाली स्थिति थी पिछली बार तो कामदानाथ जी अपनी जानी पहचानी किसी पगडंडी से सुरक्षित ले गए थे मुझे पर इस बार तो मैं केवल दिशा ज्ञान और कुछ बिखरे सूत्रों को पकड़कर अंधेरे में तीर चलाने जैसा कार्य कर रहा था। दोनों पांव सूज कर और कट फट कर चलने से मना कर रहे थे और दो रातें मैंने जंगली जानवरों के भय से रात में पेड़ के ऊपर बैठ कर ही तो काटी थी . . . लेकिन सौभाग्य था मेरा, कि केले का वह घना झुरमुट अब दिखाई पड़ रहा था जिसके भीतर कोई कह ही नहीं सकता था कि फूंस और मिट्टी की बनी एक झोपड़ी भी विद्यमान हो सकती है . . . **स्वामी कामदानाथ जी की तपः स्थली!** लोगों के बीच में अटपटे और रहस्यमय स्वभाव के प्रसिद्ध कामदानाथ जी का यहीं तो प्रकट होता था वह दिव्य स्वरूप और . . . सामने ही उपस्थित अपने उसी शांत प्रसन्नचित और आत्मलीन स्वरूप में अपनी आराध्या मां भगवती भुवनेश्वरी की विशाल प्रतिमा के समक्ष ध्यान मग्न . . .

शायद अभी - अभी ही कोई अनुष्ठान सम्पन्न कर चैतन्य हुए थे और सामने यज्ञवेदी से उठती नीली - श्वेत धूम्र रेखाएं संकेत कर रही थीं उस दिव्य पूर्ण आहुति का, और लिपट रही थी उनके श्वेत गौरांगों पर विद्युत द्युति, चारों ओर बिखरे जंगली पुष्पों के ढेर- अज्ञात नामों के और अज्ञात रंगों के । ऐसे विचित्र रंग जो आपस में घुल मिलकर नवीन रंगों की छटा बनकर सारे वातावरण को विचित्र सी रहस्यमयता और आभा प्रदान कर रहे थे. **. . पास ही बिखरी जड़ी - बूटियों के अवशेष, इन प्रकृति के अंशों से ही, प्रकृतिलीन मां भुवनेश्वरी की आराधना की है, पूर्णाहुति दी है, इस यज्ञ में तभी तो छाई है ऐसी मादक गंध, वह अलौकिक सुगन्ध, जो अन्य कहीं किसी यज्ञ में मैंने पाई ही नहीं . : .** और देखो वह मां भगवती भी तो कैसी आत्मतृप्त हो गयी हैं, कैसी दिव्य आभा और मुस्कान खिल उठी है उनके चेहरे पर . . . पहले भी तो देखा था इसी मूर्ति को, तब तो नहीं थी, इस पर ऐसी सलज्ज आभा. . .

. . . आंखों में उतर आई थी वही करुणा और चेहरे पर सामने स्थापित मां भगवती भुवनेश्वरी की ही आभा - ". . . सफल रहा मेरा अनुष्ठान तू आ तो गया सकुशल यहां, पतन निश्चित था तेरा इस जन्म में भी, कितना गिड़गिड़ाया हूं मैं इसके सामने तब जाकर मानी है यह, न सही तू मेरा कोई इस जन्म का लेकिन कोई तो जन्म . . . " अधूरा रह गया वाक्य कामदानाथ जी का, तो यह रहस्य था मुझे यहां तक खींच लेने का और मैं समझ रहा था कि मैं अपने आप ही बचकर यहां तक चल पड़ा हूं. . .

". . . सच कह रही थी मृणालिनी, सचमुच तेरी जन्म - जन्म की परिचित है, गलत नहीं है उसका प्रतिशोध, सचमुच ही तो तेरे ही कारण वह पथभ्रष्ट हुई थी, तेरा ही बलिष्ठ यौवन उसको कामांध कर गया और फिर वही कारण बनी तेरे योगभ्रष्ट होने का. . . खुद भी तो वह सुखी नहीं रह पाई, लेकिन प्रबल थी तेरी तपस्या जो इस जन्म में तू मेरे सम्पर्क में आ गया, अब जन्मों से चलता यह क्रम मैं तोड़ ही दूंगा . . ."

कुछ कहने की कोई आवश्यकता ही नहीं रह गई। बातों को मैं जिस ढंग से बांध कर लाया था, वह तो बिखर गई शून्य में, पिछले जन्मों की ही तरह और शेष रह गए मन में कुछ प्रश्न . . .

"भोग पाप नहीं, भावभूमि ही उचित या अनुचित हो सकती है ऊर्ध्व — वीर्य से च्युत होना ही तेरा साधना में खण्डन रहा और कारण बनी मृणालिनी, दोष तेरा भी रहा होगा. . . "

बहुत कुछ दिया था कामदानाथ जी ने इन अन्तिम दो वाक्यों में लेकिन अभी मेरा संकट पूर्ण रूप से टला नहीं था। काल - स्थान कुछ भी तो नहीं बांध सकता था स्वामी कामदा नाथ जी को। किन कड़ियों से जुड़कर वे यहां तक आ गए थे मेरे लिए, केवल मुझे यहां तक लाने के लिए, और अभी तो भैरवी का प्रतिशोध शेष रह ही गया था। "रुकना होगा तुझको अभी यहीं, कुछ दिन और बचाना होगा अपने आप को उसकी रहस्यमय शक्तियों से, जाना नहीं होगा मुझको इस क्षेत्र के बाहर" — जैसे निर्देश देकर स्वामी कामदानाथ जी चल दिए अपने सदैव की तरह ही किसी रहस्यमय अभियान पर। और मैं . . .

झींगुरों की ध्वनि से गहराती उस नीरवता में मैं अकेला रह काल के आने वाले कौतुक को देखने के लिए शेष रह गया . . .

मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान

विशेषतः आपके लिए

जी हाँ. . .! गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''
का वार्षिक सदस्य बनने पर

यही तो है हिन्दी जगत की वह मासिक पत्रिका जो आपको प्रदान करती है, स्वस्थ मनोरंजन के साथ-साथ अपने भारतीय ज्ञान की परम्परा. . .

जिनका ठोस आधार है -- ज्ञात-अज्ञात शास्त्रों से ढूंढकर लाई गई एक से एक दुर्लभ और अचूक साधनाएं. . .

. . . जिनके द्वारा सदैव आपके जीवन में धन- सम्पदा, सुख-शांति और आनन्द की रस धारा बहती ही रहे. . .

ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, कथाएं, तंत्र-मंत्र के रहस्य, क्या कुछ नहीं, और ये सब प्रतिमाह निरंतर. . . आपको चिंतन और ज्ञान वर्धन की मिली-जुली दुनिया में ले जाती हुई.

वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/-
डाक खर्च सहित १६८/-

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा
नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८
अथवा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर(राज.),फोन-०२९१-३२२०६

मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान

साक्षी युग परिवर्तन की

जिस प्रकार से मनुष्य योनि है उसी प्रकार से अन्य योनियों का भी इस ब्रह्माण्ड में अस्तित्व है और गंधर्व एक ऐसी ही योनि है। वाद्य-संगीत, नृत्य और ललित कलाओं में निपुण यह योनि, देव-वर्ग के समकक्ष ही , देव-वर्ग की सहायक योनि मानी गई है और व्यक्ति की प्रेम, मनोवांछित विवाह, एवं आमोद-प्रमोद संबंधी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए विशेष सहायक कही गयी है।

गंधर्व योनि की विशेषता और महत्व का भारतीय जीवन में बहुत पहले से ही ज्ञान होने लगता है। **यजुर्वेद** में भी विश्वावसु गंधर्व का उल्लेख प्राप्त होता है। जहां उल्लिखित है - "हे परिधि! विश्वावसु नामक गंधर्व समस्त विघ्न की शांति के लिए तुम्हें सब ओर से स्थापित करे और तुम केवल अग्नि की ही परिधि न होकर राक्षसों और पशुओं से रक्षा करने वाली यजमान की भी परिधि बनो।"

क्या अधिक आयु हो जाने पर भी विवाह योग नहीं बन रहा? क्या सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी योग्य जीवन संगिनी नहीं मिल रही? क्या बार - बार विवाह निश्चित हो जाने के बाद भी टूट जाता है?

तंत्र साधनाओं में जहां दैनिक जीवन की अन्य समस्याओं पर ध्यान दिया गया है वहीं जीवन के इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष को भी अछूता नहीं रहने दिया गया।

गंधर्व और मुख्य रूप से विश्वावसु गंधर्व व्यक्ति की कामनाओं की पूर्ति के साथ-साथ रक्षाकारक देव भी है, **रुद्रयामल तंत्र** में विश्वावसु गंधर्वराज का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

गंधर्वों से संबंधित अनेक साधनाएं हैं और वे सभी मुख्य रूप से व्यक्ति के प्रेम, मनोवांछित विवाह के पक्ष से संबंधित हैं, किंतु विश्वावसु गंधर्व प्रयोग की मुख्य विशेषता यह है कि **जिन पुरुषों का अधिक आयु का हो जाने पर भी विवाह न हो रहा हो या उचित कन्या न मिल पा रही हो अथवा भांति-भांति के विघ्न उपस्थित हो जाते हों तो वे कौन सा ऐसा प्रयोग करें जिसके द्वारा जहां एक ओर उसकी मनोवांछित स्त्री प्राप्त हो सके, वहीं विवाह में आने वाली बाधाएं भी समाप्त हों?**

भगवान शिव ने पार्वती द्वारा यह प्रश्न पूछे जाने पर कि योग्य वर को उचित कन्या कैसे प्राप्त हो, उन्होंने विश्वावसु गंधर्व की उपासना को ही सर्वश्रेष्ठ कहा किंतु यह विद्या गोपनीय, गुरु भक्त और केवल कौल मार्ग के अनुयायियों के लिए उपलब्ध की—

गुरु भक्ताय दातव्यं काम मार्ग रताय च।
देयं कौल कुले देवी! सर्व सिद्धिस्तु जायताम्।।

केवल योग्य और सुलक्षणा कन्या की प्राप्ति ही नहीं, वैवाहिक-सुख, संतान-सुख तथा भौतिक जीवन के समस्त सुखों का आधार भी भगवान शिव ने विश्वावसु गंधर्व की साधना को ही बताया है।

अप्सरा साधनाओं, यक्षिणी साधनाओं एवं इसी प्रकार की अन्य साधनाओं को भी करने के लिए आवश्यक होता है कि व्यक्ति के पास गंधर्व-साधना का बल हो और अविवाहित पुरुषों के लिए तो यह साधना साक्षात् वरदान है।

विश्वावसु गंधर्व की एक संज्ञा **कन्या-वृक्ष** के रूप में दी गई है जिनका वाहन वायु है, स्वरूप प्रेममय है और जो सौन्दर्य के रक्षक हैं। **यदि कोई विवाहित पुरुष भी इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, तो उसे दाम्पत्य जीवन में विशेष सुख प्राप्त होता है।**

गंधर्व का स्वरूप अत्यन्त मनोहारी तथा विविध अलंकरणों से भूषित होता है, अतः साधक को चाहिए वह भी इस साधना में अच्छे वस्त्रों, सुंगध के साथ साधना सम्पन्न करे। इस साधना में मंत्र-जप का उतना महत्व नहीं है जितना इस बात का कि साधक के अंदर साधना के प्रति कितना तीव्र विश्वास और आग्रह है, क्योंकि गंधर्व एक ऐसी योनि है जो जितनी शीघ्र प्रसन्न होती है उतनी ही शीघ्र रुष्ट भी। तांत्रोक्त साधना होने के कारण यंत्र का महत्व सबसे अधिक है।

विश्वावसु मणि ही विश्वावसु गंधर्व की शक्तियों का रहस्य है, उसे प्राप्त कर किसी मुद्रिका में जड़वा कर यह साधना की जाती है।

यह साधना मंगलवार और शनिवार की रात्रि को छोड़ किसी भी दिन से प्रारम्भ की जा सकती है और रात्रि में ११ बजे के पश्चात् सुंदर वस्त्र पहन स्वच्छ आसन पर उत्तर मुख होकर सामने **विश्वावसु मणि मुद्रिका** स्थापित कर केसर, चंदन एवं सुगन्धित द्रव्य से पूजन कर पुष्प की पंखुड़ियों पर स्थापित कर निम्न मंत्र की दो माला मंत्र जप **स्फटिक माला** से करना चाहिए।

मंत्र जप करने से पूर्व विश्वावसु गंधर्व का निम्न प्रकार से ध्यान करें —

मनोकामना सिद्धि हेतु छोटा सा प्रयोग यह भी

यदि प्रेम, मनोवांछित विवाह से सम्बन्धित कोई कामना मन में विशेष बलवती हो तो एक छोटा सा प्रयोग यह भी कर ही लेना चाहिए। विशेष रूप से अविवाहित कन्याओं के लिए तो यह एक सिद्ध प्रयोग माना गया है। सोमवार को धारण करने योग्य **लघु भुवनेश्वरी यंत्र** को पीले कपड़े पर स्थापित कर उसके ऊपर पीले पुष्प की पंखुड़ियां चढ़ाते हुए **स्फटिक माला** से **''ह्रीं''** मंत्र जप करते हुए १०८ बार चढ़ाएं और पंखुड़ियों सहित वह यंत्र पीले कपड़े में अपने चित्र पर बांध कर रख दें। शीघ्र विवाह और आगामी जीवन में पूर्ण गृहस्थ सुख के लिए यह एक अनुकूल प्रयोग है।

ध्यान —

क्लीं कन्याभिः परिवारितं,
सुविलसत्-कह्लार-माला-धृतम्,
स्तुष्टयाभरण - विभूषितं,
सुनयनं कन्या - प्रदानोद्यमम्।

मंत्र -

ॐ क्लीं चित्तानुकूल उर्वश्यै प्रदाय क्लीं ॐ

इस मंत्र जप में **स्फटिक माला** के अतिरिक्त किसी अन्य माला का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

साधक एक दिन के प्रयोग से ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है और यदि चाहे तो अनुष्ठान रूप में पन्द्रह दिनों तक नित्य एक माला मंत्र जप कर सकता है। साधना के बाद मुद्रिका को दांए हाथ की किसी उंगली में धारण कर लें।

यदि किसी विशेष स्त्री से विवाह की इच्छा हो तो उसके नाम का संकल्प कर यह मुद्रिका पहिने, नहीं तो सामान्य रूप से धारण करने पर भी शीघ्र ही व्यक्ति को उत्तम स्त्री की प्रप्ति होती है।

क्लीं रम्भादि - कामिनी-वार
स्त्रियो जाति - कुलांगना।
वश्यं देहि त्वम् मे सिद्धिं
गंधर्वाणां गुरुत्तमः क्लीं।।

विश्वावसु गंधर्व का स्वरूप **क्लीं** स्वरूप माना गया है और अनुष्ठानपूर्वक इस प्रयोग को सम्पन्न करने से **जहां एक ओर पुरुष को मनोवांछित एवं सुयोग्य वधु की प्राप्ति होती है वहीं स्वयं उसका स्वरूप भी अत्यन्त आकर्षक, सौन्दर्यवान एवं पौरुष से भरा हो जाता है।**

तंत्र साधना का सिद्ध मुहूर्त

जिन क्षणों में प्रकृति भी साधक के अनुकूल हो उसकी इच्छा-पूर्ति में सहायक बने, वही क्षण सिद्ध मुहूर्त हो जाता है . . .

अन्यथा साधक का सारा परिश्रम प्रकृति के विरुद्ध ही तो होता है, होली और साधना - मुहूर्त का सम्बन्ध बताता गहन विवेचन –

यह सम्पूर्ण सृष्टि वास्तव में अणुओं का एक संयोजन मात्र है, जिसका प्रत्येक कण दूसरे कण से जुड़ा है और ईथर के माध्यम से सम्पूर्ण ब्रह्मांड में तादात्म्य हुआ है, यदि पूरे विश्व में कहीं पर भी कोई हलचल होती है तो सचेत साधक को वह स्पर्श अवश्य करती है और **इसे ही आम बोलचाल में 'सिद्धि' कहा जाता है, 'चमत्कार' माना जाता है जबकि साधक जानता है इसमें विचित्रता जैसी कोई बात ही नहीं**। यह स्थिति तो साधना के माध्यम से कोई भी प्राप्त कर ही सकता है। अंतर केवल इतना होता है कि जहां सफल या सिद्ध साधक प्रत्येक क्षण का महत्व जानता है और तर्क-कुतर्क छोड़कर अपने गुरु के बताए ढंग से साधना में गतिशील रहता है, वहीं आम व्यक्ति अपना अधिकांश समय और ऊर्जा आलोचना व संदेह में गवां देते हैं। वास्तविक साधक जानता है कि उसे किस क्षण कौन सी साधना करनी चाहिए और वह प्रकृति में हो रहे परिवर्तनों के प्रति चौकन्नी दृष्टि रखते हुए सामान्य साधनाओं की अपेक्षा तंत्र की साधनाओं को प्रमुखता देता है।

तांत्रोक्त साधनाएं ही वास्तव में सफलता से अधिक संबंध रखती हैं क्योंकि उसके पीछे व्यक्ति की जूझने की प्रवृत्ति होती है, जिससे सफलता मिलने की सम्भावनाएं प्रबल होती जाती हैं। **अपने समस्त विरोधाभासों के बाद भी तंत्र की सर्वोच्चता निर्विवाद रूप से सत्य है ही।** वर्ष में कुछ दिवस ऐसे विशेष महत्व के होते हैं जब प्रकृति का संतुलन, प्रकृति की रहस्यमय लीला, अणु-अणु चैतन्य होने के साथ इस प्रकार का वातावरण होता है जो साधक को उसके परिश्रम का सौ गुना अधिक प्रभाव दे जाता है या स्पष्ट कहें तो प्रकृति विरोध न करने के स्थान पर सहायक और मृदु रूप में सामने आती है। प्रकृति के प्रकट स्वरूप में भी तो हम उसे दो प्रकार की देखते हैं या तो शीतल मंद पवन या उग्र प्रचण्ड तूफान के बवन्डर, खेतों को सींचने वाला नदी का शांत जल और वहीं बाढ़ की उफनती नदी से गांव के गांव निगलने वाला रौद्र प्रवाह . . .

तांत्रोक्त साधनाएं भी जहां एक ओर सौम्य हैं, वहीं अपने प्रवाह में झटके से विशाल वृक्ष को भी उखाड़ कर गिरा

देने की क्षमता से युक्त भी हैं, और बिना विनाश के नव-निर्माण संभव भी तो नहीं। प्रकृति की यह उग्रता और तंत्र की प्रचण्डता के सही तालमेल का दिन ही कालरात्रि, दीपावली की रात्रि या होलिका-दहन की रात्रि होता है। प्रकृति इस दिन सामान्य स्थिति में नहीं होती। इन दिवसों में कण-कण पूरी क्षमता से कम्पनमय रहता है और साधक इन्हीं क्षणों को पकड़ने की कला जानता है।

और फिर होली का पर्व . . . दो महापर्वों के ठीक मध्य घटित होने वाला पर्व! होली से पंद्रह दिन पूर्व ही सम्पन्न होता है, महाशिवरात्रि का पर्व और पंद्रह दिन बाद चैत्र नवरात्रि का। शिव और शक्ति के ठीक मध्य का पर्व और एक प्रकार से कहा जाए तो शिवत्व के शक्ति से सम्पर्क के अवसर पर ही यह पर्व आता है। **जहां शिव और शक्ति का मिलन है वहीं ऊर्जा की लहरियों का विस्फोट है और तंत्र का प्रादुर्भाव है, क्योंकि तंत्र की उत्पत्ति ही शिव और शक्ति के मिलन से हुई-** यह विशेषता तो किसी भी अन्य पर्व में सम्भव ही नहीं और इसी से होली का पर्व पूरे वर्ष का पर्व, साधना का सिद्ध मुहूर्त, तांत्रिकों के सौभाग्य की घड़ी कहा गया है।

प्रकृति में हो रहे कम्पनों का अनुभव सामान्य रूप से न किया जा सके लेकिन महाशिवरात्रि के बाद और चैत्र नवरात्रि के पहले - क्या वर्ष के सबसे अधिक मादक और स्वप्निल दिन नहीं होते? . . . **क्या इन्हीं दिनों में ऐसा नहीं लगता है कि दिन एक गुनगुनाहट का स्पर्श देकर चुपके से चला गया है और सारी की सारी रात आंखों ही आंखों में बिता दें . . .** क्योंकि यह प्रकृति का रंग है, प्रकृति की मादकता, उसके द्वारा छिड़की गई यौवन की गुलाल है और रातरानी के

होली का महापर्व शक्ति साधनाओं का तो अचूक अवसर है विशेष कर दस महाविद्या साधनाओं का।

यदि मन में कोई महाविद्या सिद्ध करने की कामना हो तो इसी रात्रि में साधना सम्पन्न कर ही लेनी चाहिए क्योंकि इस दिन की गई एक माला का प्रभाव सौ माला मंत्र जप के समान होता है. . .

अलग - अलग महाविद्याओं की साधना सम्पन्न करने की अपेक्षा यदि 'दस महाविद्या यंत्र' स्थापित कर प्रत्येक महाविद्या का एक माला मंत्र जप शक्ति माला से सम्पन्न किया जाए तो साधक को सभी दस महाविद्याओं में पूर्णता प्राप्त हो जाती है जिससे उसकी बाधा, रोग आदि का शमन होता ही है।

खिले फूलों का नशीलापन है! पूरे साल भर में यौवन और अठखेलियों के ऐसे मदमाते दिन और ऐसी अंगड़ाईयों से भरी रातें फिर कभी होती ही नहीं और हो भी कैसे सकती हैं . . .

तंत्र भी जीवन की एक मस्ती ही है, जिसके सुरूर से आंखों में गुलाबी डोरे उतर आते हैं, क्योंकि तंत्र का जानने वाला ही सही अर्थ में जीवन जीने की कला जानता है। वह उन रहस्यों को जानता है जिनसे जीवन की बागडोर उसके ही हाथ में रहती है और उसका जीवन घटनाओं या संयोगों पर आधारित न होकर उसके ही वश में होता है, उसके द्वारा ही गतिशील होता है। तंत्र का साधक ही अपने भीतर उफनती शक्ति की मादकता का सही मेल होली के मुहूर्त से बैठा सकता है और उन साधनाओं को सम्पन्न कर सकता है, जो न केवल उसके जीवन को संवार दें बल्कि इससे भी आगे बढ़कर उसे ऊंचे, और ऊंचे उठाने में सहायक हों।

इस साल यह पर्व **२६.०३.९४** को सम्पन्न हो रहा है। जो भी अपने जीवन को और अपने जीवन से भी आगे बढ़कर समाज व देश को संवारने की इच्छा रखते हैं, लाखों-लाख लोगों का हित करने, उन्हें प्रभावित करने की शैली अपनाना चाहते हैं, उनके लिए तो यही एक सही अवसर है। इस दिन कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है। तांत्रोक्त साधनाएं ही नहीं दस महाविद्या साधनाएं, अप्सरा या यक्षिणी साधना या फिर वीर-वेताल, भैरव जैसी उग्र साधनाएं भी सम्पन्न की जाएं तो सफलता एक प्रकार से सामने हाथ बांध खड़ी हो जाती है। जिन साधनाओं में पूरे वर्ष भर सफलता न मिल पाई हो, उन्हें भी एक बार फिर इसी अवसर पर दोहरा लेना ही चाहिए। ✹

तो अब ऐसा करें. . .

अनुभवी साधकों के जीवन में खरे उतरे साधना के रहस्य. . .

साधकों एवं पाठकों के पत्र हमें निरंतर मिलते ही रहते हैं। प्रायः हर तीसरे पत्र में प्रमुख समस्या यही होती है कि उन्हें अपनी इच्छित साधना में मनोवांछित ढंग से सफलता क्यों नहीं मिल पा रही है? और यह भी सत्य है कि जब साधक को सफलता नहीं मिल पाती तो उसका मन टूट जाता है। उसके मन में संदेह और तर्क-वितर्क प्रारम्भ हो जाते हैं और एक प्रकार का अविश्वास जन्म लेने लगता है कि क्या यह साधना पद्धति सत्य भी है अथवा नहीं, जबकि यह स्थिति योग्य साधक के साथ नहीं होनी चाहिए। हताशा और निराशा से तो कुछ भी नहीं मिलने वाला और आलोचना करने के अपेक्षा शांत मन से इस पर विचार करना ही अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है।

साधकों की समस्याओं, अनुभवों एवं विवरणों के आधार पर हम इस अंक में कुछ सूत्र दे रहे हैं जिनको आधार बनाकर यदि कोई भी साधक, चाहे वह नवागंतुक हो अथवा कुछ समय से साधना में संलग्न , कोई कारण ही नहीं कि उसे मनोवांछित सफलता न प्राप्त हो सके।

यह साधना का प्रथम और कहा जाए तो एकमात्र सूत्र है— मन में दृढ़ निश्चय व चुनौती का भाव होना कि मैंने अपनी रुचि और क्षमता के अनुकूल यह साधना अपने हाथ में ली है और चाहे जैसी भी परिस्थिति आए, मैं कोई दूसरी साधना नहीं करूंगा। एक ही समय में दो-तीन प्रकार की साधनाएं एक साथ करने से कोई लाभ प्राप्त भी नहीं हो सकता।

साधना शुरू करने से पहले जरूरी बात यह हो जाती है कि आपके पास सही व प्रामाणिक यंत्र तथा अन्य साधना सामग्रियां हों, क्योंकि इन्हीं का सहारा लेकर तो अपने इष्ट का दर्शन या सफलता प्राप्त की जा सकती है।

प्रत्येक साधना के पूर्व, चाहे वह किसी भी प्रकार की हो, **गुरु यंत्र** को स्थापित करके संक्षिप्त गुरु-पूजन करना आवश्यक होता है। संक्षिप्त पूजन का अर्थ होता है कि साधक कुंकुंम, अक्षत, पुष्प, दीप तथा धूप से पूजन कर **निखिलेश्वरानन्द रहस्य** का (अथवा संक्षिप्त क्रम में जो भी स्तुति पाठ उसे याद हो, उसका) पाठ करे

और कम से कम एक माला गुरु-मंत्र की अवश्य जप करें।

योग्य साधक, जो साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें तो प्रति गुरुवार की प्रातः **तांत्रोक्त गुरु पूजन** पूरे विधि-विधान से नियमपूर्वक सम्पन्न करना चाहिए। यदि वे व्यस्तता के कारण ऐसा कर पाने में असमर्थ हों तो माह में कम से कम एक बार तो अवश्य ही **तांत्रोक्त गुरु पूजन** सम्पन्न करें।

जिस विशेष साधना को करने की इच्छा मन में प्रबल हो पहले उससे सम्बंधित सारी जानकारी और उस विद्या की दीक्षा ले लेना अनिवार्य होता है, जिससे इस पथ पर कदम भटके नहीं और न कदम-कदम पर अटकाव देखने पड़े। प्रायः साधक बिना उचित दीक्षा या ज्ञान के किसी भी साधना को हाथ में ले लेते हैं जबकि उसका प्रैक्टिकल ज्ञान तो केवल गुरुदेव ही बता सकते हैं, कि इस साधना में किस प्रकार की कठिनाइयां आएंगी और उनका निराकरण किस प्रकार से किया जा सकता है।

जिस प्रकार साधना सामग्री का महत्व बताने की आवश्यकता नहीं उसी प्रकार साधक यह भी जानता है कि प्रथम बार में सफलता न मिलने पर उसी साधना को दूसरी व तीसरी बार भी करना चाहिए, किंतु इस बात को वह भूल जाता है कि एक ही सामग्री पर अधिक से अधिक तीन बार ही प्रयोग किया जा सकता है और उसके बाद उसे जल में प्रवाहित कर ही देना चाहिए तथा नयी सामग्री को प्रयोग में लाना चाहिए।

कई बार विभिन्न कारणों से साधना के मध्य बार-बार विघ्न उपस्थित होते रहते हैं और साधक की निद्रा, काम, क्रोध या चित्त की उद्विग्नता अत्यधिक बढ़ जाती है जिसके लिए निवारक प्रयोग के रूप में **भैरव साधना** सम्पन्न कर लेनी चाहिए और अपनी साधना में बांयी ओर तांबे के पात्र में चावलों की ढेरी पर **भैरव गुटिका** रख भैरव की नियमित रूप से **'ॐ भं भैरवाय नमः'-** बोलते हुए तेल के दीपक, लोबान या धूप तथा गुड़ के द्वारा पूजा करके ही साधना प्रारम्भ करनी चाहिए। यह एक प्रबल भयनाशक प्रयोग भी है।

साधना के बीच में कई बार ऐसी बाधाएं उपस्थित होने लगती हैं जिनका न तो कोई कारण समझ में आता और न यह समझ में आता है कि उनसे कैसे निपटें। इसका कारण एक मात्र यही होता है कि व्यक्ति के पूर्व जन्मकृत दोष आड़े आ जाते हैं। ऐसे सभी दोष सरलता से समाप्त नहीं होते। ये दोष केवल साधना में ही नहीं रोजमर्रा की जिंदगी में भी कड़ुवाहट घोल देते हैं - ऋण का बढ़ते जाना, पत्नी का अस्वस्थ बने रहना, अनायास झगड़े-झंझट में उलझ जाना जैसी स्थितियां पूर्व जन्मकृत दोषों के कारण ही उत्पन्न होती रहती हैं और न केवल साधना का मार्ग सुगम बनाने के लिए, अपितु नित्य का जीवन भी सुखद बनाने के लिए साधक को **पूर्व जन्मकृत दोष निवारण सम्बंधी साधना** सम्पन्न कर ही लेनी चाहिए। **जनवरी १९९४** के अंक में इस प्रकार की एक श्रेष्ठ साधना प्रकाशित की जा चुकी है **जिसे साधक किसी गुरुवार को भी सम्पन्न कर सकता है।**

-नित्य रात्रि में सोते समय अपने दिनभर के कार्यों का विश्लेषण स्वयं करने की आदत डाल लेनी चाहिए और जाने-अनजाने जो भी दोष आदि व्याप्त हो गए हों, किसी के प्रति क्रोध या अपशब्द व्यक्त हुआ हो तो उसके प्रति अपने गुरुदेव से क्षमायाचना कर उसे भविष्य में न करने का संकल्प ले लेना चाहिए। जैन धर्म में इसी को **'विपश्यना'** कहा गया है और अनेक प्रमुख जैन संतों ने केवल इसी पद्धति का आश्रय लेकर अपनी साधना में पूर्णता प्राप्त की।

व्यक्ति जहां निवास करता है, जिस स्थान पर साधना करता है उसका पूरा-पूरा असर उसकी साधना पर पड़ता ही है। घर में दूषित वातावरण, अतृप्त आत्माओं की उपस्थिति साधक को जहां एक ओर साधना में सफलता नहीं प्राप्त करने देतीं, वहीं साधनाओं के प्रति, गुरु के प्रति मन में विरोधी विचार भी उत्पन्न करती रहती हैं। गृह-कलह, आय का घटना आदि भी इसी कारण से होता है, जिसके लिए तांत्रोक्त पद्धति के द्वारा **गृह-दोष बाधा निवारण** प्रयोग सम्पन्न करना प्रत्येक दृष्टि से अनुकूल रहता है।

प्रायः व्यक्ति के जन्म से निर्धारित ग्रह भी उसकी साधना में सफलता अथवा असफलता का कारण बनते हैं और बहुत अधिक प्रयास करने के बाद भी अनुकूल परिणाम नहीं मिल पाते। साधक को इस बात का ज्ञान नहीं होता और वह खिन्न बना रहता है। ऐसे में यदि वह **तांत्रोक्त नवग्रह पूजन**-सम्पन्न करे तब भी अनुकूलता मिलनी प्रारम्भ हो जाती है।

इस दिशा में पत्रिका कार्यालय ने अपने समस्त पाठकों के लाभ के लिए एक विशेष स्तम्भ का प्रारम्भ किया है जिसके अन्तर्गत यदि आप अपने जन्मकुण्डली एवं अपना पता लिखा पोस्टकार्ड भेजते है तो निःशुल्क रूप से हम अपने **ज्योतिष-मण्डल** द्वारा विचार करवा कर आपको स्पष्ट बता सकेंगे कि किस ग्रह विशेष की बाधा के कारण आप साधना में सफलता नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। इस प्रकार आपको बिना किसी अतिरिक्त व्यय या प्रयास के यह सुविधा घर बैठे प्राप्त हो सकेगी। साथ ही आपके

अनुरोध पर आपके लिए अनुकूल साधना का विवरण भी उपलब्ध कराया जा सकेगा।

साधना में जहां सम्बंधित यंत्र-माला की आवश्यकता पड़ती है वहीं **'साधना सिद्धि यंत्र'** एक ऐसा अचूक व फलप्रद यंत्र है, जिसकी स्थापना मात्र भी सफलता देने में सहायक होती है।

विश्व में सर्वश्रेष्ठ साधक तिब्बत के माने गए हैं और उनकी सफलता का रहस्य केवल एक मंत्र में छुपा है जिसका वे निरंतर उठते-बैठते, चलते-फिरते जप करते रहते हैं यह सिद्धिप्रद मंत्र है --''ॐ मणि पद्मे हुं''।

प्रायः साधक को वह ऊर्जा नहीं प्राप्त हो पाती है जो उसे साधना के नियमों का दृढ़ता से पालन करने पर प्राप्त होती है। इसकी पूर्ति के लिए साधक को ऐसे छोटे-छोटे प्रयोगों को भी सम्पन्न करते रहना चाहिए जो कि उसकी भौतिक आवश्यकताओं एवं साधनात्मक दृष्टि से भी उपयोगी हों। **सिद्धाश्रम गुटिका, कल्पवृक्ष गुटिका, सिद्धिप्रद गुटिका** आदि इसी प्रकार के श्रेष्ठतम उपाय हैं।

साधना वास्तव में सम्पूर्णता की ही पर्यायवाची है और एक धीमी तथा सतत् प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के खान-पान, आचरण, आंतरिक शुद्धि, प्रत्येक स्थिति का महत्व होता है **क्योंकि जो कुछ सामान्य रूप से व्यक्ति के भाग्य में नहीं होता, उसे ही प्राप्त करने की क्रिया ही तो 'साधना' है, अतः इसमें अड़चनें एवं बाधाएं आनी स्वाभाविक ही हैं। साधक को अपना धैर्य एवं संयम तथा शालीनता कदापि नहीं छोड़नी चाहिए। यही तो वे गुण हैं जो उसे भीड़ से अलग करते हैं, और अंत में पूज्य गुरुदेव के वचन को उद्धृत करूं तो बाधाएं व अड़चनें उन्हीं के जीवन में आती हैं जो 'पुरुष' होते हैं।** ★

अहोभाव

हमारे पाठक प्रायः अपने पत्रों में पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति अपनी मनोभावनाएं व्यक्त करने के क्रम में कोई लघु कविता या काव्यात्मक विवरण भेजते ही रहते हैं।

उनकी इसी प्रतिभा को हमने एक दिशा देने का प्रयास किया है ***''अहोभाव''*** *के माध्यम से, क्योंकि यह शिष्य या पाठक का अहोभाव ही तो है. . .*
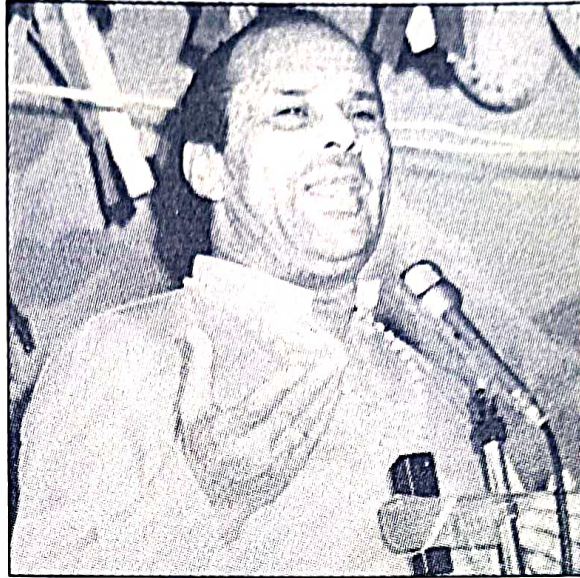
आपको पूज्यपाद गुरुदेव के प्रस्तुत चित्र के आधार पर अपनी भावनाएं काव्य की चार पंक्तियों में भेजनी है और पुरस्कार से भी अधिक आशीर्वाद स्वरूप में **प्रथम** आने पर **एस सीरीज** की छः पुस्तकों का सेट, **द्वितीय** स्तर पर तीन पुस्तकें अथवा **तृतीय** पुरस्कार के रूप में एक पुस्तक का पात्र भी बन जाता है। रचना मौलिक एवं अप्रकाशित तथा अप्रचारित होने का दायित्व आप को प्रविष्टि के साथ एक पन्ने पर घोषित करना होगा।

अपनी प्रविष्टि इस प्रकार प्रेषित करें --

सम्पर्क

अहोभाव (२२), गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,फोन-०११-७१८२२४८

परिणाम

अहोभाव (२१)

माह **जनवरी** के अंक में प्रकाशित **अहोभाव(प्रविष्टि संख्या २१)** के प्रति पाठकों का उत्साह प्रशंसा योग्य रहा अनेक पाठकों ने अपनी मनोभावनाएं अत्यन्त सुन्दर शब्दों में छन्द बद्ध कर हमें प्रेषित की। भावनाओं की दृष्टि से किसी भी पाठक की रचना किसी दूसरे से कम नहीं थी किन्तु शैली, काव्य, कला और शब्दों के उचित चयन के आधार पर जिन्हें सम्पादक मण्डल ने पुरस्कार योग्य घोषित किया उनके नाम हैं —

प्रथम पुरस्कार : श्री रणजीत भोगल, पुणे,
द्वितीय पुरस्कार : श्री अमित मिश्र, लखनऊ
तृतीय पुरस्कार : श्रीमती शुभ्रा बासू, दिल्ली

समस्त विजेताओं के पुरस्कार प्रेषित किए जा रहे हैं।

प्रथम पुरस्कार

नीहारिकाएं निहाल हैं कि निहारते हैं सद्गुरु,
धन्य हो वसुन्धरा जहां दृश्यमान सद्गुरु।
त्रिलोक रूपी त्रिकालमयी ब्रह्म मूरत सद्गुरु,
त्र्यंबकेश्वर प्रत्यक्ष रूप धन्य धन्य सद्गुरु।।

श्री रणजीत भोगल, कैवल्य धाम, लोनावाला, पुणे(महा.)

आप भी मिल सकते हैं, सुन सकते हैं, पूज्यपाद गुरुदेव के मुख से मुखरित अमृत वाणी जो घोल देगी आपके कानों में ऐसा रस कि बस. . . .!

ऑडियो कैसेट

प्रति कैसेट ३०/-

पारद विज्ञान :

विशाल समुद्र है पारद का विज्ञान, किन्तु साधक अपनी आवश्यकता अनुरूप ज्ञान कैसे अर्जित करे। सैकड़ों ग्रंथों को मथ कर सामान्य जन हेतु सरल प्रस्तुतिकरण सर्वथा पहली बार. . .

गुरु मोरो जीवन प्रेम आधार :

अन्य आधार तो खोखले होंगे लेकिन गुरु के प्रेम का आधार ही वास्तविक आधार है। कम से कम भक्त, साधक या शिष्य के जीवन में . . .

सिद्धाश्रम महात्म्य :

योगियों के जीवन का स्वप्न साधकों के जीवन का चिन्तन और तपस्वियों के मनन का केन्द्र इस धरा पर देव भूमि। जिसका कण - कण माथे से लगाने योग्य. . .

प्रेम धार तलवार की :

गुरु से मिलन का और उन में समाहित हो जाने की क्रिया तो बस प्रेम है लेकिन क्या यह इतनी सहज है. . ..

वीडियो

(प्रति कैसेट २००/-)

कुण्डलिनी जागरण की झलक :

षट्दल, अष्टदल, द्विदल और सहस्रदल. . . विलक्षण अनुभूतियां होती हैं कुण्डलिनी जागरण के एक - एक क्रम पर। प्रेम और साधना की अनोखी खुमारी छा जाती है साधक के तन - मन पर।

पिय विन बैरण काली रात

विरह, उच्छवास, पीड़ा और गुरु से वियोग के क्षण बैरी बनकर काली रात में ढल जाते हैं और तब उस पीड़ा को भर देता है यह मार्मिक वीडिया कैसेट। सामने मुस्कुरा उठते हैं पूज्यपाद गुरुदेव अपनी समस्त प्रसन्नता के साथ।

सम्पर्क

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर (राज.)

फोन-०२९१-३२२०९

अथवा

गुरुधाम

३०६, कोहाट एन्क्लेव

पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४

फोन-०११-७१८२२४८

फेक्स -०११-७१८६७००

ज्योति से ही जीवन

वेदों में अंधता को मृत्यु और प्रकाश को ही जीवन कहा गया है और इसमें असत्य भी तो कुछ नहीं क्योंकि . . .

मनुष्य जिन स्थितियों से अपने जीवन में भयभीत रहता है उनमें से अंधता का भय भी एक प्रमुख स्थान रखता है और जिस मनुष्य के पास दृष्टि ही न रह जाए उसमें व मरे हुए व्यक्ति में कोई विशेष अंतर भी नहीं। उसे अपना पूरा जीवन न्यूनाधिक रूप से किसी पर आश्रित होकर काटने की बाध्यता ही सामने आ जाती है, इसलिए मनुष्य ने इसके निराकरण के उपाय बहुत पहले से ही प्राप्त कर लिए थे। वेदों में इस प्रकार के उल्लेख मिलते हैं, प्रार्थना की गई है कि वे (अर्थात् ऋषिगण) अंधे न हों, और इसके लिए भगवान सूर्य की आराधना-उपासना को ही सबसे अधिक प्रामाणिक और श्रेष्ठ उपाय माना गया। ज्योतिष की दृष्टि से नेत्र-ज्योति का कारक ग्रह सूर्य है और जन्मकुंडली में द्वितीय व द्वादश भाव को क्रमशः दांई और बांई आंख का परिचायक माना गया। सूर्य और चंद्र भी नेत्रों के ही स्वरूप हैं लेकिन नेत्र-ज्योति की साधना करते समय केवल सूर्य ग्रह को ही स्थान दिया गया।

यजुर्वेद में सूर्योपासना से सम्बंधित अनेक विधान प्राप्त होते हैं और **कृष्ण यजुर्वेद** के ही अंग चाक्षुषोपनिषद में नेत्रों की ज्योति पुनः प्राप्त करने से सम्बंधित लघु प्रयोग हमने पिछले वर्ष पत्रिका में दिया था। पाठकों ने उसका प्रयोग कर हमें पत्रों द्वारा सफल परिणामों से भी अवगत कराया।

जिस प्रकार से विज्ञान में निरंतर शोध होते रहते हैं उसी प्रकार से ज्ञान, साधना के क्षेत्र में निरंतर नई पद्धतियां खोजी जाती रहती हैं, जिससे साधक को कम समय में ही प्रभावशाली परिणाम प्राप्त हो सकें। **पिछले वर्ष दी गई साधना-विधि के उपरान्त एक अन्य प्रभावशाली साधना-विधि पुनः पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें संतोष हो रहा है।** प्रस्तुत विधि भी **यजुर्वेद** के ही एक अंश से ली गई है। जहां यजुर्वेद में वह केवल एक पाठ के रूप में वर्णित है वहीं **योगी**

निरूपानंद जी ने इसका समन्वय विशेष मंत्रों से कर एक प्रामाणिक साधना विधि प्राप्त की। उनके द्वारा प्राप्त प्रामाणिक मंत्र, **रश्मि माल्य** तथा यजुर्वेद में वर्णित स्तोत्र पाठ-इन तीनों की संयुक्ति से ऐसी ऊर्जा रश्मियां उत्पन्न होती हैं, जो व्यक्ति के अंदर स्थित सूर्य का सम्बंध बाह्य सूर्य से कर देती हैं। **जब यह संतुलन भंग हो जाता है तभी अंधता की स्थिति उत्पन्न होती है।** यह साधना किसी सम्भावित अंधेपन को रोकने की भी एक अत्यन्त प्रभावशाली विधि है। आंखों से सम्बंधित तो अनेक बीमारियां होती हैं और व्यक्ति उनका सावधानी पूर्वक उपचार न करे, तो वे धीरे-धीरे अंधता में बदल जाती हैं। कुछ स्थितियां ऐसी हैं जिनका पूर्ण व स्थायी निदान तो वर्तमान चिकित्सा पद्धतियों के पास भी नहीं है, उदाहरण के लिए आंखों के रोहे। डॉक्टर इसका कारण वायरस इन्फेक्शन बताते हैं और उनके अनुसार इसे पूर्ण रूप से समाप्त नहीं किया जा सकता, किंतु यही रोहे बड़े होकर न केवल पलकों में घाव उत्पन्न कर देते हैं बल्कि आगे चलकर व्यक्ति को अंधा भी बना सकते हैं। ग्लूकोमा, मोतियाबिन्द इत्यादि कई ऐसी ही घातक स्थितियां हैं। दृष्टि की न्यूनता तो आज आम बात हो गई है और आठ से दस वर्ष के बच्चे चश्मा लगाए दिखते हैं।

अपने आंखों का सौन्दर्य अर्थात् अपने जीवन का सौन्दर्य चिरस्थायी रखने के लिए यह साधना विशेष अनुकूल तथा निरापद है।

इस साधना में केवल एक सामग्री अर्थात् **रश्मि माल्य** की आवश्यकता पड़ती है, जिसमें सूर्य की शक्तियों का स्थापन मंत्रों के माध्यम से किया जाता है। विभूति, अमोधा, विद्युता, सर्वत्रोमुखी, भद्रा, दीप्ता, सूक्ष्मा, जया एवं विमला- सूर्य की नौ शक्तियां हैं जिनके **इस रश्मि माल्य में स्थापन से यह वास्तविक रूप से सूर्य का प्रतिनिधित्व करने वाली बन जाती है**, क्योंकि जहां किसी देव की शक्तियों का ही स्थापन नहीं होगा, वहां शक्ति का संचार भी कैसे सम्भव हो पाएगा?

चिकित्सकों की परिभाषा के अनुसार आज देश की लगभग ६० प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी प्रकार से अंधेपन की ओर बढ़ रही है।

विश्व का सबसे भयावह रोग जिसका चिकित्सा की दृष्टि से कोई संतोषजनक उपाय है ही नहीं।

किसी भी रविवार की प्रातः एक ताम्र पात्र में रक्त चंदन से अष्टदल कमल बनाकर उस पर यह माला रखें और कुंकुम, रक्त चंदन, केसर व लाल फूल से उसका पूजन कर निम्न मंत्र द्वारा सूर्य का आह्वान कर संक्षिप्त पूजन करें तथा अर्घ्य के रूप में जल चढ़ाएं--

चित्रं देवाना मुद्गादनीकं
चक्षुर्मित्रयवरुणस्याग्ने।
आप्रा धावापृथिवीऽअन्तरिक्षं
सूर्यआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।

यह कह कर थोड़ा सा कुंकुम अथवा रक्त चंदन माला के सुमेरु पर लगाकर एक लाल पुष्प चढ़ाएं और उसे अपने दोनों नेत्रों से लगाकर अपनी नेत्र-ज्योति के विकसित होने की प्रार्थना करते हुए निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें --

मंत्र -

ॐ ह्रीं घृणि सूर्य आदित्य श्रीं।।

इस मंत्र जप के उपरांत पुनः माला को अपने नेत्रों पर लगाएं एवं गले में धारण कर **कृष्ण यजुर्वेद** में वर्णित निम्न स्तोत्र का एक पाठ करें --

उदत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम्। येना पावक भुरण्यन्तं जनां अनु। त्वं वरुण पश्यसि। तरणिविश्वदर्शितो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमा भासि रोचनम्। सत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्त्तोर्विततं सं जभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादादात्री वासस्तुनते सिमस्मै। तस्मित्रस्य वरुणस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्यौरूपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति।

उपरोक्त स्तोत्र पाठ सम्पन्न कर भगवान सूर्य को पुनः प्रणाम करें। किसी भी रविवार से आरम्भ कर यह साधना निरंतर की जाने वाली साधना है और गम्भीर रोगियों को तो इसे नियमित रूप से सम्पन्न करना ही चाहिए। जहां कोई व्यक्ति साधना करने में असमर्थ हो वहां उसके स्थान पर संकल्प लेकर कोई अन्य परिवार का व्यक्ति या पुरोहित भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। अर्घ्य के रूप में माला पर चढ़ाया गया जल रोगी के दोनों नेत्रों से लगा देना चाहिए तथा दूसरे व्यक्ति द्वारा साधना करने की स्थिति में भी यह विशेष माला रोगी को गले में निरन्तर पहने रहना चाहिए।

तारा-सिद्धि

दरिद्रता और अज्ञान का नाश करने के लिए

तारा, उग्रतारा, एकजटा, अक्षोभ्य धारिणी, नील सरस्वती, पिंगलवर्णा – कितने ही विशेषण हैं तारा के! साक्षात् सूर्य की ही शक्ति, सूर्य शक्ति के ही हिरण्यमय स्वरूप को यदि इस प्रकार विशेषण दिए गए हों तो आश्चर्य भी क्या? परम्परा से भी तो तारा व महाकाली में कोई विशेष भेद नहीं माना गया है। वास्तव में काली के ही एक विशेष घटना में नीलवर्णा होने के कारण उनकी एक संज्ञा तारा हुई। इसी से बंगाल व बिहार में तारा व काली समान रूप से आराध्या रहीं। बिहार के सहरसा जिले के महिषी ग्राम में उग्रतारा का पीठ एवं उसी बंग प्रदेश के ही 'रामपुर हाट' स्टेशन से पांच किलोमीटर की दूरी पर विद्यमान है वह प्रसिद्ध तारा पीठ जो वामखेपा के जीवन से सम्बन्धित रहा, द्वारिका नदी के किनारे अत्यन्त उग्र श्मशान में स्थित।

किन्तु तारा केवल श्मशान वासिनी ही नहीं, तारा अपने मूल स्वरूप में 'तारक' हैं और इसी से उनकी स्थापना प्रतीक रूप में श्मशान में की गई, जीवन की विसंगति को दर्शाती हुई और उसके साथ तारा के महत्व को भी प्रदर्शित करती हुई। तारा महा विद्या की साधना, उपासना प्रत्येक रूप में व्यक्ति के जीवन में ऋद्धि-सिद्धि दायक है। **शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख है कि तारा के सिद्ध साधक के सिरहाने नित्य प्रातः एक तोला सोना मिलता ही रहता है।** भगवती लक्ष्मी की नौ कलाएं– विभूति, नम्रता, कान्ति, तुष्टि, कीर्ति, सिद्धि, पुष्टि, सृष्टि, एवं ऋद्धि की प्राप्ति केवल तारा महाविद्या साधना के द्वारा ही तो सम्भव कही गई है।

मातरत्वत्पदसेवया खलु नृणां
सिद्ध्यन्ति ते ते गुणाः।
कान्तिः कान्तिमनोभवस्य
भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः।।

–– दरिद्रता का अंधकार ही नहीं, अज्ञानता का अंधकार भी तारा से ही समाप्त होता है। जीवन की कान्ति बढ़ती है और क्षुद्र ज्ञाता भी बृहस्पति के समान हो जाता है। यही मोक्ष दात्री भी है और साधकों के जीवन का कल्याण करने वाली भी है।

पहले महर्षि वशिष्ठ ने तारा की साधना वैदिक रीति से की किन्तु सफल न हो सके और क्रोधित होकर उन्होंने पूर्व मंत्र को शापित कर दिया, किन्तु बाद में तांत्रिक पद्धति द्वारा सफलता प्राप्त की और यही तारा साधना की वर्तमान पद्धति है। साधक यदि महर्षि वशिष्ठ के अनुसार ज्ञात किए तांत्रोक्त मंत्र का प्रयोग करता है तभी उसे पूर्ण सफलता मिलती है जिससे वह धन सुख और विद्या सुख दोनों प्राप्त कर सके।

यह मंत्र है –

ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट्।।

तारा साधना में १०८ मनकों की **तारा माला** का ही प्रयोग करना चाहिए जिसके आठ मनके अष्ट सिद्धि मन्त्रों से नौ मनके नौ निधि मंत्रों से और ९१ मनके देव सिद्धि मंत्रों से आपूरित हों तभी साधक को तारा साधना का विशेष धन दायक प्रभाव प्राप्त हो पाता है।

इस माला को निरन्तर धारण करना भी लाभ दायक होता है। ★

तारा महाविद्या का जीवन एवं गृह में स्थापन भी सम्भव है तो केवल **नाथवासर क्रम द्वारा निर्मित तारा महायंत्र** के द्वारा। ऐसे यंत्र को स्थापित करने के बाद विशेष साधना की भी आवश्यकता शेष नहीं रह जाती क्योंकि भूपुरचक्र के द्वारा उसका निर्माण कर विवृत्त के अनुसार अंकन कर षोडशदल का निर्माण करते हुए चतुर्दशार रूप में यंत्र उत्कीर्ण कर अष्टार चक्र में भगवती तारा का स्थापन उनकी ३६० शक्तियों के साथ किया जाता है। **ऐसे विशिष्ट महायंत्र का प्रभाव ठीक उसी प्रकार होता है ज्यों तारा पीठ अपनी समस्त शक्तियों के साथ स्थापित हो गई हो।**

प्रायः पाठक और साधक पत्रों के द्वारा ज्ञात करना चाहते हैं कि वे कौन-सा ऐसा महायंत्र अपने घर या व्यापार स्थल में स्थापित करें, जो प्रत्येक दृष्टि से पूर्णतादायक हो। यही महायंत्र ऐसा उपयुक्त यंत्र है जो वास्तव में तारा पीठ का ही ताम्र पत्र पर अंकन है। **केवल भारत में ही नहीं वरन चीन, लद्दाख, तिब्बत में भी शक्ति के प्रतीक रूप में जिस देवी की आराधना की जाती है, वे तारा ही हैं।** बौद्ध थंका चित्रों में भी जिस रहस्यमय आवृत्त का अंकन होता है वह तारा की प्रमुख ३६० शक्तियों में से ही किसी शक्ति विशेष का अथवा इसी मूल तारा महायंत्र का होता है, क्योंकि यही जीवन के अन्धकार को पूर्णरूप से समाप्त करने की मूल विद्या, महाविद्या जो है।

21 अप्रैल

■ ■ ■

एक बूंद समुद्र से मिलने चली, पर मिलते- मिलते उदास हो गई. . . ''मेरा तो शायद वजूद ही खो जाएगा।''

समुद्र ने हंसकर कहा. . . ''मैं तुम्हारी जैसी अनेक बूंदों से मिलकर ही तो बना हूं!''

■ ■ ■

एक वर्ष बीता, दो वर्ष बीते, तीन वर्ष और चार वर्ष. . . समुद्र के जल से बूंदे उठीं, नदियां बनीं और फिर समुद्र बन गईं। अनवरत यह क्रम चलता ही रहा अथाह प्रवाह उमड़ता ही रहा, लहरों पर लहरें और उनके नर्तन होते ही रहे। भारत का कोई भी कोना हो, हर जगह वर्षा ऋतु के पहले ही वर्षा हो गई — उमंग की, स्वप्नों की और मन व तन पर खिले रंगों की, उत्सव आ गया, उत्सव छा गया। वसन्त का खालीपन ग्रीष्म की झुलसती हवाओं को नहीं लेने दिया। पुरवाई बनकर छा ही गए साधक और साधिकाएं, **क्योंकि यही अप्रैल माह तो पूज्य गुरुदेव के जन्म दिन का माह है – २१ अप्रैल!** बूंदों की रिमझिम फुहार, साधकों की मस्ती और साधिकाओं की खिलखिलाहटों का, वसन्त के मूर्त रूप का, सरस होने का और सरस कर देने का, बेखुदी में खोकर बिखर जाने का –

बेख़ुदी में हम तो एक दर समझ कर झुक गए
अब ख़ुदा मालूम वह काबा था या बुतख़ाना था

होश ही कहां रह गया समझने का , एक लहर थमती तब तक दूसरी लहर जो उमड़ती हुई चली आई, भिगोती और बिखरती हुई. . .

पतझड़ में आखिरी पत्ता भी जब शाख से अलग हुआ तब भी वृक्ष का विश्वास नहीं टूटा, आशा नहीं छूटी, उसे पता था कि उसकी जड़ें जिस पृथ्वी से जुड़ी हैं, जिसकी छाती से उसे रस मिल रहा है, वह फिर कुछ नया घटित कर ही देगा। जीवन की धूप-छांव के बीच, पतझड़ और सूखी हवाओं के बीच भी साधक और साधिकाएं चलते ही रहे, केवल ज्यों - त्यों जीवन पूरा कर देने के लिए ही नहीं, उत्सव की तलाश में, महोत्सव की खोज में, क्योंकि उत्सव ही जीवन का सार जो है।

क्योंकि जीवन ठूंठ बनकर नहीं जीना है, इतना तो एक स्थान पर खड़ा हुआ वृक्ष भी जानता है।

और यह उत्सव केवल गुरुदेव ही दे सकते हैं। स्वप्नों की कोमल गुलाबी और यौवन की हल्की धानी कोंपलें वे ही इस मन में खिला सकते हैं — प्रेम की कोंपलें, आशा की कोंपलें, अंगड़ाइयों की कोंपलें, श्रद्धा और विश्वास के ओस से भीगी—भीगी नम कोंपलें, इस नग्न प्राय हो गए तन और मन को फिर से सजाने के लिए।

पक गया था पिछला जीवन, थक गए थे वे पल, उन्हें पकने के बाद पीला होकर गिरना ही था कि एक नई कोंपल फूटे और वह सूखे दरख्त की उदास टहनियों में हलचल मचा दे, एक कोंपल दूसरी कोंपल को चिमगोईयां कर जगा दे।

एक आशा दूसरी नई आशा को जन्म दे दे और देखते ही देखते सारा मन केवल गुलाबी हो जाए। बस मन ही नहीं आंखें भी। **आंखें गुलाबी न हुई और उनमें सुर्ख डोरे न उतर आए, तो उत्सव ही क्या?** उत्सव का अर्थ ही

है मादकता और शरारत से भरी अंगड़ाइयां, विश्वास न हो तो वृक्ष को देख लें, उत्सव मनाने की कला वृक्ष से सीख लें कि उन नर्म - नर्म पत्तों से फूटी कोई मंद बयार चले और गीत की कड़ी बन फिज़ां में बिखरती ही चली जाए।

और तब देह पर फूटी कोंपलें ही ऐसे गीत गाती हैं—

जिस दिल को तुमने देख लिया दिल बना दिया

एक नये संवत् का आरम्भ है यह, किसी विक्रमी संवत् या शक संवत् की तरह बस एक दिन बीतने पर ही बदल जाने वाला संवत् समझने की भूल नहीं करनी है, बदलेगा यह भी एक ही पल में लेकिन सोंधी गंध के साथ, उछाह और उमंग के साथ, दैन्य - दुःख को अपरिचित बनाने के साथ - साथ, खिलखिलाहटों, नृत्य और संगीत के साथ, यौवन और प्रेम के साथ **क्योंकि यह गुरुदेव का संवत् है,** जीवन की पूर्णता और रसमयता का संवत है, यही अनादि संवत् है और यही नित्य संवत् भी, अंकों से बंधा हुआ नहीं, गणनाओं में जकड़ा नहीं, किसी नाम या पहचान से जुड़ा नहीं, क्योंकि यह नित्य नूतन है।

और फिर नदी ने बूंदों का हिसाब कब रखा, कोयल ने कूकों की गणना कब की और पुष्पों ने सुगन्ध बिखरते समय उसका बही- खाते में हिसाब कब लिखा, उछाल देना बिखेर देना और बिखर जाना, प्रकृति ने बस इतना ही सिखाया और इसी से वह चिरयौवनवती बनी रही क्योंकि एक बीज खोया और हजार दाने बन गए, एक बूंद खोई और पूरा समुद्र बन गया।

पर बूंदें भी ऐसे ही बूंदें नहीं बन जाती —

गुनगुनाती हुई आती है फ़लक से बूंदें
कोई बदली तेरी पाजेब से टकराई है

दीवानगी की बदली और यौवन की छलकती पाजेब जब टकरायेगी तो देखते ही देखते रिमझिम - रिमझिम फुहारों, फुसफुसाहटों, खिलखिलाहटों, कानाफूसियों और इशारों की बरसात शुरु हो ही जाएगी, क्या इससे अधिक मादक कोई उत्सव हो सकता है? क्या इससे ज्यादा कोई रास हो सकता है? क्योंकि यही बिखरने का उत्सव जो है!

गुरुदेव ने भी जीवन में बिखेरा ही बिखेरा है और इसी से चिरनूतन बने रहे, यौवनवान बने रहे, अपने ही रस और गंध से यौवन का संचार करते रहे, मुर्दा पड़ गए, शिष्यों के शरीर और मन को थपकी दे-देकर जगाते रहे, २१ अप्रैल बहाना बना लिया उन्होंने, क्योंकि गुरुदेव के जन्म दिन से भी अधिक शिष्यों को जगाना, बूंदों में जो उछाल खो गया था उसे फिर से त्वरा देना आवश्यक हो गया था। उछलती बूंदों से ही समुद्र का भी श्रृंगार होता है। उछाह मिलन की यात्रा है और मिलन यौवन की कथा बनती है।

यह रुकने का क्षण नहीं है, गीत मिल जाने के बाद उछलते हुए चलना ही जीवन का रस है, बचाकर रखने के भी क्षण नहीं है, कुछ बचाना चाहेंगे तो केवल यही बचा पायेंगे, खोने का हौसला कर लिया तो बहुत कुछ जन्म ले लेगा।

पीले पड़ गए पत्तों का हिसाब क्या रखना, जो डाल से बिछुड़ गया उसका भी शोक क्या करना —

बादे-खिज़ां का शुक्र करो फैज़
नामे जिसके हाथ किसी बहार-ए-शमाईल के आए हैं

(बादे-खिज़ां—पतझड़, बहार-ए-शमाईल—नव यौवन, नामे—संदेश)

यह पतझड़ तो नई कोंपलों के आगमन का सन्देश लाया है, जो बिछड़ा, जो बीता, जो गया, जो नहीं आया, वे उस संवत् की बातें हैं, **इस संवत् में तो गुरुदेव स्वयं ही बुलाने आए हैं,** निमन्त्रण लेकर ही आए हैं, अपने जन्म-दिन को मनाने का निमन्त्रण लेकर ही नहीं! क्या वसन्त अपने स्वागत के लिए भी कभी कुछ कहकर उपस्थित हुआ, वह तो सुगन्ध का एक झोंका बन आया और दिलों पर दस्तक दे गया कि आओ रसमय हो लो, उत्सवमय हो लो, कुछ खिलखिला लो, शरारतें कर लो, और जब तक वह वर्षा न हो तब तक के लिए प्राणों को चैतन्य कर लो।

एक अप्रतिम व्यक्तित्व, एक यौवन और एक 'प्राण' उपस्थित होगा इन्हीं दिनों में, और पुनः ऐसा अवसर तो आ पायेगा आषाढ़ पूर्णिमा पर, अमृत वर्षा करने के लिए उस वर्षा की ऋतु में, यह भी तो ऐसा निमन्त्रण है। जो कोंपलें इस वसन्त में नहीं खिल पाईं वे उस अमृत - वर्षा में भीगेंगी भी कैसे? उस गुरु - पूर्णिमा की अमृत वर्षा का संगीत नन्हीं कोंपले ही अनुभव कर सकेंगी, भीग सकेंगी और रीझ सकेंगी। ठूंठ पर वर्षा का कोई असर नहीं होता, बस खड़-खड़ होती है, **टप्-टप्, टुप्-टुप् के संगीत का सृजन कोंपलों से ही होता है।** एक क्रम है यह, ज्यों इस जीवन का भी तो कोई क्रम होता है। इस जन्म के दिन २१ अप्रैल के वसन्त से लेकर गुरु-पूर्णिमा की वर्षा तक का, तभी तो उत्सव महोत्सव में बदल सकेगा।

उत्सव का महोत्सव में बदलना ही अहोभाव है, स्वयं की उपस्थिति का प्रमाण है, जीवन की अस्मिता है, मुस्कराहट है, सौन्दर्य है और खिलखिलाहट है।

स्वप्न हैं और कसक है, अंगड़ाइयां हैं और इरादे हैं, व्यक्ति है और जीवन है, गुरुत्व है और शिष्यत्व है।

आखिर तुम्हीं बताओ क्यों कर न तुम्हें चाहें

क्योंकि प्रकृति भी एक नहीं कई रंगों में सजी संवरी है।

तभी तो उत्सव है!

अन्तिम सीमा तक ले जाते हुए भी अपने - आप को फना कर देने का हौसला, लुटाने का हौसला, लुट जाने का नशा ही तो हो सकता है किसी उत्सव के मनाने की सही कला और वह भी जब एक शिष्य के गुरु का जन्मदिन हो, उसके प्राण स्वरूप गुरुदेव की इस धरा पर उपस्थिति का अवसर हो, फिर.... बचा कर रखना भी क्या?

जो कुछ था वह सब कुछ ले ही चुकी थी तेरी अदा
एक जान ही बाकी थी वो है एक नज़्रे नज़र आज

जान तक लुटा देने का हौसला रख लेना है, दिल तो लुट ही चुका है तभी तो आप गुरुदेव के पास तक आए हैं, तभी तो आप उत्सव मनाने निकल पड़े हैं। प्रत्येक व्यक्ति उत्सव मनाने नहीं निकल पाता, कुछ खोने और लुटा देने वाले अलमस्त ही उत्सव मनाने निकल पड़ते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन की बंधी लीक रास जो नहीं आती और उदास भी नहीं होना है सब कुछ लुटा देने के बाद भी, यों आना है कि **कितने तारे पलकों पर सजाये हुए,** जगमगाहट ही तो बच जाती है आंखों में सब कुछ खो देने के बाद, क्योंकि जिसने खो दिया उसी ने तो पा लिया। खाली किया और अपने प्रिय को अन्दर तक उतार लिया, पलकों पर नाज से सितारों की तरह सजा लिया, आंखों से गुनगुना लिया, ओठों को सी लिया, एक मस्ती का जाम जो पी लिया!

ठीक एक साल पहले ही तो मिले थे इलाहाबाद में और फिर उसी गंगा - जमुना के मिलन पर मिलन होने जा रहा है।

कुछ वक्त कट गया जो तेरी याद के बगैर
हम पर तमाम उम्र वो लम्हे गरां रहे

(गरां — बोझ)

अब इस मिलन में तो बस उठ कर खो जाने की ही बात होगी क्योंकि इसी दिन की तो प्रतीक्षा थी, इसी के तो गिले-शिकवे थे, बेकरारी और शिकायतें थीं लेकिन —

इक तेरी तमन्ना ने कुछ ऐसा नवाज़ा है
मांगी ही नहीं जाती अब कोई दुआ मुझसे

दुनियां ने इलाहाबाद में आज तक बस दो नदियों का संगम ही जाना , यह संगम तो कुछ अलग ही होना चाहिए। जहां जीवित लहरें आकर मिलेंगी और पीछे बरसों-बरस के लिए इस मिलन के संगीत की लहरियां फिज़ा में छूट जाएंगी। जैसी धुन न तो बजी होगी न फिर कभी बज ही सकेगी क्योंकि इस बार फिर यमुना के पास कृष्ण जीवित जाग्रत रूप में गुरु बन जो उपस्थित हैं।

एक दीवानगी से सराबोर कर लेना है अपने-आप को, क्योंकि यही दीवानगी तो जीवन का राज है, रास है आनन्द का उत्सव है और खुद की पहचान है —

चलो अच्छा हुआ काम आ गई दीवानगी अपनी
वरना हम ज़माने भर को समझाने कहां जाते

उमड़ती हुई बूंदों की तरह, रंगो-बू बिखेरते गुलों की तरह, दीवानगी से झूमते दरख्तों की तरह. . .

बिखरने की अदा ही दीवानगी है, मोहब्बत में डूब जाना ही दीवानगी है किसी को अपना बना लेना भी दीवानगी है, चुपके- चुपके, हौले-हौले एक शुरूआत हो जाने का पर्व भी तो है यह जो गुरुदेव में डूब जाने का राज है —

इश्क सुनते थे जिसे हम वह यही है शायद
ख़ुद -ब-ख़ुद दिल में है इक शख़्स समाया जाता

चाह कर भी नहीं रोक पाएंगे इस घटना को क्योंकि यही तो गुरुदेव का व्यक्तित्व है। बरास्ते आंखों के दिल में उतर कर अपने चाहने वालों को बेख़ुद कर देने की कला जिनकी तिरछी मुस्कान में छिपी है, लेकिन आपको आना तो पड़ेगा ही न! मिलने का वायदा तो करना ही पड़ेगा न! क्योंकि अब जुदाई की बातें सीमा तोड़ने को तैयार हो गई हैं। बस वायदा ही नहीं, मिलने का करार भी, क्योंकि यह मिलन अब जिन्दगी की जरूरत बन चुकी है, रगे-जाँ की कसक बन चुकी है और सांस लेने की तरह ही एक हकीकत बन चुकी है —

वो फिर वादा मिलने का करते हैं
यानी कुछ दिन हमको जीना पड़ेगा

फिर से मिलने के लिए, खो जाने के लिए और खोए-खोए ही इस जिन्दगी के सफर को पूरा करने के लिए ही तो यह पर्व मनाया जा रहा है।

आना और दौड़ते हुए आना, लेकिन हर मोड़ पर थोड़ा आहिस्ता होकर ठहर भी जाना, पता नहीं अगले किस मोड़ पर ही गुरुदेव अपने विशाल वक्ष-स्थल, फैली हुई बाहें और मंद मुस्कान के साथ मिल जाएं, अपने आप में खो जाने के निमंत्रण के साथ!

बूंद खोई कहां? बूंद तो समुद्र बन गई, उसकी एक नई पहचान हो गई, एक नया जीवन हो गया, एक नया जन्म ही हो गया, एक नया उत्सव आरम्भ हो गया, मस्ती और बेफ़िक्री हो गई और . . .

यही तो उत्सव है!

यंत्रों में छिपा है सुखी जीवन का रहस्य

●●●

तंत्र साधना में प्रयुक्त विशिष्ट ज्यामितीय चित्रों को ही यंत्र की संज्ञा दी गई है जिन पर ध्यान केन्द्रित कर मानव शरीर में सुषुप्त अनन्त ज्ञान, शक्ति व आनन्द को न केवल जाग्रत किया जा सकता है वरन् उनका विकास कर ब्रह्माण्ड की अपरिमित शक्तियों का स्वामी भी बना जा सकता है।

परन्तु यंत्र साधना का यह एक मात्र प्रयोजन नहीं, यंत्र तो मानव जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श करता है, दैनिक जीवन की किसी भी समस्या के निराकरण के लिए यंत्र का आश्रय लिया जा सकता है।

●●●

तंत्र की अवधारणा भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही रही है। वैदिक काल से अर्वाचीन काल तक इसकी उपयोगिता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। साधना क्षेत्र में जहां अमृतत्व प्राप्ति हेतु 'प्राण-विद्या' का विधान है। वहीं लौकिक समस्याओं के निराकरण हेतु तंत्र-साहित्य में अनेक प्रयोग वर्णित हैं।

तंत्र-साधना के प्रयोग कुछ विशिष्ट यंत्रों पर ही सम्पादित किए जाते हैं। यंत्र वस्तुतः विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों से निर्मित साधन हैं जो निर्दिष्ट देवता का प्रतिनिधित्व करते हैं। **किसी भी धातु पर उत्कीर्ण इन यंत्रों पर विशिष्ट अक्षर एवं अंक बने होते हैं। यंत्र में अंकित किया गया अंक उस क्रिया का मूल्य है जो सम्पादित की जाने वाली है, और अक्षर वह सम्भाव्य शक्ति, जिससे यह ज्ञात किया जाता है कि वह क्रिया कैसे सम्पन्न होगी।** सभी यंत्र कुछ सिद्ध अक्षरों की सहायता से दिव्य शक्ति से आबद्ध होते हैं, मानव के शरीर एवं मन पर निश्चित प्रभाव डालते हैं।
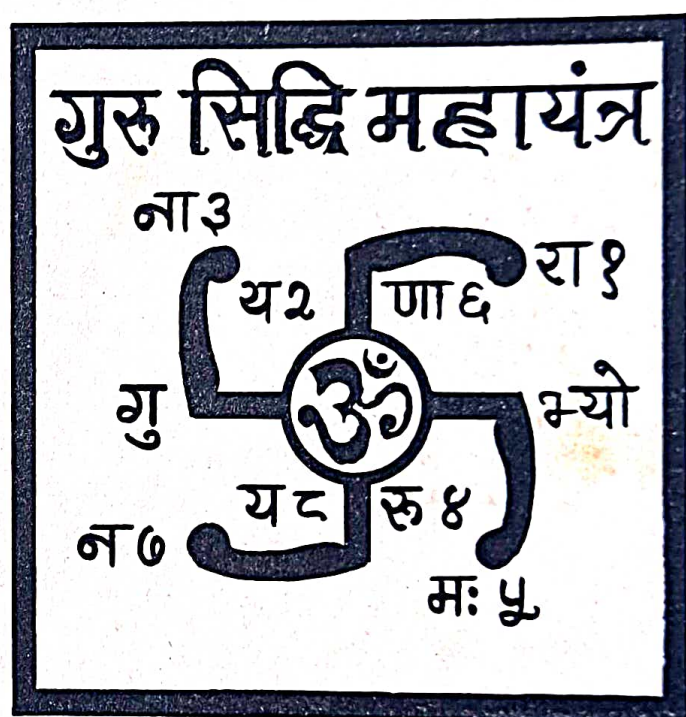
भारतीय साधना ग्रंथों में यंत्रों से सम्बन्धित प्रचुर सामग्री उपलब्ध है परन्तु अधिकांशतः हस्तलिखित अवस्था में हैं, और इनकी क्रिया-पद्धति का ज्ञान बहुत कम योगियों को है, जो कभी-कभी तरंग में आने पर अपने शिष्यों या भक्तों को एकाध रहस्य बता देते हैं।

आगे की पंक्तियों में कुछ ऐसे ही यंत्र एवं सम्बन्धित प्रयोग उजागर किए गए हैं, जो देखने पर सामान्य एवं लघु प्रतीत होते हैं, परन्तु जिनका प्रभाव अत्यन्त महत्वपूर्ण और अचूक होता है।

१. तनाव मुक्ति के लिए -

तनाव मुक्ति के लिए **बीसा यंत्र** सर्वोत्तम कहा गया है। कहते हैं यह यंत्र जिसके पास होता है उसके कार्यों का कभी भी क्षय नहीं होता- यदि इसको तिजोरी में रख दिया जाए तो धन का क्षय नहीं होता, अन्न-भण्डार में स्थापित कर दें तो अन्न का भण्डार कभी रिक्त नहीं होता और यदि आप बेहद तनाव की अवस्था में हों तब यदि ताम्र पत्र पर अंकित बीसा यंत्र को अपने सामने स्थापित कर लें और उस पर कुछ क्षण त्राटक करने के बाद नेत्र बंद कर मानसिक रूप से **'ॐ'** का जप करते रहें, तो इसका प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकते हैं।

जिन व्यक्तियों को रह-रहकर सिर भारी हो जाने या थोड़े से ही तनाव में उलझ जाने की समस्या रहती हो उन्हें **बीसा यंत्र अंकित मुद्रिका** तो धारण कर ही लेनी चाहिए।

२. बिक्री वर्धक यंत्र -

दीपावली की रात्रि में अथवा होली की रात्रि में एक विशेष विधि से अष्टगंध द्वारा भोज पत्र पर अंकित किया जाने वाला यह यंत्र यदि ग्रहण काल में तांत्रोक्त विधि से ताम्र पत्र पर अंकित एवं चैतन्य कर दुकान में ऐसे स्थान पर रख दिया जाए ज़हां प्रत्येक ग्राहक की नजर पड़ सके, तो वह निश्चित रूप से व्यापार में अद्भुत वृद्धि देता ही है।

३. गर्भ रक्षा यंत्र -

रविवार के मूल नक्षत्र में विशेष विधि से चैतन्य किया गया यह यंत्र यदि ताबीज के माध्यम से काल भैरव मंत्रों से बद्ध कर गर्भवती स्त्री की कमर में धारण करा दें तो वह हर प्रकार से गर्भ की रक्षा करने में समर्थ होता है। जहां किसी स्त्री के साथ बार-बार गर्भपात की स्थिति बन जाती हो या अपरिपक्व शिशु के जन्म की आशंका हो अथवा गर्भ ठहर जाने के बाद भी **किसी प्रकार के तंत्र प्रयोग अथवा मूठ का भय हो,** तब भी यही यंत्र रक्षाकारक सिद्ध होता है।

४. रोग हरण यंत्र -

रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा होली, दीपावली या ग्रहण काल में किसी तीर्थ स्थान के तट पर विशिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए इस यंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न की जाती है, जिससे धारण करने वाले व्यक्ति को चैतन्यता और स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त होता है।

५. नेत्र रोग निवारण यंत्र -

यदि रवि पुष्य नक्षत्र में **नेत्र-रोग निवारण यंत्र** को कांसे की थाली में रख चारों कोनों में घी के चार दीपक जला दें और लाल फूलों कुंकुम से पूजन कर और **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें – **''ॐ ह्रीं मम चक्षु रोगान क्षमय क्षमय स्वाहा''** तो लाभ मिलता है अन्यथा साधक यदि चाहे तो इसी प्रकार का यंत्र भोज पत्र पर भी उत्कीर्ण कर ताम्र यंत्र के नीचे रख, कभी भी उपरोक्त सम्पूर्ण पूजन करने के बाद उसे तावीज में भरकर पहन सकता है, जिससे इस विशेष यंत्र की चैतन्यता निरन्तर मिलती रहे।

६. सर्वकार्य सिद्धि यंत्र -

जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयों ने आकर घेर लिया हो और कोई मार्ग न सूझ रहा हो तब **सर्वकार्य सिद्धि यंत्र** लाभप्रद रहता है। केवल होली की रात्रि में चैतन्य किया गया यह यंत्र तीव्र निवारक शक्तियों से युक्त होता है, जिससे साधक का समस्त अनिष्ट कटता रहता है।

७. भागे व्यक्ति को लौटाने का यंत्र -

जब कोई बच्चा खो गया हो या किसी के द्वारा बहका कर ले जाया गया हो तब इस यंत्र का प्रयोग अचूक देखा गया है। **ताम्र पत्र पर अंकित** इस यंत्र पर आक के रस से भागने वाले अथवा गुम हो जाने वाले व्यक्ति का नाम अंकित कर यदि दक्षिण दिशा में जाकर कहीं सुनसान स्थान पर फेंक दिया जाए तो भागे हुए व्यक्ति का या तो समाचार मिल जाता है अन्यथा अधिकांश स्थितियों में तो वह खुद ही किसी न किसी प्रकार लौट आता है।

८. दुःस्वप्न हरण यंत्र -

दूषित आत्माओं की उपस्थिति से या पूर्वजन्म के किन्हीं कारणों से व्यक्ति को बहुधा रात्रि में दुःस्वप्न आते हैं। कोई अपने को प्रताड़ित होते देखता है तो कोई अपने को डूब कर मरते हुए, जिससे उसका अगला दिन तनाव और मानसिक चिंता में ही बीत जाता है। **यंत्र-विज्ञान** में ऐसी समस्या का निदान भी बताया गया है। **दुःस्वप्न हरण यंत्र** यदि **जैवेह ताबीज** में पहना जाए तो व्यक्ति को उस बाधा से मुक्ति मिलती है तथा उसके ऊपर कोई अनिष्ट मंडरा रहा होता है तो उसका भी समापन हो जाता है। **स्वप्न प्रायः भविष्य सूचक भी होते हैं अतः इनकी यों ही उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।**

श्री सुन्दरी साधन तत्पराणां
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव

नवरात्रि पूजन

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना क्रम के अनुसार भोग व मोक्ष देने में समर्थ

❀ ❀ ❀

त्वदन्यः पाणिभ्यासभयवरदो दैवतगण
स्त्वमेकानैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया
भयात् त्रातु दातुं फलमपि च वांछासमधिकं
शरण्ये लोकानां तवहि चरणावेव निपुणौ।।

"मां! तुम्हारे अतिरिक्त सभी देवगण अपने हाथों से वर एवं अभय प्रदान करने वाले हैं। केवल तुम ही तो एक ऐसी हो जिसे वर तथा अभय प्रदान करते समय उसे हस्तों से प्रगट करने की आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि जहां अन्य देवतागण अपने भक्तों को उसका अभीष्ट हाथों से देते हैं, भक्तों का भय से रक्षण करने वाली मां! तुम उन्हें वही अपने चरणों से दे देती हो।"

त्रैलोक्य पाविनी मां भगवती जगदम्बा का मातृ स्वरूप भी अपने अन्दर शक्ति की कैसी चैतन्यता समाहित किए है, इसे इस सामान्य बुद्धि और इन सामान्य चर्म चक्षुओं से जाना भी कैसे जा सकता है? मां भगवती जगदम्बा के भीतर कैसा वरदायक रूप और प्रभाव छुपा है और कैसा ममतामय अनुग्रह, इसका सहज अनुमान लगाना कठिन ही है।

पग-पग पर जीवन में सहायक बनती भगवती जगदम्बा को पहिचानने के लिए ही पूरे वर्ष में नवरात्रि के पर्व रचे गए, साधनाओं को सम्पन्न कर उनकी कृपा का प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने का मुहूर्त प्राप्त किया गया। चैत्र नवरात्रि एवं आश्विन नवरात्रि, इन दो प्रगट नवरात्रियों के अतिरिक्त दो गुप्त नवरात्रियां भी होती हैं किन्तु सभी नवरात्रियों में चैत्र नवरात्रि की महत्ता सर्वोपरि है, यह देवी के प्रकट होने का उत्सव जो है।

इस चराचर जगत के मूल में मां भगवती जगदम्बा की ही शक्ति सर्वत्र क्रियाशील है। वे ही आनन्दरूपा हैं, वे ही पालनकर्ता हैं और वे ही अपने भक्तों का उद्धार करने में समर्थ हैं। केवल इस धरा के भक्तों का ही नहीं वरन् रुद्र, वसु, मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि, अश्विनी कुमारों, विष्णु, ब्रह्मा और प्रजापति का भी पोषण करने वाली आद्या शक्ति मां भगवती जगदम्बा ही हैं। कहीं महाकाली के रौद्र रूप में अशुभ का विनाश कर सहायक होती हुई, कहीं महालक्ष्मी के विविध आभूषणों से युक्त श्रृंगारमय स्वरूप में ऐश्वर्य देती हुई और कहीं महासरस्वती के पावन स्वरूप में जीव को आध्यात्मिक उच्चता की ओर ले जाती हुई, पल-पल गतिशील रहती हुई, पल-पल मुखरित और चैतन्य रूपा बन कर। जिस प्रकार यह प्रकृति प्रतिपल नूतन होती हुई सौन्दर्यमयी है, पालन करने में समर्थ है। तभी तो प्रकृति को भी स्त्री रूपा ही माना गया।

चैत्र नवरात्रि मां भगवती की विशेष उल्लास का पर्व है क्योंकि यह महाशिवरात्रि के ठीक बाद पड़ने वाला

महापर्व है, शिवमयता से युक्त पर्व है। नवरात्रि का तात्पर्य ही है कि साधक या भक्त के जीवन में नवरसों का संचार हो सके, विविधता आ सके और वह भी प्रतिपल नूतन हो सके, जो शिवमयता का सही अर्थ है। साधक का भी जीवन भगवान शिव के समान ही निर्द्वन्द्व एवं वैभवशाली बन सके।

इस वर्ष की चैत्र नवरात्रि का महत्व इस बात से और भी अधिक बढ़ गया है कि यह पूरे नौ दिवसों की पूर्ण नवरात्रि घटित हो रही है, जिसमें तिथियों का क्षय नहीं है, अतः साधक के लिए तो एक ऐसा अवसर उपस्थित हो रहा है, जबकि इस चैतन्य काल का प्रत्येक क्षण उपयोग में लाते हुए वह प्रत्येक दिवस को एक नए ढंग से साधना के साथ जोड़ते हुए न केवल अपने भौतिक जीवन को वरन् शक्ति प्राप्ति के द्वारा आध्यात्मिक जीवन को भी ऊंचाइयों तक ले जा सकता है।

यह एक मिथ्यां धारणा है कि आध्यात्मिक सफलता की प्राप्ति के लिए गतिशील साधक को जीवन में शक्ति साधना की आवश्यकता नहीं पड़ती और वहीं दूसरी ओर गृहस्थ साधक शक्ति प्राप्ति को केवल साधु, सन्यासियों के जीवन की ही विषय वस्तु मानता है। इस विरोधाभास का सही हल यही है, कि प्रत्येक साधक अपने जीवन में शक्ति-साधना को एक महत्वपूर्ण स्थान दे तथा स्वयं अनुभव कर सके कि किस प्रकार शक्तिमयता के द्वारा ही जीवन के समस्त सुख-वैभव और भोग-विलास प्राप्त किए जा सकते हैं।

जहां भौतिक जीवन एवं आध्यात्मिक जीवन, दोनों को ही सन्तुलन में रखते हुए जीवन को सफल बनाने की बात आती है, वहां स्वयमेव त्रिपुर सुन्दरी साधना का महत्व निर्विवाद रूप से सर्वोच्च सिद्ध है ही–

यत्रास्ति भोगो नहि तत्र मोक्षो
यत्रास्ति मोक्षो नहि तत्र भोगः।
श्री सुन्दरी साधन तत्पराणां
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।

अर्थात् भोग प्राप्ति के इच्छुक को आध्यात्मिक उपलब्धि कहां और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के इच्छुक साधक के लिए भोग कहां, किन्तु **श्री सुन्दरी साधना** के साधक हेतु भोग व मोक्ष दोनों ही सुलभ हैं।

सृष्टि के प्रारम्भ में अद्वैत रूप से परम ज्योति ही अस्तित्व में थी और यही ज्योति दो रूपों में परिणित होकर शिव-शक्ति बनी। जगत की रचना का आधार अव्योवहत जिस रूप में बना वही **श्री यंत्र** है। श्री यंत्र का अर्थ लक्ष्मी प्रदायक यंत्र तक ही सीमित करना उचित नहीं। **श्री यंत्र अपने आप में सम्पूर्ण विश्व-व्यवस्था का प्रतीक है।** साधक का स्वयं का शरीर एवं नवयोन्यात्मक श्री चक्र वास्तव में एक ही है, जिसके तादात्म्य से इस लोक एवं आध्यात्मिक जगत की सफलता प्राप्त होती है।

षट्कोणों से युक्त एवं नौ आवरणों वाला श्री यंत्र (अथवा श्री चक्र) ही मां भगवती जगदम्बा की उपस्थिति का भी प्रतीक है, उनकी अनन्त शक्तियों का एक सीमित रूप में अंकन करने का प्रयास है। तभी तो ऐसे यंत्र के दर्शन एवं उसके पादोदक पान को भी पुण्य कहा गया है– "तीर्थ स्थान सहस्त्र कोटि फलदम् श्री चक्र पादोदकम्'। नौ आवरणों से युक्त श्री यंत्र की स्थापना और साधना ही नवरात्रि पूजन की, पराम्बा की कृपा प्राप्त करने की प्राचीन व शास्त्रीय परम्परा रही है, जिसे **"श्री विद्या साधना"** की संज्ञा से विभूषित किया गया।

यद्यपि 'श्री विद्या-साधना' गूढ़ और जटिल है, मूलतः ब्रह्म साक्षात्कार की विद्या है, किन्तु इसके सुलभ रूपों में एक सामान्य गृहस्थ व्यक्ति भी साधना करते हुए न केवल अपनी दैनिक समस्याओं से मुक्त होकर भौतिक जीवन सुव्यवस्थित कर लेता है वरन् और आगे बढ़कर उन आध्यात्मिक लाभों को प्राप्त करने का पात्र भी बन सकता है, जिन्हें विशिष्ट योगी ही प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। शक्ति साधना का यही तो तात्पर्य है कि जो कुछ भी सामान्य प्रयासों से न प्राप्त कर पा रहे हों, उन्हें पराम्बा शक्ति के स्पर्श से प्राप्त कर लें। इसी से नवरात्रि का साधक के जीवन में सर्वाधिक महत्व है।

"श्री विद्या साधना' विशिष्ट रूप में **त्रिपुर सुन्दरी** की ही साधना है, इन्हीं की संज्ञा षोडशी एवं ललिता भी है। ये ही शक्ति हैं, ये ही विश्व मोहिनी हैं, ये ही श्री महाविद्या हैं और ऐसा जानने वाला समस्त शोक से पार हो जाता है–

**"एषाऽऽत्मशक्ति । एषा विश्वमोहिनी।
एषा श्री महाविद्या।
य एवं वेद स शोकं तरति।।"**

वास्तव में ये सभी मां भगवती जगदम्बा के ही रूप हैं किन्तु जीवन की विभिन्न स्थितियों के साथ-साथ उनका स्वरूप भी बदलता रहता है। देवी के किसी विशिष्ट रूप की साधना करने पर तदनुकूल ढंग से लाभ भी विशिष्ट ही मिलता है। **जहां मां भगवती जगदम्बा की साधना मूलतः भावना-प्रधान है वहीं षोडशी त्रिपुर सन्दुरी एवं ललिताम्बा की साधना प्रबल तांत्रोक्त है।** इस वर्ष देवी के इन तीव्रतम

किन्तु अभीष्ट वरदायक स्वरूपों की साधना करके जीवन को नय आयाम और गति देना आवश्यक हो गया है, क्योंकि जिस प्रकार से सामाजिक और राष्ट्रीय परिवेश की परिस्थितियां बदल रही हैं उसमें व्यक्ति को एकदम से चैतन्य होना होगा। आने वाले वर्ष तीव्र उथल-पुथल के सिद्ध होंगे और उनसे सामन्जस्य स्थापित करने हेतु व्यक्ति को अभी से प्रयास प्रारम्भ कर देने होंगे।

यह वर्ष सौभाग्य से पूज्यपाद गुरुदेव की हीरक जयन्ती का भी वर्ष है और उन्होंने वर्ष के प्रारम्भ में सभी शिष्यों, पाठकों एवं साधकों को अपने आशीर्वचन से वर व अभय प्रदान कर दिया है कि वे इस पूरे वर्ष अपने प्रत्येक साधक के साथ, उसकी साधनाओं में सूक्ष्म रूप से गतिशील होते हुए निश्चित रूप से सफलता एवं सिद्धि दिलाएंगे ही। 'श्री विद्या साधना' का आधार भी केवल गुरुदेव को कहा गया है।

संकेतकस्तस्या नानाकारो व्यवस्थितः।
नानामंत्रक्रमेणैव पारम्पर्येण लभ्यते।।

अर्थात् त्रिपुर सुन्दरी के मंत्र का रहस्य केवल परम्परा द्वारा ही ज्ञात किया जा सकता है और यहां परम्परा का अर्थ है **गुरु-परम्परा।**

श्री चक्र साधना

पूज्यपाद गुरुदेव ने ही सर्वप्रथम इस तथ्य को स्पष्ट किया कि श्री चक्र साधना का जहां एक ओर विशद गूढ़ार्थ है, वहीं इसके सामान्य जीवन में भी ऐसे प्रयोग हैं, साधनाएं है, जिनके द्वारा साधक भोग व मोक्ष दोनों ही प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार से इस विद्या का आध्यात्मिक अर्थ गूढ़ रखा गया, उसी प्रकार इसके भौतिक जीवन से सम्बन्धित प्रयोग भी गोपनीय रखे गए। **बौद्ध मठों की सम्पत्ति और साधना जगत में उनकी विलक्षण प्रगति का रहस्य भी यही श्री चक्र साधना है जिसके द्वारा उन्हें कभी भी किसी के समक्ष याचक बनने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।**

इस साधना में, इस साधना से सम्बन्धित श्री चक्र के नौ आवरणों में ही इसके रहस्य निहित हैं। **श्री विद्या, अर्थात् षोडशी के नौ आवरण-ललिता त्रिपुर सुन्दरी, त्रिपुराम्बा, त्रिपुरासिद्धा, त्रिपुरमालिनी, त्रिपुराश्री, त्रिपुरवासिनी, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरेशी, एवं त्रिपुरा हैं।** जो उन्हीं पराम्बा की नौ विशिष्ट शक्तियों के नाम हैं। ये शक्तियां मनुष्य की नवरन्ध्रात्मक काया से पूर्ण तादात्म्य रखती हैं। जब साधक इन्हीं नौ स्वरूपों का तादात्म्य अपनी देह से कर लेता है, या दूसरे शब्दों में कहा जाए कि उन्हें इन विविध रूपों के साथ समाहित कर लेता है तभी उसे जीवन की पूर्णता मिल सकती है।

इन नौ स्वरूपों में ही जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति का मंत्र भी निहित है। यदि विचार-पूर्वक देखा जाए तो मानव जीवन में भी नौ स्थितियां ही महत्वपूर्ण हैं। सर्व प्रकारेण तनावमुक्त जीवन, प्रत्येक मनोकामना की पूर्ति, जीवन में रोग-शोक का अभाव, शत्रु बाधा से मुक्ति, राज्य पक्ष से अनुकूलता एवं सम्मान, जीवन में पूर्ण भाग्योदय, प्रत्येक अनिष्ट का समापन, पूर्ण गृहस्थ सुख एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व– भौतिक रूप से मानव-जीवन में इतना ही आवश्यक होता है।

आध्यात्मिक पक्ष तो इसके बाद ही आरम्भ होते हैं और आध्यात्मिक जीवन में भी इसी प्रकार नौ इच्छाएं ही प्रमुख होती हैं।

षोडषी त्रिपुर सुन्दरी इन दोनों ही स्थितियों का समावेश अपने अन्दर किए हैं। वे **'श्री'** भी हैं और **'विद्या'** भी अर्थात् **'ऐश्वर्य-युक्त'** भी हैं और **''ज्ञानयुक्त''** भी, अतः इस चैत्र नवरात्रि में इन्हीं की साधना करना प्रत्येक दृष्टि से सौभाग्यदायक है।

इस वर्ष नव रात्रि का प्रारम्भ **दिनांक ११.०४.६४** को हो रहा है। यह प्रस्तुत साधना क्रम नौ दिवसीय साधना क्रम है जो अपने-आप में एक सम्पूर्ण क्रम भी है और पृथक भी, अर्थात् साधक चाहे तो सम्पूर्ण क्रम को, सभी नौ प्रयोगों को भी अपना कर उन्हें सम्पन्न कर सकता है और रुचि के अनुकूल अथवा जीवन की समस्या से सम्बन्धित किसी एक दिवस विशेष की साधना का भी चुनाव कर सकता है।

यह पूजन मूलतः ललिता त्रिपुर सुन्दरी का ही पूजन है और प्रथम दिन इन्हीं का विशेष पूजन करना है, साथ ही आने वाले अन्य आठ दिनों में भी प्रारम्भिक पूजन इन्हीं का कर फिर उस दिवस विशेष का प्रयोग सम्पन्न करना होगा, जिससे साधक को प्रत्येक दिवस का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके।

ललिताम्बा साधना हमने पत्रिका के पिछले अंक में प्रकाशित की थी। जिन साधकों ने यह साधना सम्पन्न की है उन्होंने स्वयं अनुभव किया है कि किस प्रकार से ललिता साधना जीवन की एक सर्वश्रेष्ठ साधना है। इस नवरात्रि में ललिता की शक्तियों से युक्त षोडषी त्रिपुर सुन्दरी की साधना करनी है।

साधना विधि

दिनांक ११.०४.९४ से आरम्भ होने वाली इस साधना का आधार केवल गुरु चरण है और उसके प्रतीक रूप में **चांदी की चरण पादुका** अथवा **लघु चरण पादुका यंत्र** स्थापित कर पूजन किया जाता है। भगवती षोडशी की उपस्थिति **श्री चक्र** के माध्यम से प्रकट की जाती है, जो कामेश्वर व कामेश्वरी मंत्रों से प्राण-प्रतिष्ठित तथा पंच लक्ष्मी, पंच कोशाम्बा, पंच कल्पलता, एवं पंचरत्नाम्बा के पूजन से युक्त हो। ऐसे यंत्र का चैतन्यीकरण दक्षिणामूर्ति मत द्वारा होना आवश्यक है। इन दो प्रमुख यंत्रों के अतिरिक्त प्रत्येक प्रयोग में अन्य साधना सामग्री की आवश्यकता प्रयोग की प्रकृति के अनुरूप होगी।

नवरात्रि के प्रथम दिन सूर्योदय से कुछ पूर्व उठकर स्नान आदि से स्वच्छ होकर अपने पूजन कक्ष में बैठ जाएं तथा शुद्ध वस्त्र धारण कर पूरब की ओर मुंह कर अपने-सामने नाभि पर्यन्त ऊंची चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर उसके मध्य में एक ताम्र पात्र में चरण पादुका अथवा पादुका यंत्र की स्थापना करें। सामने पांच चावलों की ढेरी बनाकर प्रत्येक पर एक गोल सुपारी रखें। इन ढेरियों के दाहिनी ओर एक अन्य ताम्र पात्र में श्री चक्र का स्थापन पुष्प की पंखुड़ियों पर करें। वाम भाग में तेल का दीपक तथा दाहिनी ओर घी का दीपक स्थापित करें। पूजन की अन्य सामग्रियों में लाल पुष्प, श्वेत पुष्प, कुंकुम, अक्षत, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, केसर, कपूर, एवं नैवेद्य आदि आवश्यक है। लाल रंग के ऊनी आसन पर बैठकर दीपक व अगरबत्ती प्रज्ज्वलित कर प्रथमतः आत्म शुद्धि करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यान्तर शुचिः।।

तदुपरांत आचमन करें–

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा,
ॐ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा,
ॐ गुरुतत्वं शोधयामि स्वाहा।

एक गोल सुपारी में मौली बांधकर उसमें गणपति की भावना करते हुए संक्षिप्त गणपति पूजन करें, चन्दन व अक्षत समर्पित करें–

शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।

आत्मरक्षार्थ भैरव प्रार्थना करें–

ह्रीं अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यंमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

प्रारम्भिक पूजन क्रम के बाद संक्षिप्त रूप से गुरु पादुका पूजन करें। पादुकाओं को जल, गंगाजल व दूध से स्नान कराकर व पोंछकर केसर व श्वेत चन्दन से तिलक करें तथा श्वेत पुष्प चढ़ाते हुए निम्न प्रकार से गुरु चिन्तन करें–

आनन्दमान्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं, श्रीमद्गुरुं नित्यमहंभजामि।।

पादुका के समक्ष स्थापित पांचों ढेरियों का पूजन केवल श्वेत चन्दन व केसर की पंखुड़ियों से तिलक करते हुए करें–

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः,
ॐ पं परम गुरुभ्यो नमः,
ॐ पं परात्पर गुरुभ्यो नमः,
ॐ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः,
ॐ पं परापर गुरुभ्यो नमः।

सम्पूर्ण गुरु-परम्परा का आवाहन, पूजन करने के पश्चात् पूज्य गुरुदेव के चित्र के सामने प्रणाम कर इस महत्वपूर्ण व दुर्लभ साधना में प्रवृत्त होने के लिए मन ही मन आज्ञा व आशीर्वाद प्राप्त करें, जिस साधना की प्राप्ति इन पन्नों के माध्यम से शिष्यों व पाठकों को सम्भव हो सकी–

ह्रीं श्री गुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां देहि भगवन् त्रिपुर सुन्दर्यै अर्चनाय मे।।

मानसिक आज्ञा प्राप्त करने के उपरान्त दाहिनी ओर स्थापित श्री चक्र से अपने सम्बन्ध स्थापित करें जिससे वह न केवल आपसे वरन् आपकी वंशपरम्परा से भी जुड़ सके और समस्त इष्ट सम्बन्धियों का कल्याण करता हुआ आगामी पीढ़ी तक के लिए वरदायक बने।

प्राण-प्रतिष्ठा :

दाहिना हाथ यंत्र पर रखते हुए तथा वामहस्त अपने हृदय पर रखते हुए निम्न मंत्रोच्चार करें–

ह्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः श्री त्रिपुर सुन्दरी यन्त्रस्य प्राणा इह प्राणा।

ह्रीं आं ह्रीं क्रों श्री त्रिपुर सुन्दरी यंत्रस्य जीव इह स्थितः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राणा इहैवागत्य अस्मिन् यंत्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

यह प्राण-प्रतिष्ठा केवल एक बार ही आवश्यक है। यंत्र का पूजन लाल पुष्प, धूप, दीप, कुंकुम एवं रक्त चन्दन से करके मूल मंत्र की एक माला का जप करें। यह मंत्र जप केवल **कामकला माला** से ही किया जाना चाहिए।

मंत्र –

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ त्रिपुर सुन्दर्यै सर्व शक्ति समन्वित सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।।

यह इस साधना का मूल मंत्र है। यदि साधक पूरी नवरात्रि में नित्य उपरोक्त क्रम का पालन करे तो अधिक उचित माना गया है। अन्यथा प्रतिदिन का विशेष प्रयोग प्रारम्भ करने के पूर्व संक्षिप्त पादुका पूजन, मानसिक गुरु-आज्ञा की प्राप्ति तथा उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप तो अवश्य ही करें।

नवरात्रि के प्रत्येक दिवस को इस दुर्लभ साधना क्रम में जिस प्रकार से वर्णित किया गया है, वह इस प्रकार है।

प्रथम दिवस

सम्पूर्ण जीवन को निष्कंटक बनाने के लिए

इस षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना क्रम में प्रथम दिवस में **सर्वानन्दमयी ललिता महात्रिपुर सुन्दरी** की साधना सम्पन्न की जाती है, जो सम्पूर्ण जीवन को कंटक रहित कर आनन्द प्रदान करने में समर्थ हैं। इस साधना में मूल यंत्र तो उपरोक्त वर्णित श्री चक्र ही है, साथ ही माला के रूप में कामकला माला ही प्रयुक्त होनी है किन्तु प्रयोग क्रम में अन्तर है। यंत्र का सामान्य पूजन करने के उपरान्त भगवती षोडशी के पंच आयुध के रूप में **पांच तांत्रोक्त फल** यन्त्र पर चढ़ायें तथा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप **मूंगा माला** से करें।

मंत्र –

स्क्लीं क्ष्म्यौं ऐं त्रिपुर सर्व वांछितं देहि नमः स्वाहा।।

मंत्र जप के उपरान्त सभी तात्रोक्त फलों को किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

द्वितीय दिवस

मनोकामना पूर्ति का सफल मुहूर्त

द्वितीय दिवस इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि मन में जो कामना बहुत समय से पूर्ण न हो रही हो, उसकी प्राप्ति सफलता पूर्वक की जा सके। इस प्रयोग में भी मूल रूप से प्रथम पूजन की ही यन्त्र, माला को स्थापित कर प्रत्येक मनोकामना की पूर्ति के रूप में **सर्वसिद्धि दात्री त्रिपुराम्बा** को **एक वज्र धारिणी** चढ़ाना है। प्रत्येक मनोकामना के लिए पृथक वज्रधारिणी का प्रयोग करना आवश्यक है तथा मनोकामना पूर्ति मंत्र की एक माला मन्त्र जप **नीली हकीक माला** से करें।

मनोकामना पूर्ति मंत्र –

ह्रीं क्लीं हसौंः सौः क्लीं ह्रीं।।

मंत्र जप के उपरान्त वज्रधारिणी को यंत्र पर ही चढ़ा रहने दें एवं नवरात्रि के अन्तिम दिवस उसे विसर्जित कर दें।

तृतीय दिवस

जटिल रोगों का समाधान शक्ति साधना से

कभी-कभी शरीर में कुछ ऐसे रोग लग जाते हैं जिनका न तो कोई उचित कारण समझ में आता है और न हल। प्रायः ऐसे रोगों का कारण पूर्व जन्मकृत दोष अथवा किसी विरोधी द्वारा कराया गया तंत्र प्रयोग होता है। कारण कुछ भी हो यदि नवरात्रि के तृतीय दिवस को **सर्वरोगहर्त्री त्रिपुरसिद्धा** का पूजन इस प्रकार किया जाए तो प्रत्येक रोग-बाधा से मुक्ति मिलती ही है।

इसके लिए आवश्यक है कि **श्री चक्र यंत्र** आदि के साथ ही साथ साधक के पास **नवकूटा गुटिका** हो जिसका प्रयोग इस साधना में होना है। साधक को चाहिए कि वह मूल पूजन करने के उपरान्त इस मूल यंत्र पर यह गुटिका चढ़ाते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप **सफेद हकीक माला** से करे–

मंत्र –

ह्रीं ह्रीं ह्रीं महा त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्य च देहि स्वाहा।।

मंत्र जप के उपरान्त इस गुटिका को गहरा गड्ढा खोदकर उसमें दबा दें तो कैसा भी जटिल रोग हो उसमें शान्ति आने लगती है।

चतुर्थ दिवस

जब शत्रु बाधा अत्यधिक बढ़ जाए

शत्रु- बाधा जीवन का ऐसा अभिशाप है जिसके कारण व्यक्ति के जीवन में अन्य सब कुछ होते हुए भी वह उसका उपयोग नहीं कर सकता। हर समय उसके मन में अशान्ति और आशंका बनी रहती है, जिसके कारण जीवन का सहज आनन्द चला जाता है। ऐसी स्थिति में यदि यह **सर्वरक्षाकरिणी – त्रिपुर मालिनी प्रयोग** सम्पन्न कर लिया जाए तो प्रबल से प्रबल शत्रु भी शान्त हो जाता है। यदि गुप्त शत्रु भय हो तब भी यह प्रयोग लाभदायक सिद्ध होता है। मूल पूजन करने के उपरान्त यंत्र पर एक **कराला** चढ़ाकर अपने समस्त ज्ञात व अज्ञात शत्रुओं की बाधा समाप्त करने की प्रार्थना करते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप **हकीक माला** से करें–

मंत्र –

ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा।।

मंत्र-जप के उपरान्त **कराला** को या तो श्मशान में फेंक दें अथवा शत्रु के नाम के साथ जला दें।

पंचम दिवस

राज्यपक्ष से अनुकूलता एवं सम्मान

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी भी व्यवसाय या नौकरी से सम्बन्धित हो, राज्यपक्ष से कार्य पड़ता ही है और जिस व्यक्ति को राज्यपक्ष से अनुकूलता मिल जाती है अथवा राज्याधिकारियों से सम्पर्क बन जाता है, समाज में उसका सम्मान भी बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त राज्य- पक्ष से सम्पर्क एवं सम्मान व्यक्ति के व्यक्तित्व में वृद्धि करता है, उसे अनावश्यक तनावों एवं बाधाओं से भी बचाता है।

इस हेतु **सर्वार्थ साधनी त्रिपुराश्री** की साधना करने का विधान शास्त्रों में मिलता है जिनके कृपा कटाक्ष से राज्याधिकारी भी अनुकूल व हित चिन्तक हो जाते हैं। एक **लघु दक्षिणावर्ती शंख** लेकर उसे पूरी तरह से केसर से रंग दे तथा यंत्र के समक्ष चावलों को ढेरी पर स्थापित कर पुष्प की पंखुड़ियों से तथा घी के दीपक से पूजन कर निम्न मंत्र का जप **स्फटिक माला** से करें–

मंत्र –

क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर सुन्दरि सर्व जगत् मम वश कुरु कुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा।।

यह मंत्र जप केवल दो माला करें। मंत्र जप के उपरान्त दक्षिणावर्ती शंख को पीले वस्त्र में बांध कर किसी पवित्र स्थान में रख दें। ऐसा करने से निरन्तर, राज्य पक्ष से सम्मान व ख्याति में वृद्धि होती ही रहती है।

षष्टम दिवस

जीवन में पूर्ण भाग्योदय प्राप्त करने के लिए

प्रायः साधक के मन में भाग्योदय शब्द की जो धारणा रहती है वह अधूरी ही कही जा सकती है। भाग्योदय का युवावस्था से ही सम्बन्ध नहीं होता वरन भाग्योदय तो जीवन पर्यन्त चलने वाली घटना होती है । आयु के साथ-साथ इसके अर्थ व्यापक होते रहते हैं। नवरात्रि का सप्तम दिवस **सर्व सौभाग्य दायिनी त्रिपुरवासिनी देवी** का दिवस है एवं साधक इस दिन का यह विशेष प्रयोग कर जीवन में भाग्योदय का निरन्तर क्रम प्राप्त कर सकता है।

प्रारम्भिक मूल पूजन करने के पश्चात **ग्यारह गोमती चक्र** लेकर यंत्र के सामने स्थापित करें तथा प्रत्येक पर केसर का टीका लगाते हुए– **धन प्राप्ति, आयु प्राप्ति, तन्त्र दोष निवारण प्राप्ति, विदेश यात्रा गमन, प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता, मनोवांछित विवाह, अनुकूल मित्र प्राप्ति, व्यवसाय प्राप्ति, सौन्दर्य प्राप्ति एवं सर्व प्रकारेण पुष्टि प्राप्ति की** ग्यारह स्थितियों का उच्चारण करें, इन्हीं से से जीवन में निरन्तर भाग्योदय की स्थिति गठित होती है। इसके उपरान्त **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें–

मंत्र –

ऐं क्लीं सौं बालात्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः।।

मंत्र जप के उपरान्त सभी गोमती चक्रों को एक डिब्बी में सुरक्षित रख दें। इनका भविष्य में किसी अन्य साधना में प्रयोग न करें। ये सौभाग्य के प्रतीक के रूप में निरन्तर प्रभाव देते ही रहेंगे।

सप्तम दिवस

प्रत्येक अनिष्ट का समापन करने के लिए

केवल प्रकट शत्रु अथवा रोग ही इस जीवन में बाधा नहीं होते वरन कई ऐसी स्थितियां होती हैं जिनकी उपस्थिति में भी जीवन विषमय हो जाता है। इनको किसी परिभाषा या सीमा में नहीं बांधा जा सकता किन्तु जो भी स्थिति जीवन में क्लेशदायक हो या प्रगति में बाधक हो उसका समापन आवश्यक होता ही है। ऐसी ज्ञात-अज्ञात स्थितियों को समाप्त करने के लिए सप्तम दिवस का यह **त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग** विशेष अनुकूल माना गया है। एक **वार्ताली चैतन्य** स्थापित कर इसका पूजन केवल काजल से कर **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें–

मंत्र –

ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं।।

मंत्र जप के उपरान्त माला तथा वार्ताली चैतन्य को विसर्जित कर दें।

अष्टम दिवस

पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्ति दिवस

जीवन का यह पक्ष भी पूर्ण रूप से सन्तुलित हो— यह साधक के लिए आवश्यक है, तभी वे पूर्ण चैतन्यता से आध्यात्मिक साधनाओं में अग्रसर हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि अष्टमी का महत्वपूर्ण दिवस प्रयोग में लाया जाय। अष्टमी ही पूरी नवरात्रि में सर्वाधिक तेजस्वी दिवस है और श्री सुन्दरी साधना क्रम में यह **सर्वाशापरिपूरक-भगवती त्रिपुरेशी** का दिवस है जो प्रकारान्तर से लक्ष्मी का ही तेजस्वी स्वरूप है। इसके लिए आवश्यक है कि साधक **सोलह कमल गट्टे** के बीज प्राप्त कर **कमलगट्टे की माला** से निम्न मंत्र का एक माला-मंत्र जप करे—

मंत्र –

क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुराललिते
मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा।।

मंत्र जप के उपरान्त साधक अपने गृहस्थ जीवन में जिन दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त करने का इच्छुक हो, उन कामनाओं का उच्चारण करता हुआ एक-एक कमल गट्टे का बीज **श्री चक्र यन्त्र** पर चढ़ा दे तथा नवरात्रि के अन्तिम दिवस पर इन्हें एक पोटली बनाकर पवित्र स्थान पर स्थापित कर दे।

नवम दिवस

प्रभावशाली व्यक्तित्व

प्रभावशाली व्यक्तित्व ही मनुष्य के जीवन का सबसे अधिक आवशयक अंग है और व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए जहां अनेक साधनाएं प्रचलित हैं, सम्मोहन विद्या है, वहीं शक्ति साधना के क्रम में भी जीवन के इस पक्ष को अछूता नहीं छोड़ा गया है। **भगवती त्रिपुरा** जो त्रैलोक्य मोहिनी है, उनकी साधना नवरात्रि के अन्तिम दिवस पर करने से सहज ही साधक को इस पक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि साधक **लघु मातंगी यंत्र** प्राप्त कर मूल पूजन के उपरान्त उसे स्थापित कर **राजराजेश्वरी माला** से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें—

मंत्र –

क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरी
धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।।

भगवती मातंगी त्रिपुर सुन्दरी की मन्त्रिणी कही गई हैं, अतः इनकी साधना करने से व्यक्ति को **केवल आकर्षक व्यक्तित्व ही नहीं वरन् बुद्धि-चातुर्य व वाक्पटुता का भी गुण प्राप्त हो जाता है,** जो उसके व्यक्तित्व को उभारने में सहायक होता है। भविष्य में भी उपरोक्त मंत्र की कुछ मालाएं मातंगी यंत्र के समक्ष करते रहना चाहिए।

इस प्रकार षोडशी त्रिपुर सुन्दरी क्रम से नवरात्रि का यह दुर्लभ साधना क्रम पूर्ण होता है जिसमें जीवन की किसी भी स्थिति को अछूता नहीं रहने दिया गया है। **सामान्य ढंग से नवरात्रि मनाने की अपेक्षा यदि साधक षोडशीक्रम से नवरात्रि पूजन करता है, तो कोई कारण ही नहीं कि उसे जीवन में भोग व मोक्ष दोनों ही करतलगत न हों।**

ललितापञ्चकम्

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम्।
प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं
रक्ताङ्गुलीलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम्।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां
पुण्ड्रेक्षुचाप कुसुमेषुसृणीदधानाम्।
प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
पद्मासना दिसुरनायक पूजनीयं
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम्।
प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीं
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
विद्येश्वरीं निगमवाङ्.नसातिदूराम्।
प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति।
यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विमलसौख्यमनन्तकीर्तिम्।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

की

आजीवन सदस्यता

आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी हो गई है

. . . केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी।

जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, जिनके आशीर्वाद के रूप में फिर प्राप्त होता है-

उपहारः

जो आजीवन सदस्य बनने पर मुफ्त में दिए जाते हैं-

- **पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा**
- **सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा सर्वथा मुफ्त**
- **समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी पारद शिवलिंग उपहार स्वरूप**
- **अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक सूर्यकान्त उपरत्न**
- **प्रथम साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी शिविर सिद्धि पैकेट (धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा सिद्धासन सर्वथा निःशुल्क)**
- **एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य पूज्यपाद गुरुदेव का आकर्षक चित्र**
- **प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त गुरु यंत्र**
- **सिद्धाश्रम कैसेट, ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा।**

आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने का विशेष अवसर भी उपलब्ध होता रहेगा।

केवल **६६६६/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल २,४००/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा,नई दिल्ली-११००३४,
फोनः०११-७१८२२४८,
फेक्सः०११-७१८६७००
अथवा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर(राज.), फोनः०२६१-३२२०६

साधक के जीवन में क्यों आवश्यक है?

दीक्षा के विषय में पत्रिका में समय-समय पर सारगर्भित लेख प्रकाशित होते रहे हैं तथा विगत वर्ष में पूज्यपाद गुरुदेव ने अनेक दुर्लभ दीक्षाओं को सर्वसाधारण के लिए सुलभ किया, जिसका लाभ प्राप्त कर अनेक पाठकों ने अपना भौतिक व आध्यात्मिक जीवन तो सुनियोजित किया ही साथ ही मनोवांछित सफलताएं भी प्राप्त कीं।

किन्तु नवीन पाठक के लिए आवश्यक हो जाता है कि पुनः इस विषय से सम्बन्धित गहन विवेचन को सरल शब्दों में प्रस्तुत किया जाए।

पारिभाषिक व्याख्याओं को यदि न लें और सरल शब्दों में दीक्षा का तात्पर्य समझने का प्रयास करें, तो सीधा सा अर्थ है 'दक्ष' हो जाना अर्थात् निपुण हो जाना, परिपूर्ण हो जाना, सक्षम व सफलता युक्त हो जाना तथा ऐसा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सम्भव होना। व्यक्ति अपने प्रयासों से भी किन्हीं स्थितियों को प्राप्त कर सकता है, यह असम्भव नहीं है किन्तु यदि वह इसे सुनियोजित ढंग से करता है तो उसके समय व शक्ति के अपव्यय में लाभ मिलता है। व्यक्ति यदि चाहे तो एक स्थान से दूसरे स्थान तक साठ किलोमीटर दूर या सौ किलोमीटर दूर किसी नगर की यात्रा पैदल अथवा बैलगाड़ी से करने के लिए भी स्वतन्त्र है और यदि वह चाहे तो तीव्रतर यंत्रों-रेलगाड़ी अथवा बस के माध्यम से भी यह दूरी कुछ घंटों में भी पार कर सकता है। यह जीवन भी इस प्रकार यदि तंत्र और यंत्र से आबद्ध कर पूर्ण किया जाए तो कम समय में ही मनोवांछित सफलता प्राप्त की जा सकती है, अपना अभीष्ट प्राप्त किया जा सकता है तथा जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

और यह शीघ्रता, ये क्रमबद्ध उपाय आज के युग में तो अत्यन्त आवश्यक हो गये हैं, क्योंकि यह युग भौतिक पक्षों के साथ जीने की बाध्यता है। व्यक्ति अन्तस से भले ही आध्यात्मिक हो किन्तु आज के युग में वह भी एक भौतिक आवरण के मध्य ही अपने जीवन को व्यतीत करता है, और इसमें कोई दोष भी नहीं है। दोष तो किसी भी स्थिति का अतिक्रमण मात्र होता है।

जीवन भी एक तंत्र है

विश्व का सबसे बड़ा तंत्र तो मानव शरीर और उसका जीवन है। एक जीवन में ही वह हजारों-लाखों प्रकार की क्रियाएं करता है, हजारों व्यक्तियों से मिलता है, और हजारों-हजारों विचारों के मध्य निरन्तर जीवित रह कर गतिशील होता है। ये सब इसी शरीर रूपी तंत्र से ही उत्पन्न होते हैं और इनको तंत्र के द्वारा ही सुनियोजित व सफलतापूर्वक आबद्ध किया जा सकता है। **शरीर और जीवन – जिसने इस तंत्र को समझ लिया वही सही अर्थों में तंत्र समझने का अधिकारी है। जिसने इस सीढ़ी पर पहला कदम रख लिया वह आगे बढ़कर दूसरा कदम भी रख देगा और धीरे-धीरे शिखर तक पहुंच जाएगा।**

दीक्षा और तंत्र अपने-आप में दो पृथक स्थितियां नहीं हैं, जिसने भी तंत्र को समझने का प्रयास किया है वह दीक्षा के महत्व से अनजाना नहीं रह सकता और जिसने दीक्षा के महत्व

को समझ लिया है वह इस निष्कर्ष पर पहुंचता ही है कि गुरु प्रदत्त इस ज्ञान की पूर्णता तंत्र पर जाकर होती है इन दोनों स्थितियों का जिस माध्यम से मिलाप किया जाता है उसे ही शास्त्रों में **'तंत्र दीक्षा'** के नाम से सम्बोधित किया गया है। 'तंत्र दीक्षा' का तात्पर्य केवल तान्त्रिक अभिचारिक क्रियाओं तक ही सीमित नहीं वरन् 'तंत्र दीक्षा' के माध्यम से ही व्यक्ति अपने 'जीवन के तंत्र' को सुव्यवस्थित करने में सफल सिद्ध होता है।

दीक्षा शब्द मूल रूप से चार अक्षरों से बना है और यह शब्द है– द+ई+क्ष+आ

द – सद्यःकुण्डली, शिवा, स्वस्तिक, जितेन्द्रिय

ई – त्रिमूर्ति, महामाया, पुष्टि, विशुद्ध, शान्ति, शिवा-तुष्टि

क्ष – क्रोध, संहार, महाक्षोभ, अनल-क्षय

आ – प्रचण्ड, एकज, नारायण, क्रिया, कान्ति

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि जीवन में जो शिव और शक्ति का संयुक्त रूप है, जो महामाया, तुष्टि एवं विशुद्धता की स्थिति है और जो जीवन के मलों का संहार कर जीवन में कान्ति उत्पन्न करने की क्रिया है, वह दीक्षा ही है। वास्तव में दीक्षा ही परम ज्ञान को देने में समर्थ व मन, वचन, कर्म द्वारा जो पाप-दोष हो चुके हैं अथवा हो रहे हैं उन्हें नष्ट करने की क्रिया है। जिस प्रकार अन्य धातुओं से मिश्रित स्वर्ण को तपाया जाता है तो स्वर्ण अलग हो जाता है, उसी प्रकार दीक्षा रूपी अग्नि में तप कर ही साधक के अन्दर का स्वर्ण निकल कर उसे कान्तिमान बनाता है।

स्वावलम्बी बनने की क्रिया

यह युग सही अर्थों में 'तंत्र-युग' है। तंत्र का काल है, जबकि सामान्य वैदिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन अधिक स्पष्ट नहीं रह गए हैं, साथ ही जीवन की अनेक प्रकार की समस्याओं को समाप्त करने के लिए भी तंत्र का आश्रय लेना ही बुद्धिमता व सफलता का सूचक है। तांत्रोक्त क्रियाओं में गति अत्यन्त तीव्र होती है एवं तांत्रोक्त दीक्षा के द्वारा पूज्य गुरुदेव अपने प्राणों का मन्थन कर शक्ति के अणुओं का प्रवाह शिष्य की ओर इस प्रकार करते हैं, जिससे शिष्य के शरीर में हलचल मच जाए, उसके अन्दर शक्ति का विस्फोट प्रारम्भ हो जाए, वह निरन्तर गतिशील बना हुआ, शक्ति - युक्त बनता हुआ अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझा सके। **संसार में जितनी भी शक्तियां हैं वे बाह्य रूप से अर्जित की हुई होती हैं और इसी से पुरुष को सफलता कभी मिल पाती है और कभी नहीं।** इसके स्थान पर यदि व्यक्ति अपने ही अन्दर निहित **क्रिया शक्ति, ध्यान शक्ति और इच्छा शक्ति** को जाग्रत करता हुआ तीनों में परस्पर सन्तुलन स्थापित करता हुआ गतिशील होता है, तो वह स्वयं ही देव तुल्य बनने में समर्थ हो पाता है और इसी क्रिया का प्रारम्भ योग्य सद्गुरुदेव द्वारा प्रदत्त 'तंत्र दीक्षा' के माध्यम से होता है, जिसके पश्चात् फिर व्यक्ति को अपने कार्यों की पूर्णता के लिए किसी स्थिति पर आश्रित होने की बाध्यता नहीं रह जाती। ★

१६ श्रेष्ठ दीक्षाएं

१०८ दीक्षाओं में से सम्भव नहीं है कि प्रत्येक साधक सभी दीक्षाओं को प्राप्त कर सके, लेकिन १६ दीक्षाएं भी यदि वह चुनकर प्राप्त कर ले चैतन्य दिवस हो तो उसके जीवन का सौभाग्य उदय हो जाता है। शास्त्रों में इन १६ दीक्षाओं की विशेष महत्ता बताई गयी है।

ये १६ दीक्षाएं हैं –

१. सामान्य दीक्षा
२. ज्ञान दीक्षा
३. जीवन मार्ग दीक्षा
४. शाम्भवी दीक्षा
५. कायाकल्प दीक्षा
६. सम्मोहन दीक्षा
७. महालक्ष्मी दीक्षा
८. शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा
९. षोडशी त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा
१०. राजयोग दीक्षा
११. क्रिया योग दीक्षा
१२. मनोवांछा पूर्ति दीक्षा
१३. चैतन्य दीक्षा
१४. गुरु प्राण स्थापन दीक्षा
१५. रसेश्वरी दीक्षा
१६. ऋण मुक्ति दीक्षा

और ये १६ दीक्षाएं एक साथ भी प्राप्त की जा सकती हैं २१ अप्रैल के पावन पर्व पर जब पूज्य गुरुदेव सम्पूर्ण गुरु परम्परा का आह्वान करते हुए विशेष शक्ति युक्त व कृपा करने में तत्पर होंगे।

राजनीतिक भविष्य व शेयर मार्केट

पिछले कुछ दिनों से चली आ रही उथल-पुथल के कारण देश की राजनीतिक स्थितियों पर भी प्रभाव पड़ेंगे। देश में मध्यावधि चुनाव की स्थिति बाह्य दबाव से भी अधिक सत्तारूढ़ दल के दो भागों में स्पष्ट बंट जाने से निर्मित होगी। संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट द्वारा हुए नवीन रहस्योद्घाटन इसमें अतिरिक्त योगदान देंगे और प्रायः सितम्बर तक मध्यावधि चुनाव कराने की घोषणा भी हो जाएगी। सत्तारूढ़ दल में नेतृत्व का संकट गहरायेगा। समिति की रिपोर्ट के बाद देश में सत्तारूढ़ दल की साख गिरेगी। सम्भव है **श्री पी० वी० नरसिंहा राव** अपने पद से त्यागपत्र देने की पेश कश करें। भारतीय जनता पार्टी की स्थिति मजबूत होगी। **उत्तर प्रदेश में कानून और व्यवस्था की स्थिति अत्यन्त शोचनीय होगी** तथा वर्तमान शासन उन पर नियन्त्रण कर पाने में असफल सिद्ध होगा। जातीय संघर्ष की स्थितियां बलवती होंगी तथा उत्तर प्रदेश की स्थितियों व राजनीतिक अराजकता के कारण ही केन्द्रीय स्तर पर भी व्यापक उथल-पुथल होगी। विहार में जनता दल की स्थिति मजबूत बनी रहेगी तथा **श्री लालू प्रसाद यादव को पर्याप्त समर्थन प्राप्त रहेगा।** कश्मीर में कोई बड़ी आतंकवादी दुर्घटना नहीं होगी। हिमाचल प्रदेश में हिम स्खलन से भीषण दुर्घटना एवं जनहानि होगी। पंजाब में कुल मिला जुला कर स्थिति शांत ही रहेगी। दक्षिणी राज्यों में प्रत्येक दृष्टि से अनुकूलता रहेगी। राजस्थान की राजनीतिक स्थिति में फेर बदल होने के संकेत हैं। महाराष्ट्र की भी वर्तमान राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आएगा। तथा नए समीकरण बनेंगे। **उत्तर पूर्वी राज्यों में स्थिति ऊपरी तौर पर शांत रहेगी किन्तु आने वाल अगला समय पुनः भीषण रक्तपात व संघर्ष का रहेगा।**

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत व अमेरिका के मध्य यद्यपि वार्ता का प्रारम्भ होगा किन्तु कोई भी हल नहीं निकलेगा और यही स्थिति पाकिस्तान के साथ भी बनी रहेगी। पाकिस्तान आन्तरिक द्वन्दों में उलझेगा और इसी कारणवश वार्ताओं का छद्म आवरण रख उग्रवादी गतिविधियां पूर्ववत संचालित करता रहेगा। रूस में जनाक्रोश पुनः भड़केगा तथा येलत्सिन के प्रति व्यापक प्रदर्शन होंगे। चीन अपने आन्तरिक आग्रह के उपरान्त भी भारत के प्रति उदासीन रहेगा। **अमानुल्लाह प्रकरण को लेकर भारत का यूरोपीय देशों से सम्बन्ध तनाव पूर्ण होगा तथा प्रत्यावर्तन सम्बन्धी वार्ताओं में प्रतिरोध आएगा,** जबकि जापान का भारत के प्रति आध्यात्मिक व सांस्कृतिक झुकाव बढ़ेगा। भारत - नेपाल सम्बन्धों में कटुता आएगी एवं श्रीलंका में तमिल उग्रवादी पुनः भीषण संहार करेंगे।

शेयर मार्केट

यद्यपि संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट आने के कारण शेयर मार्केट में उथल-पुथल हुई थी किन्तु इस माह तक स्थितियां सामान्य रूप ले लेंगी। आने वाले दिनों में जब रिपोर्ट का अगला अंश आएगा तब पुनः शेयर मार्केट एक गम्भीर दौर से गुजरेगा, किन्तु इस माह स्थितियां प्रायः सामान्य ही होंगी।

इस माह के चढ़ने वाले शेयर हैं– बड़ौदा रेयन, बाम्बे डाइंग, केडबरी, गुजरात नर्मदा, गुजरात अल्कलीज, गुजरात अम्बुजा सीमेंट।

जबकि सीएट टायर, सेन्चुरी, इंडियन रेयन, व किर्लोस्कर की स्थिति द्वितीय स्तर पर उत्साहजनक रहेगी।

बाटा, हिन्डालको, टिल्को, बिडला जूट, वीडियोकोन एप्पल, इनकी स्थिति इस माह सामान्य से नीचे ही रहेगी। डनलप, भारत कागर्स, ब्रुक बांड, इन्डोगल्फ फर्टीलाइजर, गोदी रबड़ एवं इंडियन एल्मोनियम, अपनी वर्तमान स्थिति को बस बचाए ही रहेंगे।

अपोलो टायर, ए० सी० सी, लार्सेन एण्ड टुब्रो की स्थितियों में इस माह अप्रत्याशित रूप से उतार आएगा लेकिन आगामी दृष्टि से ये शेयर पुनः महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। रिलायन्स ग्रुप का व्यवसाय इस माह अत्यन्त सामान्य रहेगा। हिन्दुस्तान मोटर्स, एवं हिन्दुस्तान लिवर की स्थिति भी सामान्य रहेगी। जिन्दल ग्रुप के लिए यह माह श्रेष्ठ है। मार्डन सूटिंग्स, मार्डन वूलन एवं मार्डन सिन्टेक्स इंडिया की स्थिति भी पहले की अपेक्षा सुधार की ओर अग्रसर होगी। केल्वीनेटर की स्थिति में इस माह एक दम से उतार आएगा। जे० पी० ग्रुप के शेयर अभी कुछ माह तक ठन्डे ही रहेंगे।

हीरो होंडा, ग्रेसिम, विन्दल एग्रो केमीकल एवं आई० टी० सी० इस माह के निरापद शेयर हैं। कुछ एक नए शेयर जो अत्यधिक प्रचार के साथ बाजार में आए हैं उनकी स्थिति भविष्य में सुरक्षित नहीं रहेगी।

आनाज बाजार में गेहूं देशी व चक्की आटा के भाव स्थिर रहेंगे लेकिन गेहूं दड़ा के भावों में वृद्धि होगी। चावलों में लाल महल की स्थिति में एकदम से उछाल आएगा। बासमती की मांग बनी रहेगी किन्तु भाव में वृद्धि नहीं होगी। दलहनों में मूंग, राजमा का भाव चढ़ेगा, चने की स्थिति में भी उछाल आएगा जबकि शेष दालें कुल मिला- जुला कर स्थिर ही रहेंगी। किराना बाजार में काली मिर्च के भाव में वृद्धि होगी, जीरा के भाव में उतार आएगा, जायफल के दामों में आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ोतरी होगी, शेष किराना बाजार पहले जैसा ही रहेगा। मेवा बाजार में बादाम गिरी केलीफोर्निया व अखरोट गिरी की मांग बढ़ेगी लेकिन दामों में परिवर्तन सामान्य ही होगा। पिस्ता के दाम चढ़ेंगे, काजू स्थिर रहेगा, किशमिश के भाव में इस माह कई बार उतार-चढ़ाव आएंगे। ★

(पृष्ठ ६ का शेष)

पर अन्यथा तो इसका निवारण अत्यंत कठिन ही होता है। होली की रात्रि पर किया जाने वाला यह प्रयोग अपने विधान में सरल है। **एक भैरव गुटिका** को स्थापित कर उसका धूप, दीप, सिंदूर व गुड़ के नैवेद्य से पूजन कर तथा उसी के ठीक बगल में **एक मधुरूपेण रुद्राक्ष** स्थापित कर उसके चारों ओर **दस हकीक पत्थर** स्थापित करें। मधुरूपेण रुद्राक्ष का पूजन केवल पुष्पों से कर सभी दस हकीक पत्थरों पर सिंदूर का तिलक करें एवं **रुद्राक्ष माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें --

मंत्र –

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्व कर्माणि साधय स्वाहा वौषट्।।

मंत्र-जप करते समय तेल का दीपक लगा लें। यदि मंत्र-जप के मध्य आहट व फुसफुसाहट आरम्भ हो तो भयभीत न हों तथा मंत्र-जप करते रहें। मंत्र-जप के उपरांत भैरव गुटिका को स्थापित रहने दें, शेष सामग्री काले वस्त्र में बांध कर विसर्जित कर दें। भविष्य में भैरव गुटिका का पूजन नियमित रूप से करते रहें।

५. शत्रु शांत होता ही है, इस प्रयोग से

जीवन में सभी सुख हों किंतु शत्रु-बाधा बनी रहे तो उससे अधिक दुखदायी कुछ भी नहीं होता। हर समय आशंका बनी रहती है कि पता नहीं अगले पल क्या हो। प्रकट शत्रु से तो एक बार फिर भी निपटा जा सकता है लेकिन जहां कोई छिप कर वार करने की चेष्टा में हो तो वहां समस्या और भी अधिक गंभीर हो जाती है। वहां लड़ें भी तो किससे? ऐसी ही समस्याओं और विशेष कर पीठ-पीछे घात लगाकर, कुचक्र रचकर वार करने वालों के लिए समापन की सही रात्रि होलिका-दहन की ही रात्रि है।

होलिका-दहन की रात्रि के लिए विशेष रूप से चैतन्य व मंत्र सिद्ध किया गया **शत्रु बाधा निवारण यंत्र** इस समस्या के समाधान का सही उपाय है। होलिका-दहन की रात्रि में दस बजे के बाद एकांत में बैठ लाल वस्त्र पहन कर अपने सामने **शत्रु बाधा निवारण यंत्र** स्थापित कर लें। यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित अथवा ताबीज रूप में भी हो सकता है। इस पर लाल डोरा बांध, **हकीक अथवा मूंगा माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें --

मंत्र –

ॐ ह्रौं ग्लौं भगवति दण्डधारिणी अमुकं अमुकं शीघ्रं रोधय रोधय भंजय भंजय श्रीं ह्रीं राज्यै ॐ हुं हुं हुं

मंत्र-जप के उपरांत वहीं बैठे-बैठे पहले से लाकर रखी नीम की १०८ पत्तियों से एक छोटे हवन-कुंड में अग्नि प्रज्ज्वलित कर अपने प्रमुख शत्रु (या कई शत्रुओं और गुप्त शत्रुओं की दशा में "समस्त ज्ञात-अज्ञात" शत्रुओं) की बाधा-शांति का संकल्प कर उपरोक्त मंत्र से १०८ आहुति दें। आहुति के पश्चात् प्रातः हवन-कुंड की राख, माला व यंत्र सभी कुछ होलिका-दहन में ले जाकर उपरोक्त मंत्र का एक बार उच्चारण करते हुए समर्पित कर दें तथा एक प्रदक्षिणा कर आनंदपूर्वक घर वापस आ जाएं। ऐसा करने से तीव्र से तीव्र शत्रु शांत होता देखा है और कई बार तो दूसरे ही दिन वह आकर क्षमायाचना या सुलह - समझौते जैसे स्वर में बात करने लग जाता है। यदि कोई आशंका हो, तब तो यह प्रयोग सुरक्षा-चक्र की भांति कर ही लेना चाहिए।

६. सिद्धि प्रयोग

यह एक ऐसा विलक्षण प्रयोग है जो होली की रात्रि में ही सिद्ध किया जा सकता है। **जहां-जहां होली की रात्रि का उल्लेख होता है वहां साधना की दृष्टि से अर्थ 'होलिका-दहन' की रात्रि से होता है, क्योंकि अगला दिन तो "धुलेंधी" के नाम से जाना जाता है।** तांत्रिक इस विशेष रात्रि को जहां बहुत दिनों से सोचा गया कोई प्रयोग सम्पन्न करके सफलता प्राप्त करते हैं, वहीं एक प्रयोग ऐसा भी कर लेते हैं जिससे होली की इस चैतन्य रात्रि का प्रभाव आगे भी मिलता रहे। वे कुछ **सिद्धि फलों** को लेकर इसी रात्रि में इस प्रकार चैतन्य कर लेते हैं कि भविष्य में वे जिस भी साधना में साथ रखे जाएं, सफलता मिलती रहे। इसमें संख्या का कोई सीमा निर्धारित नहीं है फिर भी **एक बार में कम से कम पांच सिद्धि फलों को चैतन्य करना आवश्यक है,** जो भविष्य में पांच साधनाओं में सफलतादायक बन सकते हैं।

प्रत्येक साधना वर्ष में कभी भी सम्पन्न की जा सकती है. . . लेकिन सिद्ध मुहूर्त पर सम्पन्न करने का सीधा सा अर्थ है कि दसवां भाग परिश्रम कर ही सफलता और सिद्धि प्राप्त कर लेना, विशेष रूप से जब तांत्रिक मुहूर्त हो।

साधक होली की रात्रि में ग्यारह बजे के आसपास सभी सिद्धि फलों को पीला वस्त्र बिछाकर चावलों की ढेरी पर स्थापित कर **स्फटिक माला** से निम्न और सर्वथा दुर्लभ मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करें। (अधिक सिद्धि फल होने पर उन की संख्या के अनुरूप ही मालाओं की संख्या रहेगी)

मंत्र –

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः सहस्रार हुं फट्।।

उपरोक्त मंत्र-जप के उपरांत सभी सिद्धि फलों को एक डिब्बी में सुरक्षित बंद कर लें और भविष्य में उनको अलग-अलग साधनाओं में प्रयुक्त कर सकते हैं। **इस अवसर पर जिस स्फटिक माला से मंत्र जप हो वह पहले किसी साधना में प्रयुक्त न हुई हो क्योंकि अप्रयुक्त माला ही उपरोक्त मंत्र के द्वारा स्वतः सिद्धि माला के रूप में परिवर्तित हो जाती है।**

७. अटूट लक्ष्मी का स्वागत करिए

केवल दीपावली की रात्रि ही नहीं होली की रात्रि भी समान रूप से चैतन्य और लक्ष्मी साधनाओं के लिए भी अनुकूल कही गई है। आपके मन में यदि कोई विशेष लक्ष्मी साधना करने की इच्छा हो तो उसके लिए दीपावली के पश्चात् यह एक श्रेष्ठ अवसर है अन्यथा होली के अवसर पर एक विशेष लक्ष्मी साधना भी वर्णित है जिसे **''अटूट लक्ष्मी साधना''** की संज्ञा दी गई है। इस साधना को सम्पन्न करने के बाद साधक को जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं देखना पड़ता। यदि दैवयोग से कोई स्रोत बंद भी हो जाए तो कोई न कोई दूसरा स्रोत अविलम्ब प्राप्त हो ही जाता है। साथ ही लक्ष्मी के समस्त स्वरूपों की प्राप्ति और जीवन में उनको चिरस्थायी बनाए रखने की भी यही साधना है। देश के कुछ उद्योगपति परिवारों की सम्पन्नता और ऐश्वर्य का रहस्य यही साधना है जिसे वे प्रतिवर्ष होली के अवसर पर करते ही हैं, भले ही कोई अन्य साधना न करें।

इस साधना में **लक्ष्मी प्राकाम्य** नामक एक समुद्री पदार्थ की आवश्यकता पड़ती है, जो देखने में शंख जैसा होता है। तांत्रोक्त लक्ष्मी साधनाओं में इसका प्रभाव आश्चर्यजनक माना गया है। इसे होली की रात्रि में ठीक अर्ध-रात्रि के समय पीले चावलों की ढेरी पर स्थापित कर पूर्ण रूप से लक्ष्मी मान, उसी प्रकार से पूजन कर, **कमलगट्टे की माला** से निम्न दुर्लभ मंत्र की एक माला मंत्र-जप करना होता है।

मंत्र –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं श्रीं क्लीं ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा

इस मंत्र-जप के पश्चात् **लक्ष्मी प्राकाम्य** को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा होलिका की पवित्र अग्नि में उपरोक्त मंत्र से कमलगट्टे की माला का एक-एक मनका तोड़ कर आहुति दे दें। अगले वर्ष जब यह साधना पुनः करें तो पहले का **लक्ष्मी प्राकाम्य** पवित्र नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

८. जीवन में मधुरता लाइए, इस वशीकरण प्रयोग से

होली की रात्रि तो सम्मोहन -वशीकरण, यक्षिणी साधनाओं, अप्सरा साधनाओं की ही विशेष रात्रि है और कोई भी प्रयोग सम्पन्न क्यों न किया जाए, सफलता मिलती ही है। फिर भी यदि इस दिवस विशेष को ध्यान में रखकर कोई साधना सम्पन्न की जाए तो सफलता की सम्भावनाएं कई गुना बढ़ जाती हैं। होली एक प्रकार से पूर्व वर्ष की विदाई और नववर्ष के स्वागत का अवसर है और ऐसे में प्रेम-सम्बंधी, विवाह-सम्बंधी या दाम्पत्य जीवन में मधुरता घोलने की, आगामी वर्ष को रसमय बनाने की यही साधना कही गई है। **यह केवल प्रेमी-प्रेमिका के सम्बंधों को लेकर नहीं बल्कि विवाहित स्त्री-पुरुषों को भी ध्यान में रखकर ढूंढी गई साधना है, जिससे उनके जीवन की नीरसता और जड़ता समाप्त हो सके।**

इस साधना के लिए आवश्यक है कि साधक पहले से एक **चित्रित** प्राप्त कर ले जो सम्मोहन मंत्रों से सिद्ध हो तथा **स्फटिक माला अथवा मूंगे की माला** से जिसको सम्मोहित करना है उसके नाम का संकल्प कर एक माला-मंत्र जप करें --

मंत्र –

ॐ कामाय क्लीं क्लीं कामिन्यै क्लीं।।

यदि विवाहित दम्पत्ति में पति-पत्नी दोनों ही एक दूसरे के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर लें तो उनके जीवन में अतिरिक्त मधुरता आ जाती है। इसके लिए उन्हें अलग-अलग **दो चित्रित** प्राप्त करने होंगे, यद्यपि माला का संयुक्त रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

दूसरे दिन **चित्रित एवं माला** को किसी आम या अशोक की जड़ में दबा दें। यह सम्मोहन-वशीकरण से भी अधिक मधुरता और प्रेम-रस घोलने का सिद्ध सफल प्रयोग है।

वास्तव में होली की रात्रि एक अद्भुत रात्रि होती है और केवल तांत्रिक साधनाओं में ही नहीं, वैद्यकीय ग्रंथों में भी इसी रात्रि में औषधियों को अभिमंत्रित करने का तथा अन्य प्रकार से उपयोग करने का वर्णन प्राप्त होता है।

सिद्धाश्रम
गोल्डन
कार्ड
योजना

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

बलराम प्रसाद पाल, मण्डला
प्रश्न- **मैं किस महाविद्या की साधना करूं?**
उत्तर- तारा महाविद्या की।

पण्ढरीनाथ मंसारे, भोपाल
प्रश्न- **कर्ज समाप्ति का उपाय बताएं?**
उत्तर- वैचाक्षी साधना सम्पन्न करें।

महती लाल पाण्डेय, बम्बई
प्रश्न- **सम्पूर्ण रूप से ऋण मुक्ति कब तक?**
उत्तर- वर्ष १९९७ के आरम्भ में।

राम नवल, जौनपुर
प्रश्न- **नीलम रत्न पहन सकता हूं या नहीं?**
उत्तर- नहीं।

राकेश कुमार शर्मा, हरिद्वार
प्रश्न- **आर्थिक स्थिति में सुधार कब तक?**
उत्तर- तैंतीसवें वर्ष में।

श्याम कुमार भारद्वाज, झांसी
प्रश्न- **मेरी अस्थिर चित्तता कब समाप्त होगी?**
उत्तर- इस सम्बन्ध में प्रकाशित,साबर साधना सम्पन्न करें।

मयंक गर्ग, बम्बई
प्रश्न- **शादी के लिए सबसे अच्छा समय कौन सा होगा?**
उत्तर- सितम्बर माह का प्रथम पक्ष।

राजेश भारद्वाज, दाहोद
प्रश्न- **मैं दीक्षा कब ग्रहण करूं?**
उत्तर- फोटो भेज कर भी आप दीक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

गोपाल कृष्ण भारद्वाज, अलीगढ़
प्रश्न- **क्या मैं न्यायिक सेवा में जा सकता हूं।**
उत्तर- सम्भावनाएं प्रबल हैं।

सन्तोष कुमार शाक्य, रायसेन
प्रश्न- **पुत्र की उन्नति किस क्षेत्र में?**
उत्तर- विज्ञान अध्ययन के द्वारा।

अमरनाथ राम, नवागढ़
प्रश्न- **आवास कब तक और कहां बनेगा?**
उत्तर- विलम्ब से किन्तु जन्म स्थान पर ही।

प्रदीप कुमार मुरादाबाद
प्रश्न- **क्या आई ए० एस० अथवा पी० सी० एस० में जाने की सम्भावनाएं हैं?**
उत्तर- उच्च शासकीय योग सम्भव किन्तु उपरोक्त प्रकार से नहीं।

वी० पी० श्रीवास्तव, बहराइच
प्रश्न- **मुझे किस साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर- महाविद्या साधना में, विशेषकर त्रिपुर भैरवी में।

ऊषा किरण, टिमरनी
प्रश्न- **नौकरी कब तक और किस क्षेत्र में?**
उत्तर- नौकरी का योग नहीं है।

ओंकार प्रसाद राठौर, बिलासपुर
प्रश्न- **क्या विधि व्यवसाय मेरे अनुकूल रहेगा?**
उत्तर- मध्यम फलदायक रहेगा।

जोगिन्द्र कुमार दुआ, रोहतक
प्रश्न- **पदोन्नति कब तक?**
उत्तर- वर्तमान में स्थिति संघर्ष पूर्ण रहेगी।

माना गोस्वामी, रोहतक
प्रश्न- **मेरा बोर्ड का परीक्षा फल कैसा रहेगा?**
उत्तर- सामान्यतः सफल।

जगवीर सिंह वर्मा, अलीगढ़
प्रश्न- **शत्रुओं से मुक्ति कब तक सम्भव, क्या करूं?**
उत्तर- कष्ट बढ़ने की सम्भावनाएं प्रबल अतः बगलामुखी साधना नियमित रूप से करें।

जय भारत, होशियारपुर
प्रश्न- **मैं नया कार्य प्रारम्भ करना चाहता हूं।**
उत्तर- अभी समय अनुकूल नहीं, अतः विचार त्याग दें।

अजय कुमार सिंह, सुल्तानपुर
प्रश्न- **क्या आई० आई० टी० में प्रवेश प्राप्त कर सकूंगा?**
उत्तर- प्रथम बार में असफलता सम्भावित किन्तु उसके पश्चात स्थिति आपके अनुकूल।

मुकेश शर्मा, देहरादून
प्रश्न- **मेरा भाग्य उदय कब होगा?**
उत्तर- आपकी इच्छानुसार स्थितियां मध्य आयु में ही निर्मित होंगी।

हेमंत प्रसाद सोलंकी,
प्रश्न- **मैं व्यवसाय करूंगा या नौकरी?**
उत्तर- व्यवसाय में अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा।

पद्मिनी नीलम भारद्वाज, शिमला
प्रश्न- **विवाह में विलम्ब क्यों?**
उत्तर- कुण्डली के अनुसार विलम्ब बढ़ेगा, अघोर गौरी प्रयोग ही एक मात्र उपाय।

राहुल ताम्रकार, नई दिल्ली
प्रश्न- **मेडिकल या किस क्षेत्र में सफलता मिलेगी?**
उत्तर- मेडिकल में।

मनीष मिश्रा, कानपुर
प्रश्न- **इंजीनियर कब तक बनूंगा?**
उत्तर- प्रशासकीय सेवाएं आपके लिए अधिक उपयुक्त रहेंगी।

आशीष कुमार गुप्ता, बिलासपुर
प्रश्न- **मेरा स्वास्थ्य कब तक ठीक होगा?**
उत्तर- इस वर्ष के अन्त तक।

श्रीमती मीना कुशवाह, सेन्धवा
प्रश्न- **मेरी नौकरी कब लगेगी?**
उत्तर- नौकरी प्राप्ति की सम्भावनाएं अत्यन्त क्षीण।

वीरेन्द्र नारायण सक्सेना, ग्वालियर
प्रश्न- **मेरा मकान बनेगा अथवा नहीं?**
उत्तर- स्वगृह निर्माण की आशाएं क्षीण, सन्तान द्वारा गृह-सुख मिलेगा।

देवीलाल जी भारती, डभोई
प्रश्न- **क्या मनोवांछित विवाह हो सकेगा?**
उत्तर- हां।

शशिकांत कांवली, बम्बई
प्रश्न- **मेरा विवाह कब होगा?**
उत्तर- इसी वर्ष।

सत्यदेव मिश्रा, भिवाड़ी
प्रश्न- **मेरी इच्छित उद्देश्य पूर्ति होगी?**
उत्तर- हां।

★

कूपन क्रमांक :- ११७ (**कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे**)

नाम :-..
जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्...............
जन्म स्थान .... जन्म समय ....
पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..
....
आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

व्यक्तिगत रुप से उत्तर प्राप्त करने के लिए केवल पोस्ट कार्ड(पता लिखा) प्रेषित करें

जीवन का सौभाग्य

महा शिवरात्रि साधना पर्व

(१०.०३.९४)

एक दिवसीय दुर्लभ शिविर
समस्त भारत के साधकों के लिए दुर्लभ क्षण
पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में

- चारों वेदों में निहित मंत्रों से शिवलिंग पूजन
- साक्षात् भगवान शिव से वरदान प्राप्ति के दुर्लभ क्षण।
- हर- हर महादेव की ध्वनि से गुंजरित एक अद्वितीय वातावरण
- इक्कीस किलो के पारद शिवलिंग पर समस्त साधकों के द्वारा अर्चन
- पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में दुर्लभ शिव - पूजन, गोपनीय रहस्यों से प्रस्फुटित प्रवचन।

भोजन, आवास निःशुल्क **शिविर शुल्क - ३००/-**

स्थान - संयोजक

चन्द्रभान, कृष्ण कुमार, ज्ञान चंद भडाना
सूरज कुण्ड, बदरपुर रोड, 'दिल्ली सीमा'
(दिल्ली से मात्र १२ कि.मी. पर, बस सुविधा हर पांच मिनट पर उपलब्ध)
फोनः ८-२७५३५७, ८-२५२३१०, ८-२५२३११

एवं

राम कुमार, सुशील कुमार गोयल, ओम प्रकाश दुबे, श्रीमती कृष्णा गहलावत

आयोजन स्थल

हरियाणा टूरिज्म, सूरज कुण्ड (नजदीक बदरपुर), फरीदाबाद

21 अप्रैल यह तो सब कुछ न्यौछावर कर देने का पर्व है

आज से चार वर्ष पूर्व पूज्यपाद गुरुदेव ने जोधपुर में मनाए जा रहे २१ अप्रैल - जन्मोत्सव को **शिष्य जन्मोत्सव** की संज्ञा दी थी क्योंकि शिष्यों के रूप में गुरु का आनन्द जो प्रकट होता है और जिस रूप में वे स्वयं की परिपूर्णता भी अनुभव जो करते हैं। उत्सव का अवलम्ब बना रह कर जो कुछ संचालित होता है या घटित होता है वह वस्तुतः शिष्यों के जीवन को संवारने का प्रयास ही होता है।

यह गुरु- शिष्य के मध्य का आनन्द क्षण है और एक परिवार का उत्सव भी है। दोनों ही स्वरूपों से देखा जाए तो गुरु की ही प्राणश्चेतना (अर्थात् उनका शिष्य) अधिक लाभ में रहता है **क्योंकि जिस दिन से व्यक्ति शिष्य बना उसी दिन से वह प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो जाता है** और गुरु का अर्थ होता है जो निरन्तर उनका मनोवांछित प्रदान करने में तत्पर रहें, भले ही शिष्य ने उसकी इच्छा प्रकट की हो या न की हो और इस बात का अनुभव सभी शिष्यों और साधकों ने किया ही है कि किस प्रकार से पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में उनकी सभी कामनाएं पूर्ण हुई है, साधना- सिद्धि की दशाएं बनी हैं और ऐसा जीवन में प्रतिपल रहा है।

साधक आंखों की कोर में थोड़ी सी भी श्रद्धा भर कर देखे, नत होकर अनुभव करे तो उसकी पीठ पर निरन्तर गुरु का वरदहस्त रहता ही है और इसी से जीवन के मुख्य ऋणों में- मातृ - ऋण, पितृ- ऋण, देव ऋण से भी ऊपर गुरु- ऋण माना गया है।

शिष्य अथवा साधक गुरु - कृपा का कोई भी प्रतिदान दे ही नहीं सकता, गुरु - ऋण यथार्थतः चुका ही नहीं सकता लेकिन परम्परा से वर्ष में दो ऐसे दिवस निश्चित किए गए जब वह प्रतीक रूप में अपने गुरु के पवित्र चरणों में कुछ भेंट करके अपनी भावना व्यक्त करने का एक दुर्लभ क्षण प्राप्त करता है। ये दो पर्व होते हैं - गुरु पूर्णिमा व गुरु जन्मदिन - महोत्सव।

जिस प्रकार गुरु पूर्णिमा अत्यन्त पावन पर्व है उससे भी अधिक एक शिष्य के लिए उसके गुरु का जन्मदिन पावन है क्योंकि गुरु पूर्णिमा के अवसर पर तो हम प्रायः परम्परा से जो गुरु प्राप्त हुए हैं उनका स्मरण करते हैं किन्तु जिन्हें सौभाग्य से जीवित गुरु का सान्निध्य मिला है वे सौभाग्यशाली ही इस उत्सव को मना पाते

प्रति वर्ष का जन्मोत्सव इस वर्ष कुछ और भी चैतन्यता, कुछ और भी विशेषता लेकर आया है, जब पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के स्वरूप में ६० वां वर्ष आरम्भ कर रहे हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव ने तो इस वर्ष अपने शिष्यों के लिए कुछ विशेष करने का, चिरस्मरणीय करने का निश्चय कर ही लिया है।

किन्तु शिष्यों ने क्या निश्चय किया है? वे क्या भेंट करेंगे? क्या कुछ समर्पित कर देंगे अपने गुरु के पावन चरणों में?

हैं, इसका अनोखा आनन्द ले पाते हैं कि कैसे एक दिव्यात्मा के चरणों में बैठ कर, साक्षात् उनका पूजन कर उनकी कृपा - दृष्टि में भीग कर, उनके अमृत वचनों को कानों के माध्यम से अपने सारे शरीर में उतार कर दिव्य, चैतन्य, निरोगी, सुखी और "श्री" युक्त बना जा सकता है।

आने वाली पीढ़ियां तो बहुत कसक से याद करती है कि काश! हमें ऐसे व्यक्तित्व का साथ मिला होता। उपस्थित पीढ़ी जीवित जाग्रत गुरु का अर्थ प्रायः नहीं समझ पाती क्योंकि गुरु वर्तमान युग से बहुत आगे चल रहे होते हैं किन्तु आने वाली पीढ़ियां उनका मूल्यांकन करने में कुछ - कुछ समर्थ हो पाती हैं और तब वे केवल उनके द्वारा छोड़े ज्ञान को आधार बनाकर अपना जीवन धन्य करती है।

किन्तु ऐसे उल्लास और उत्सव के क्षण, ऐसी स्वर्गिक पावनता के क्षण जिस पीढ़ी को भी मिल जाएं उसे तो एक बार में झूम कर न्यौछावर हो जाना चाहिए, अपना सर्वस्व लुटा देना चाहिए क्योंकि ये उल्लास, ये उत्सर्ग कर देने का भाव, अपने समर्पण को प्रकट देने का अवसर बार -बार उपस्थित नहीं होता।

अव इसमें वचा कर रखना भी क्या, एक ही क्षण में अपने- आप को लुटा देना है! धन, सम्पत्ति, आभूषण, ऐश्वर्य, अपने शरीर पर धारण किए गहने, अंगूठी सव कुछ प्रभु चरणों में भेंट कर देना है क्योंकि इसी से ही फिर जीवन का वास्तविक श्रृंगार होगा। ये सब सम्पदा व्यक्ति के साथ जाने वाली नहीं और उसके जीवन के पश्चात केवल फूट और कलह की जड़ बन कर रह जाती है। ऐसे धन को यदि गुरु चरणों में चढ़ा दिया जाए तो न केवल साधक इस जीवन के पाप - दोष से मुक्त होता वरन उसको तो मोक्ष भी सुलभ हो जाता है।

इतिहास साक्षी है कि जब आद्यशंकराचार्य सम्पूर्ण भारत की विजय यात्रा पर निकले थे तो मार्ग में पड़ने वाले गांव की स्त्रियों ने उसके विराट लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपने गले का हार, अंगूठियां, कर्ण फूल, कंगन इत्यादि स्वर्णिम आभूषण स्वतः ही उनके चरणों में भेंट कर दिए थे और हमारे सामने तो ऐसे समर्पण को प्रकट करने के लिए एक ऐसा पर्व उपस्थित हो रहा है जिसकी चिरस्मरणीयता बनी ही रहेगी। अभी पिछले वर्ष जैन सम्प्रदाय में भगवान बाहुबली का बारह

क्या मिल जाएगा यदि चांदी के चंद ठीकरे एकत्र भी कर लिए, न तो वे जीवन के साथ जाएंगे, न उनसे स्वास्थ्य, प्रेम, नींद और हंसी खरीद सकेंगे।

इसके विपरीत गुरु चरणों में जो कुछ चढ़ा दिया वह हजार गुना वापस मिल ही जाएगा।

वर्षों पर पड़ने वाला महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ था और जैन सम्प्रदाय ने सम्पूर्ण भारत व विदेशों से उमड़ कर अपनी श्रद्धा व्यक्त कर, अपने उन्मुक्त हस्त से किए गए दान से यह उदाहरण रखा कि किस प्रकार से अलौकिक व्यक्तित्वों का पूजन - अर्चन किया जाता है, किस प्रकार से अपनी श्रद्धा व्यक्त की जाती है।

यह कोई निमन्त्रण या आमंत्रण नहीं है वरन होना तो यह चाहिए कि शिष्य स्वयं अपनी चेतना से इस महोत्सव में उपस्थित हो ही, साथ ही वह अधिक से अधिक धन अथवा आभूषण के रूप में अपने श्रद्धा सुमन चढ़ा कर अपनी पात्रता सिद्ध करे। **जिस प्रकार से गुरु पूर्णिमा में साधक धन, पंच वस्त्र, पुष्प आदि चढ़ा कर गुरु चरणों में अपनी श्रद्धा प्रकट करता है, अपनी भावना व्यक्त करता है उसी प्रकार इस विशिष्ट पर्व में करना है, अपितु उससे अधिक ही करना है।** सही शिष्य तो वह है जो अपना सब कुछ अर्पित कर दे और **"त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेवं समर्पयेत"** कहकर दीन भाव से एक ओर खड़ा हो जाए।

हमें जवानी जमा खर्च करने वाले और जय -जयकार करने वाले शिष्यों की आवश्यकता नहीं है, जो इस प्रकार से अपने - आपको लुटा कर अपनी पात्रता सिद्ध करने का दमखम रखते हों, गुरु के हृदय में उतरने का हौसला रखते हों, पूरे भारत वर्ष में अपना नाम चमकते हुए अक्षरों में लिखा देखना चाहते हों, वे ही आगे आए क्योंकि यह तो समुद्र में छलांग लगाने जैसा दुःसाहस है और पूज्यपाद गुरुदेव इस अवसर पर इस विशेष महोत्सव में **जवकि उनके सिद्धाश्रम जाने का समय अत्यन्त निकट है, वे इस कसौटी पर कसकर अपने शिष्यों को देख लेना चाहते हैं कि कौन केवल होंठों से अपने को शिष्य कहता है और कौन वास्तव में अपना घर बार, सम्पत्ति तक लुटा देने का हौसला रखता है।**

और बचाकर रखने से मिल भी क्या जाएगा? चंद ठीकरे यदि इकट्ठा भी कर लिए तो उससे जीवन की कौन सी प्रसन्नता मिल जाएगी? न तो उससे आप स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं, न नींद, न प्रेम, न प्रसन्नता और न जीवन की हंसी, फिर उन बेजान आभूषणों और कागज के टुकड़ों से प्रेम करना भी कैसा? यदि इसके विपरीत यदि उन्हें गुरु चरणों में अर्पित कर दिया तो उसका हजार गुना आशीर्वाद युक्त वापस मिल ही जाएगा। समुद्र से एक बूंद खोती है और वापस वही एक नदी बन कर उसमें हजार - हजार गुना जल के साथ मिल जाती है।

यह तो जीवन का एक वर्तुल है कि जितना दिया जाएगा उतना ही वापिस मिलेगा। जितना बचा कर रखेंगे तो बस वही चंद टुकड़े साथ रह जाएंगे जिनसे न तो आप गुरु प्राप्त कर सकेंगे, न जीवन का उमंग, उल्लास।

★

मेष - स्वास्थ्य की दृष्टि से किंचित् खेद जनक माह अन्यथा मानसिक तनाव, आय की दुर्बलता, आफिस में तनाव जैसी बाधाएं समाप्त होंगी। मन में उत्फुल्लता रहेगी। जीवन साथी से विचारों में सामन्जस्य बढ़ेगा। आय के नए स्रोत खुलेंगे। जमा-पूंजी में भी वृद्धि होगी। किसी के आगमन से मन में प्रसन्न्ता रहेगी। प्रेम-प्रसंग में प्रगाढ़ता आएगी। राज्य पक्ष से स्थिति थोड़ी दुर्बल है अतः मुकदमे बाजी में फंसने से बचें। यात्राएं यथासम्भव न करें। धार्मिक व आध्यात्मिक कार्यों से मन उचाट रहेगा। सम्पूर्ण रूप से एक लाभदायक माह।
अनुकूल दिवसः रविवार।
अनुकूल रंगः गुलाबी।

वृषभ - जिम्मेदारियां अत्यधिक बढ़ेंगी। महत्वपूर्ण कार्यों के सम्पादन के साथ-साथ कुछ गोपनीय कार्य भी सम्पन्न करने पड़ सकते हैं। अधीनस्थों का व्यवहार सहयोगी व मैत्री पूर्ण रहेगा। आय की स्थिति मध्यम रहेगी किन्तु आकस्मिक धन-प्राप्ति के प्रबल योग हैं अतः जो शेयर मार्केट में रुचि रखते हों वे इस अवसर का अवश्य ही लाभ उठाएं। ऋण के लेन-देन से बचें। धोखा होने की सम्भावना है। किसी पुरानी चिन्ता का अन्त होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यात्राएं मध्यम फलदायक ही कही जा सकती हैं।
अनुकूल दिवस- गुरुवार।
अनुकूल रंग- हल्का पीला।

मिथुन - पारिवारिक समस्याओं की बहुलता रहेगी। कोई महत्वपूर्ण निर्णय ले लेना ही उचित रहेगा। उहापोह की स्थितियों से बचें। कार्यालय में कार्यों की अधिकता रहेगी। विवाद की स्थितियों से भी बचें। आय के स्रोत प्राप्त होंगे। नए कार्य की प्राप्ति के भी प्रबल आसार हैं विशेष कर बिना व्यवसाय के व्यक्तियों के लिए। यात्राएं कष्टदायक किन्तु सफलता देने वाली। गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। धन के खो जाने या चोरी हो जाने की सम्भावना है। अभिरुचियों में वृद्धि होगी। प्रेम-प्रसंग में शिथिलता आएगी। राज्य पक्ष से अनुकूलता मिलेगी। मित्र वर्ग सहयोगी रहेगा।
अनुकूल दिवस- शुक्रवार।
अनुकूल रंग- सफेद।

कर्क - कार्यों की अधिकता रहेगी। दाम्पत्य जीवन में पत्नी से सामंजस्य रहेगा। पारिवारिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम। पुरानी बीमारी से भी छुटकारा मिलने की आशा है। मित्र वर्ग मदद करेगा। शत्रुओं की गतिविधियां शान्त होंगी। गुप्त धन की प्राप्ति होगी। माह के अन्तिम सप्ताह में हल्की चोट लगने की भी सम्भावना है, अतः विशेष सावधानी रखें। मन में तर्क-वितर्क की भावनाएं प्रबल रहेंगी और निर्णय-अनिर्णय की स्थिति भी उत्पन्न होती रहेगी।
अनुकूल दिवस- गुरुवार।
अनुकूल रंग- हल्का गुलाबी।

सिंह - दाम्पत्य जीवन की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है अन्यथा आगे के माह में तनाव की कटु स्थिति उत्पन्न हो सकती है। मन में नीरसता रहेगी। घूमने-फिरने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। अधिकारियों का दबाव बढ़ेगा। आय की स्थिति श्रेष्ठ रहेगी। व्यय में सन्तुलन रखना आवश्यक है। यात्राएं यथासम्भव न करे तभी अच्छा। इस माह के प्रत्येक मंगलवार को झगड़े, विवाद एवं चोट-चपेट के प्रति विशेष सतर्क रहें। लाटरी आदि के व्यसन का त्याग करें। सम्पूर्ण रूप से एक अस्त-व्यस्त माह। हनुमान साधना प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी। स्वास्थ्य में बिखराव बना रहेगा।
अनुकूल दिवस- गुरुवार।
अनुकूल रंग- कत्थई।

कन्या - कोई हर्षवर्धक समाचार प्राप्त होगा। चिर-प्रतीक्षित अभिलाषा पूर्ण होगी। घर में मंगल कार्य होंगे। आय की स्थितियों में विशेष सुधार आएगा। पुत्र की उन्नति से मन में विशेष उल्लास रहेगा। स्वास्थ्य की गड़बड़ बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन में खींचतान की स्थिति बनी रहेगी। भृत्य-सुख में न्यूनता आएगी। मन में विलासिता पूर्ण विचार बने रहेंगे। प्रेम-प्रसंग में अनबन। यात्राएं सम फलदायक ही कही जा सकती हैं। शत्रु-पक्ष शिथिल पड़ेगा। राज्यपक्ष से अनुकूलता मिलेगी।
अनुकूल दिवस- गुरुवार।
अनुकूल रंग- जामुनी।

तुला - चित्त में अस्थिरता रहेगी। योजनाओं को मूर्त रूप देने में कठिनाइयां अनुभव करेंगे। बाधाएं प्रबल रहेंगी। परिवार से सहयोग रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम बना रहेगा। आय-व्यय चक्र असन्तुलित बना रहेगा तथा कई बार उतार-चढ़ाव की स्थितियां देखनी पड़ सकती हैं। प्रेम-प्रसंग में प्रगाढ़ता आएगी। आवश्यक कार्यवश कई बार यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। राज्य- पक्ष से स्थिति सामान्य रहेगी। मुकदमेबाजी का लम्बा खिंचने काआसार है। शत्रुपक्ष से स्थिति में सुधार आएगा तथा पुराने झगड़े-झंझट समाप्त होंगे। ऋण प्राप्त होने की दशाएं बन सकती हैं।
अनुकूल दिवस- मंगलवार।
अनुकूल रंग- भूरा।

धनु - विवाह में आ रही अड़चनें समाप्त होंगी। मनोनुकूल विवाह का अवसर उपस्थित होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किसी पूर्व परिचित से सुखद भेंट होगी। धनागम का नया स्रोत प्राप्त होगा। राज्य-कार्यों में किंचित् न्यूनता रहेगी। मन में संतोष रहेगा। अपनी गोपनीयता बनाए रखें। मित्रों पर आवश्यकता से अधिक विश्वास करना हानिप्रद सिद्ध हो सकता है। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें। माता-पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता हो सकती है। सम्मान में वृद्धि होगी।
अनुकूल दिवस- सोमवार।
अनुकूल रंग- हल्का नीला।

कुंभ - मन में आक्रोश रहेगा। किसी प्रबल विरोधी को लेकर चिन्तातुर रहेंगे। व्यवसाय के प्रति मन में उपेक्षा रहेगी। इंटरव्यू में सफलता मिलने का योग है। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। सामान्य अर्थागम के अतिरिक्त भी कई माध्यमों से धन प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साधनाओं के प्रति मन में उत्साह रहेगा। प्रेम-प्रसंग से तनाव उत्पन्न होगा। सम्पूर्ण रूप से एक चुनौती पूर्ण माह किन्तु स्थितियों से ताल - मेल बैठाते हुए सफलता प्राप्त कर सकेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।
अनुकूल दिवस- शनि।
अनुकूल रंग- गहरा भूरा।

वृश्चिक - एक सामान्य माह। पिछले माह की अधिकतर स्थितियां ही इस माह में भी बनी रहेंगी। किसी अवांछित के आगमन से मन में क्षोभ होगा। स्वयं का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा किन्तु पत्नी के अस्वस्थ होने के कारण मानसिक क्षोभ रहेगा। परिवार में बच्चों की उन्नति से प्रसन्नता रहेगी। यात्राओं से धनहानि। अधिकारी वर्ग के कारण मन में तनाव रहेगा। प्रेम-प्रसंग में शिथिलता।
अनुकूल दिवस- मंगल।
अनुकूल रंग- नीला।

मकर - पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कूटनीति से कार्य करना ही भविष्य की दृष्टि से सफल होगा। प्रबल विरोधी को अपने पक्ष में मिलाने का प्रयास करें। पारिवारिक जीवन सुधार की ओर अग्रसर होगा। सन्तान सुख उत्तम रहेगा। पुत्री के द्वारा विशेष सुख मिलेगा। धनागम उत्तम रहेगा। शेयर आदि से भी लाभ होने की सम्भावना है। राज्यपक्ष से सम्बन्ध प्रगाढ़ होंगे।
अनुकूल दिवस- बुधवार।
अनुकूल रंग- गहरा हरा।

मीन - मन में खिन्नता रहेगी। मनोवांछित प्राप्त न होने से विचारों में असंतुलन उत्पन्न होगा। जीवन साथी के प्रति मन में उपेक्षा का भाव रहेगा। कहीं से अचानक बड़ी धनराशि प्राप्त होगी। परीक्षा में सफलता संदिग्ध है। स्त्री वर्ग के प्रति विशेष झुकाव रहेगा और वे सहयोगी भी सिद्ध होंगी। धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का विकास होगा। यात्राएं मनोरंजक व लाभदायक सिद्ध होंगी।
अनुकूल दिवस- रविवार।
अनुकूल रंग- हल्का हरा।

★

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०२.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ५	उच्छिष्ट गणपति सिद्धि दिवस
०५.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ८	सीता अष्टमी
०८.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ११	विजया एकादशी
१०.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण १३	शिवरात्रि
१२.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ३०	हर गौरी सिद्धि दिवस
१५.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ३	वेताल सिद्धि दिवस
१७.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ५	काया कल्प दिवस
२०.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ८	होलाष्टक
२३.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ११	आमलकी एकादशी
२७.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल १५	होलिका दहन
२८.०३.६४	चैत्र कृष्ण १	वसंत सिद्धि उत्सव
२६.०३.६४	चैत्र कृष्ण २	भ्राता पूर्णायु सिद्धि दिवस
३१.०३.६४	चैत्र कृष्ण ५	अपूर्ण इच्छा पूर्ण दिवस
०४.०४.६४	चैत्र कृष्ण ६	मन इच्छा पूर्ण सिद्धि दिवस
११.०४.६४	**चैत्र शुक्ल १**	**नवरात्रि प्रारम्भ**
१६.०४.६४	चैत्र शुक्ल ५	श्री पंचमी
१६.०४.६४	चैत्र शुक्ल ८	दुर्गा अष्टमी
२०.०४.६४	चैत्र शुक्ल ६	राम नवमी
२१.०४.६४	**चैत्र शुक्ल १०**	**पूज्यपाद सद्गुरुदेव जन्म दिवस**
२२.०४.६४	चैत्र शुक्ल ११	कामदा एकादशी
२५.०४.६४	चैत्र शुक्ल १५	हनुमान जयन्ती

सिद्धाश्रमः स्वर्ग तुल्यो नराणां

सिद्धाश्रम के निर्माण से सम्बन्धित ट्रस्ट की योजना का पाठकों ने ललक के साथ स्वागत किया है जिससे प्रतीत होता है कि समस्त साधकों के मध्य चेतना का अभाव नहीं है केवल उसे सही मार्ग दर्शन एवं प्रकट होने की आवश्यकता है।

कुछ प्रमुख सदस्यों एवं वर्षों से पूज्यपाद गुरुदेव से जुड़े शिष्यों ने अपनी मनोभावनाओं और आगामी योजनाओं एवं प्रयासों से हमें अवगत कराना भी प्रारम्भ कर दिया है जिससे यह लगने लगा है कि यह महत्वपूर्ण एवं युग परिवर्तनकारी योजना शीघ्र ही मूर्त रूप लेने की ओर अग्रसर हो जाएगी . . .

मैं पूज्य गुरुदेव से १८ से भी अधिक वर्षों से जुड़ा हुआ हूं और संस्था के प्रारम्भ होने से आज तक इसकी प्रत्येक गतिविधि से जुड़ा रहा। मैं जनसामान्य के बीच में कार्य करते समय अनुभव से यही समझ पा रहा था कि इस युग में कोई विशेष कार्य संस्थात्मक रूप से किए बिना पूरा नहीं किया जा सकता। मैं एक प्राध्यापक हूं और इस बात को पूरी गम्भीरता से बराबर अनुभव कर रहा था मैंने कई बार दबे स्वर में पूज्य गुरुदेव से इसके लिए प्रार्थना भी की थी। लेकिन उनका स्पष्ट दृष्टि कोण था कि भवन निर्माण से भी पहले योग्य साधकों का निर्माण अधिक आवश्यक है। अब जबकि देश के कोने - कोने में साधना शिविरों की लम्बी श्रृंखला सम्पन्न हो चुकी है, ऐसा लगता है कि पूज्यपाद गुरुदेव को सन्तोष हो गया है कि अब संस्था में कार्य करने के लिए योग्य साधकों का अभाव नहीं रह गया है।

इसी से अगले चरण भवन निर्माण एवं इस **धरती पर सिद्धाश्रम** की दूसरी प्रतिकृति तैयार करने के लिए योजना को उन्होंने कृपापूर्वक अपनी स्वीकृति दे दी है। यह हम सभी के लिए बहुत प्रसन्नता की बात है मेरी तो हार्दिक इच्छा है कि इसी योजना के लिए हरियाणा का रोहतक नगर चुना जाय। जो राजधानी के व्यस्त क्षेत्र से अलग होते हुए भी राजधानी से बराबर जुड़ा और नजदीक है। हालाकि भवन निर्माण और भूमि के विक्रय में बहुत अधिक अन्तर पड़ने की सम्भावना नहीं है क्योंकि जो भूमि दिल्ली में ५० हजार रुपये वर्ग मीटर है वही दिल्ली - हरियाणा सीमा पर ३० से ३५ हजार रुपये वर्ग मीटर की दर से है। लेकिन इस अन्तर का लाभ उठाकर भूमि और अधिक खरीदी जा सकती है क्योंकि संस्था के कार्य तो विविध प्रकार के होंगे।

चन्दासिंह पहल
रोहतक

मेरी गुरु जी से टेलीफोन पर बातचीत हुई। मैंने उनसे फिर अपनी बात कही कि **सिद्धाश्रम के निर्माण** के लिए लखनऊ के आस-पास भूमि देखूं, क्योंकि लखनऊ बहुत ही साफ सुथरा और भारत का मुख्य नगर है किन्तु पूज्य गुरुजी का यही मत था कि इसे देश की राजधानी के आस-पास ही होना चाहिए। जिससे भारत के प्रत्येक व्यक्ति से सीधा जुड़ सके. . . मैं भिलाई में पिछले वर्ष सम्पन्न हुई नवरात्रि में की गई अपनी घोषणा पर स्थिर हूं। मैंने योगदान के रूप में जो धन राशि देने की बात कही थी। वह तो मेरा अपना योगदान होगा साथ ही अपने नगर के अन्य गुरु भाइयों से सम्पर्क कर मैं जो धन राशि एकत्र करूंगा वह इसके अतिरिक्त ही होगी।

गिरजाशंकर पाण्डे ,
फैजाबाद

छः साल पहले पत्रिका में एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसका तात्पर्य था कि पूज्य गुरुदेव ने किसी को भी संस्था में पद देकर वास्तव में उसे ही सम्मानित किया है और जब वह पद छोड़ने की बात करता है तो आश्चर्य और उसकी बुद्धि पर विस्मय होता है। मुझे यह बात सदैव याद रहती है और जागरूक बनाए रखती है। गुरुदेव की अत्यन्त कृपा है कि उन्होंने कई बार मेरे ऊपर शिविर संचालन की जिम्मेदारी सौंपी और सन्तुष्ट रहे। आज उनकी ही आज्ञा से मैं अपने सम्पूर्ण तन-मन धन के साथ कार्य करने के लिए अपने को समर्पित करता हूं। शिविर के माध्यम से तो सीमित समय के लिए कुछ सौ व्यक्ति ही लाभ प्राप्त करते हैं जबकि इस प्रकार से संस्था की स्थाई रूप रेखा बन जाने पर हजारों - लाखों ही नहीं आने वाली पीढ़ियां भी अपना जीवन सुधार सकेंगी।

यह हम सभी का सौभाग्य है कि जो पूज्य गुरुदेव की इस युग परिवर्तनकारी योजना में हम सहायक बन रहे हैं। मैं ५० हजार रुपये अभी तक प्रदान कर चुका हूं शेष

धनराशि के लिए **''त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेवं समर्पयेत''** के भाव से अपने क्षेत्र में कार्य कर रहा हूं।

एस. के. मिश्रा,
इलाहाबाद

सैनिक अधिकारी के रूप में व्यस्त जीवन होने के बाद और लगातार दूर रहने के बाद भी यह पूज्य गुरुदेव की कृपा रही कि मैं समय - समय पर साधना शिविरों में भाग लेकर ज्ञान और व्यक्तिगत लाभ प्राप्त कर सका। सैनिक अधिकारी होने के कारण और कठोर अनुशासन में बंधे रहने के कारण मेरे लिए यह तो सम्भव नहीं है कि मैं अन्य गुरुभाइयों की तरह धन एकत्र करने में अथवा व्यक्तिगत रूप से कोई बड़ी धन- राशि देने में सफल हो पाऊं। लेकिन जहां तक किसी अन्य प्रकार से और अपने प्रोफेशन की सीमा में रहते हुए मैं सहयोग कर पाऊंगा उसके लिए हमेशा तैयार हूं। मैं व्यक्तिगत रूप से कुछ धन राशि भेज रहा हूं किन्तु इसका उल्लेख सार्वजनिक रूप से न करने के लिए भी प्रार्थना कर रहा हूं। कृपया मुझे बताइये कि मैं किस प्रकार से इस ट्रस्ट की योजना में अपना योगदान दे सकूं।

कर्नल गणपति ,
पूना

पिछले वर्ष जब पूज्य किंकर स्वामी जी का पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुआ एवं सभी लोग अन्दर तक से हिल गए तब डॉ. एस. के. बनर्जी द्वारा किया गया आह्वान एक सार्थक कदम था। पूज्यपाद गुरुदेव जैसी उच्चतम आध्यात्मिक विभूति को यदि इस धरा पर अभी और कुछ समय आग्रह करके रोका जा सकता है तो केवल एक नए सिद्धाश्रम का निर्माण करके। मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह नूतन सिद्धाश्रम जिसका निर्माण **डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली फाउण्डेशन इंटरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट** द्वारा किया जा रहा है, न केवल अपने स्थापत्य और भवन निर्माण कला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हो वल्कि पूज्यपाद गुरुदेव के हजारों शिष्यों में से चुने हुए शिष्य आगे आकर इसमें सक्रिय रूप से कार्य करें। धन की तो आवश्यकता सवसे ऊपर है ही लेकिन धन के साथ - साथ हमें उस लक्ष्य पर भी निगाह रखनी है, जब यह संस्था बन कर तैयार हो जाएगी। मैं इसके इसी स्वरूप के बारे में निरन्तर सोचता रहता हूं। यही हमारी गुरु चरणों में सच्ची गुरु दक्षिणा है। मैं नहीं जानता कि मैं किस रूप में अपना सहयोग प्रस्तुत करूं किन्तु वर्तमान में धन की आवश्यकता सवसे अधिक होने के कारण अपने व्यक्तिगत प्रयासों व अन्य माध्यम से धन एकत्रित कर ७५ हजार का ड्राफ्ट पूज्यपाद गुरुदेव की सेवा में भेज रहा हूं। यह मेरे योगदान की प्रथम किस्त है, शेष प्रभु मुझे जिस अनुरूप सामर्थ्य देंगे। मैं उसमें कोई भी कोताही नहीं करूंगा।

जिगनेश एस. पटेल ,
खण्डवा

मैं अपने देश के पिछड़े कहे जाने वाले प्रान्त विहार के एक अविकसित क्षेत्र में कार्य करते हुए ये देख रहा हूं कि हमारे देश के पिछड़े कहे जाने वाले नागरिक भी उन तथाकथित वैज्ञानिक युग में जीने वाले नागरिकों से कहीं अधिक अच्छे हैं क्योंकि हमारे देश में अभी भी धर्म का महत्व नहीं भूले हैं और जिस प्रकार से पिछड़े कहे जाने वाले आदिवासियों के बीच में तंत्र के गुप्त प्रयोग मिलते रहते हैं उससे तो भारतीय विद्या के प्रति नतमस्तक हो जाना पड़ता है। ये विद्याएं लुप्त न हो जाएं या इनका दुरूपयोग न हो, ट्रस्ट इस कार्य में अवश्य सहायक होगा, जिसके द्वारा अनेक पद्धतियों का संरक्षण हो सकेगा, लाइब्रेरी बनेगी और शोध कार्य किए जा सकेंगे। संयोग से मुझे मेरे गुरुदेव पूज्यपाद डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी मिले। जो निश्चित रूप से मेरे कई जन्मों से गुरु हैं। मुझे उनके संग रहकर साधना करने पर इसके प्रमाण भी मिले। मैं तो अपना तन - मन धन सभी कुछ कब का समर्पित कर चुका हूं। मैं गुरु आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूं कि कब वे मुझे बुलाएं और मैं दौड़ता हुआ आकर अपनी पूरी क्षमता के साथ इस कार्य में लग जाऊं।

डॉ. आशीष भट्टाचार्य,
धनबाद

हिमाचल प्रदेश सभी प्रकार शांत जगह है और गुरुदेव का बहुत लम्बा समय मलानी व उसके आस -पास व्यतीत हुआ है इससे उन्हें हिमाचल प्रदेश के बारे में कुछ विशेष अधिक बताने की आवश्यकता नहीं है। दूसरे प्रांतों को देखते यहां पर लड़ाई झगड़े भी नहीं है और प्राकृतिक दृष्टि से बहुत अधिक सुन्दरता बिखरी पड़ी है। यहां के कलकल करते नदियों के बीच में सहज ही व्यक्ति का ध्यान लग सकता है और संस्था के निर्माण के लिए ऐसा स्थान उचित रहेगा। यह अवश्य है कि यहां पर बहुत बड़ा भवन एक साथ नहीं बनाए जा सकेगा लेकिन संस्था का कोई भाग जैसे आयुर्वेद सम्बन्धी रिसर्च का काम आदि। यहां पर भी स्थापित किया जा सकता है यदि पूज्य गुरुजी मुझे अनुमति दें तो मैं इस दिशा में अपनी ओर से स्थान आदि ढूंढ कर आपको समाचार भेजूं।

आपका
एम. आर. वशिष्ट
मण्डी (हि.प्र.)

धन - सम्पत्ति को अक्षय करने का पर्व

अक्षय तृतिया

जीवन में भाग्योदय न हो रहा हो या कोई विशेष कार्य आरम्भ करने के लिए उचित मुहूर्त न निश्चित कर पा रहे हो तब अक्षय तृतिया एक स्वतः सिद्ध मुहूर्त है ही जो हयग्रीव अवतरण की जयन्ती भी है. . .

होली का उमंग भरा पर्व और नवरात्रि का चैतन्यता से भरा काल बीत जाने के बाद आ जाती है ग्रीष्म की कड़ी ऋतु, ज्यों शैशव और यौवन का आनन्द बीत जाने के बाद गृहस्थ की कर्मठ भूमि साधक के जीवन में आ जाती है। इस तपन में झुलसन नहीं है, जीवन की एक अलग शैली है जो आवश्यक भी है। दूध से भरे अन्न कण कुछ कड़ी धूप पाकर ही रसमय होते हैं, प्रौढ़ होते हैं और फिर सुनहरे स्वर्ण कणों में बदल कर ही साक्षात् लक्ष्मी का ही आगमन प्रकट करते हैं।

यह माह होता है बैसाख का जब धूप की तपन थोड़ी बढ़ जाती है और दिन हल्के से बोझिल हो जाते हैं , तभी फिर से जीवन में नूतनता का संचार करता हुआ आता है अक्षय तृतिया का पर्व। **अक्षय यानी कि जिसका क्षय न हो,** जो चिर स्थायी हो, नित नूतन हो, नित यौवन से भरा हो, तपन से भरे हुए दिनों में यह मां भगवती अन्नपूर्णा के ही स्वागत का ही एक अवसर है, यही फसल कटने का समय भी है और घर में धन- सम्पदा आने का भी। **जो लक्ष्मी सैकड़ों - सैकड़ों दानों में खनकती हुई घर में ऐश्वर्य और लावण्य बिखेरती हुई आती है, यह उन्हीं के स्वागत का पर्व है, यह उन्हीं को चिरस्थायित्व भी देने का पर्व है, यह उन्हीं को अक्षय कर लेने का पर्व है।**

इसे नवान्न पर्व भी कहा जाता है। यही भगवान विष्णु के हयग्रीव अवतरण का भी दिवस है और प्रखर पुरुष परशुराम के जयन्ती का दिवस भी। मां भगवती पार्वती का भी पूजन इसी दिवस पर किया जाता है और यदि तृतीया में चतुर्थी विद्ध हो जाए तो गणपति साधना का अनुपम अवसर उपलब्ध होता है। संयोग से इस वर्ष ऐसा ही हो रहा है।

सच पूछा जाए तो यह एक कर्मठ गृहस्थ व्यक्ति का ही पर्व है क्योंकि गृहस्थ ही अपने पूरे जीवन भर कर्मठता की मन्द ऊष्मा में लिपट कर गतिशील रहता है, उसी के लिए यह भी आवश्यक है कि जीवन में अक्षय स्थिति प्राप्त हो क्योंकि दायित्व भी उसके साथ सबसे अधिक होते हैं। अक्षय तृतिया गृहस्थ साधक के जीवन का सौभाग्य है। **भविष्य पुराण** में वर्णित है कि इस दिन जो भी साधना की जाए, जो भी कर्म किया जाए वह अक्षय ही होता है अर्थात् उसके शुभ फलों में कोई न्यूनता नहीं आती। बुंदेल खण्ड एवं मालवा में इसी से विशेष रूप से सौभाग्यवती स्त्रियां इस दिन पार्वती पूजा करती हैं और **विवाह के मुहूर्त के रूप में भी यही दिवस सर्वश्रेष्ठ माना गया है जो इस वर्ष दिनांक १३.०५.९४ को पड़ रहा है।**

गृहस्थ साधक के जीवन का आधार होता है लक्ष्मी अर्थात् धन - सम्पदा, श्री, वैभव एवं लक्ष्मी का प्रत्येक रूप, और अक्षय तृतिया तो लक्ष्मी का मां भगवती अन्नपूर्णा का भगवान विष्णु का संयुक्त फलदायक दिवस है और इस अवसर को सफल बनाने के लिए, जीवन में लक्ष्मी को स्थायी करने के लिए सुख -सम्पदा की निरन्तर वृद्धि के लिए **वैष्णव तंत्र** में एक विशेष प्रयोग वर्णित किया गया है जिसे **अक्षय पात्र साधना** कहा गया है।

विश्वामित्र संहिता में इसी साधना को कई नामों से पुकारा गया है — **हेमगर्भ साधना, अक्षय पात्र साधना, कनक वर्षा साधना, मनोवांछा पूर्ति साधना इत्यादि**। यदि इसका सार निकालें तो स्पष्ट होता है कि लक्ष्मी के सैकड़ों रूपों को जिस प्रकार से साधकों ने अलग - अलग ढंग से देखा उसे उन्होंने अपने - अपने ढंग से साधने का प्रयत्न किया। किन्तु इस सभी साधनाओं व इनकी पद्धतियों का सूक्ष्म विवेचन करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि मूल रूप से सभी में **अक्षय पात्र अर्थात स्वर्ण पात्र** की आवश्यकता ही मुख्य है। जो लक्ष्मी के चिरस्थायित्व का आधार बनता है। **कुबेर तंत्र, वशिष्ठ संहिता, विश्वामित्र संहिता, कामदेव तंत्र, शंकराचार्य समुच्चय** इन सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थों मेंअक्षय पात्र को जीवन की मूलभूत आवश्यकता कहा गया है। यहां तक कि शंकराचार्य ने तो इसे गृहस्थ साधकों के साथ - साथ सन्यासी साधकों को भी सम्पन्न करने योग्य एक आवश्यक और समर्थ साधना कहा है, जिसके द्वारा उनके आश्रम में लक्ष्मी चिरस्थायी हो सके।

जब **भगवान श्री राम** राजसिंहासन में बैठने को हुए तब वशिष्ठ ने स्वयं राजसिंहासन से पहले राम को स्वयं अक्षय पात्र से सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने की सलाह दी थी, जिससे उनका राज- कोष धन- धान्य से सम्पूर्ण और अक्षय बना रहे। इन्द्र ने स्वयं इस साधना को भगवान शिव से सीख कर पूर्णता के साथ सम्पन्न किया। **कृष्ण** ने अपने गुरु सांदीपन से यह साधना पूर्णता के साथ सीखी और द्वारिका जैसे नगर का निर्माण कर सके, जहां उन्होंने महाराजाओं के समान जीवन व्यतीत किया।

केवल यहीं तक नहीं नाथ सम्प्रदाय में और जैन सन्तों के मध्य भी अक्षय पात्र का सर्वाधिक वर्चस्व रहा। इसी को आधार बनाकर इन सभी साधुओं और योगियों ने थोड़े से परिवर्तन के साथ अलग - अलग साधना पद्धतियां ढूंढी किन्तु मूल साधना अक्षय पात्र साधना ही है, और यह अक्षय तृतिया के दिन सम्पन्न करने पर एक विशेष तादात्म्य बनता है जिससे साधक को पूरे जीवन भर अक्षय फल प्राप्त होता है। **यह मिथ्या धारणा है कि लक्ष्मी चंचला है और टिकती नहीं। लक्ष्मी भी तो मां भगवती जगदम्बा का ही एक स्वरूप है किन्तु उसे स्थायित्व देने के लिए एक आधार चाहिए।** साधनाएं और विशेष उपकरण इसी क्रिया में सहायक बनते हैं।

न केवल धन व ऐश्वर्य वरन पूर्ण पौरुषता बल और पराक्रम की प्रतीति भी होने लगती है, कामदेव के समान मोहक और सक्षम, स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल. . .

यही अक्षय पात्र साधना का रहस्य है

— कामदेव तंत्र

अक्षय पात्र

यह विशेष प्रकार से प्रकृति द्वारा रचित शंख का एक प्रकार है जिसे स्वर्ण पात्र भी कहा गया है अर्थात् जो स्वर्ण के समान बहुमूल्य और लाभदायक हो। इसकी रचना अत्यन्त सुन्दर और सुडौल होती है जैसी कि किसी अन्य शंख की नहीं होती।

इस शंख को प्राप्त कर इसे अक्षय तृतिया की साधना हेतु अलग ढंग से प्राण - प्रतिष्ठित करना पड़ता है और साधक ऐसे दुर्लभ पात्र को अपने घर में स्थापित कर सकता है अथवा जहां अन्न भण्डार हो, व्यापार स्थल, फैक्टरी का ऑफिस हो अथवा धन प्राप्ति का कोई भी स्थान हो वहां भी स्थापित कर सकता है।

साधना विधि —

इस साधना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अक्षय पात्र ही है और इसका सम्बन्ध केवल दिवस विशेष अर्थात् अक्षय तृतिया से ही है। इस साधना को केवल १३.०५.९४ को ही सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को चाहिए को वे पहले से ही चावल के १०८ दाने चुनकर उसे एक पात्र में रख लें जिसमें कोई भी दाना खण्डित न हो। अक्षय पात्र को चावलों की ढेरी पर स्थापित कर घी के दीपक व अगरबत्ती से पूजन कर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का जप करता हुआ एक - एक दाना पात्र में डालते जाएं।

मंत्र —

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं अक्षयपात्र अधिपताय नमः

यह देखने में ही एक लघु साधना है किन्तु इसका प्रभाव अक्षय होता है, ध्यान रखना है कि चावल का कोई भी दाना साधना के दौरान बाहर न गिरे और मंत्र जप समाप्त होने पर पात्र को चावलों सहित किसी डिब्बी या ऐसी जगह सुरक्षित कर लें जहां चूहे आदि का डर न हो। आगे चलकर यह साधना पुनः अगले वर्ष सम्पन्न की जा सकती है। एक माह बीतने के बाद चावल के दानों को निकाल कर पवित्र सरोवर या पवित्र नदी में फूलों के साथ विसर्जित कर दें तथा **इस दुर्लभ अक्षय पात्र को अपनी श्रद्धानुसार दुकान, व्यापारिक स्थल अथवा फैक्टरी में भी स्थापित कर सकते हैं।**

यही कर्म योग है

१३.०७.८६ — मेरा २३ वां जन्मदिन मेरे लिए अद्वितीय सौभाग्यदायक सिद्ध हुआ। उसी दिन मुझे मेरे इस जन्म में पूज्य गुरुदेव का प्रथम साक्षात् दर्शन प्राप्त हुए - उनसे मुझे पहला आशीर्वाद मिला **''आयुष्मान भव''**, और तब से आज तक, सात साल की मेरी इस जीवन यात्रा पूज्य गुरुदेव की कृपा प्रसाद स्वरूप अनिवर्चनीय उर्ध्वगामी परिवर्तनों से भरी पड़ी है।

मैं जो २३ साल तक बुखार और गले की बीमारियों से बराबर पीड़ित रहता था, वह पूज्य गुरुदेव से मिलने के बाद तो बीमारियों से मेरा रिश्ता ही नहीं रहा है। मुझे गुरुदेव ने अगर सही शब्दों में कहूं तो — मृत्यु से अमृत्यु की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर कर दिया है। **''कुण्डलिनी चैतन्य दीक्षा''** और **''सहस्रार जागरण दीक्षा''** के बाद तो मैं अपने रोम - रोम में चैतन्यता अनुभव कर रहा हूं।

उन्होंने मुझे उनकी असीम कृपा से प्रसाद स्वरूप विशेष रूप से **'गुरु सिद्धि दीक्षा'** प्रदान की और **'तांत्रोक्त गुरुमंत्र'** प्रदान किया।

मैं आज दावे के साथ कहता हूं कि पहले मुझे **'काली मंत्र'** और **'धूमावती मंत्र'** की साधना उग्र तेजस्वी लगती थी, मंत्र जप के दौरान शरीर में अधिक उष्णता महसूस होती थी **लेकिन 'तांत्रोक्त गुरुमंत्र' सभी मंत्रों में मंत्र राज है जो कि सर्वाधिक तेजस्वी मंत्र है। जिसके निरन्तर दिन- रात जप से महसूस होता है कि मेरे शरीर के सभी अणुओं का निरन्तर विखण्डन हो रहा है देह में असीम ऊर्जा प्रगट हो रही है,** प्राण शरीर इस स्थूल शरीर से अलग सा होकर मंत्र-जप करता हुआ बाकी के शरीर को भेदने की क्रिया में संलग्न है। मुझे निरन्तर ऐसा महसूस होता है कि मेरी आत्मा इस देह से परे हटकर मेरे सभी क्रियाकलापों की द्रष्टा बन गयी है। **'विचार शून्य मस्तिष्क'** की अवस्था के आनन्द का मैं अवगाहन करने लगा हूं, और साथ ही साथ ऐसा भी महसूस होता है कि मेरे पूर्वजन्म के सभी दोष - विकार अन्दर से बाहर निकल रहे हैं और दिन - ब - दिन मैं निर्मल होता जा रहा हूं, और ऐसा लगता है कि पूज्य गुरुदेव हर क्षण मुझमें सूक्ष्म रूप से विद्यमान है, हर क्षण उनकी ही छवि मेरे मानस में बनी रहती है।

मैं अन्य गुरुभाइयों के साथ अपने जिले और समीपवर्ती क्षेत्रों में पूज्यपाद गुरुदेव के विषय में **''श्री निखिलेश्वर ज्ञान चेतना केन्द्र (चेरिटेबल ट्रस्ट)''** बना कर प्रचार व प्रसार तो कर ही रहा हूं साथ ही केबल टी. वी. के माध्यम से पूज्य गुरुदेव के कैसेट प्रदर्शित करते हुए गुजराती भाषा में पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धित, पत्रिका में प्रकाशित लेखों का अनुवाद कर उन्हें भी जनसामान्य में वितरित कर रहा हूं। लोगों के अन्दर एकदम से पूज्य गुरुदेव से मिलने की ललक बढ़ती जा रही है। भविष्य में पत्रिका को घर - घर पहुंचाने के साथ - साथ लाइब्रेरियों और सामाजिक संस्थाओं में अपने खर्चे से उपलब्ध करा रहा हूं। अगर आप इसे अतिशयोक्ति नहीं समझे तो मैं पूज्य गुरुदेव की कृपा से एक **'कर्मयोगी'** की भांति निरन्तर गतिशील रहता हूं।

देवेन्द्र कुमार शांतिलाल पंचाल
८/२०२, दीप सागर अपार्ट०
२ माला, बैंक ऑफ बड़ौदा के पीछे
उदवाडा, वलसाड (गुजरात)

गुरु चरनन की कृपा भई जब

सद्गुरु अर्थात् जो सत्य है, शाश्वत है, अजन्मा है, अविनाशी है, जो सब कुछ है। जिनके वर्णन के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है।

हे गुरुदेव! मैंने आपकी प्रेरणा से २ मई १९९३ को **भैरव मंत्र सवा लाख जप का अनुष्ठान, अपने कष्ट निवारणार्थ संकल्प लिया** और तारीख २२ मई १९९३ (रोहिणी नक्षत्र सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग) के दिन जप कार्य सम्पन्न किया।

मैं जब भी भैरव जी भगवान का ध्यान लगाती मुझे सद्गुरुदेव कभी शिवरूप में माता पार्वती के साथ कैलाश पर मुस्कराते दिखते, तो कभी रूप बदल कर सद्गुरु और माता जी के रूप में दिखते।

जिस दिन जप सम्पन्न हुआ उस दिन मेरा ध्यान लग नहीं रहा था। १० - ११ माला मंत्र जप ही हुआ था कि अचानक गुरु चरणों में मुझे कभी सांवले से शिव स्वरूप कभी नाग, तो कभी काल भैरव दिखाई देते मैंने बटुक भैरव का ध्यान लगाने की बहुत कोशिश की पर ध्यान में सिर्फ काल भैरव ही दिखाई देते, मैंने कई बार आंख मींची शायद कहीं यह भ्रम तो नहीं, पर गुरु चरणों में श्वेत वस्त्र पहने काल भैरव पूरे जाप काल तक उपस्थित रहे।

इस पूजन के ३ दिनों बाद मुझे मेरे पूजन का फल उचित दिशा में प्राप्त हुआ अर्थात् काफी कुछ कष्ट दूर हुआ। मैं बहुत परेशान थी अब मैं कुछ हल्कापन अनुभव कर रही हूं, यह सब सद्गुरुदेव की कृपा का फल है।

जरूर सद्गुरुदेव ने मुझे उज्जैन में महाकालेश्वर के विश्रामगृह में जो आशीर्वाद दिया था वह आशीर्वाद सदैव मुझे सद्गुरुदेव के सन्मार्ग में लाने में प्रेरित करता रहेगा।

कु. ओमकेश्वरी कुर्रे
मठपारा, मकान नं. २८/२२
बजरंग चौक, रायपुर (म.प्र.)

(पृष्ठ २० का शेष)

प्रत्यक्षीकरण तथा शेष का ज्ञान व ब्रह्माण्ड साधना जैसी विशिष्ट स्थितियों में निष्णात करने के बाद पूज्य गुरुदेव ने सहस्रार चैतन्य करते हुए मुझे सहस्रार भेदन की ओर अग्रसर कर दिया जिससे रह - रह कर समाधि सुख का आनन्द मिलने लग गया। मैं घण्टों-घण्टों अपने ही आनन्द में निमग्न रहने की कला जान गया।

और यही दिन थे जब मैंने गुरुदेव के सभी रूपों के दर्शन किए। जहां वे पितृ स्वरूप में कर्त्तव्य पालन के लिए अत्यन्त कठोर थे वहीं मातृ स्वरूपा बनकर एक - एक क्षण का ध्यान रखने वाले और पालन- पोषण करने वाले भी थे। वे बन्धु भी बने, सखा भी बने और साधना की कड़ोर स्थितियों में भी मैं निरन्तर उनका एक हाथ अपने अन्दर सहारा देते हुए भी पाता रहा। मैं कभी-कभी सोचता भी कि ऐसा क्या है जो गुरुदेव मेरे साथ इतना अधिक परिश्रम कर रहे हैं। कोई भी हेतु तो समझ में नहीं आता था और मुझे कोई ऐसा भ्रम या अहंमन्यता भी नहीं थी कि मैंने पूर्वजन्म में कोई पुण्य किए होंगे जिसके फलस्वरूप पूज्य गुरुदेव जैसे व्यक्तित्व का साहचर्य मिल सका है, कृपा प्राप्त हो सकी है।

किन्तु परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के लिए केवल एक ही शब्द कहा जा सकता है कि वे अद्वितीय हैं, क्षमा और करुणा की साक्षात् मूर्ति हैं। जिनका एक - एक क्षण अपने शिष्य को गढ़ते हुए उसे पूर्णता की ओर ले जाने के लिए समर्पित है। उनके स्वयं के जीवन में सुख, दुख या अन्य किसी भी स्थिति का कोई महत्त्व ही नहीं है और ऐसा केवल एक या दो शिष्य के साथ ही नहीं वरन लाखों- लाख सन्यस्त व
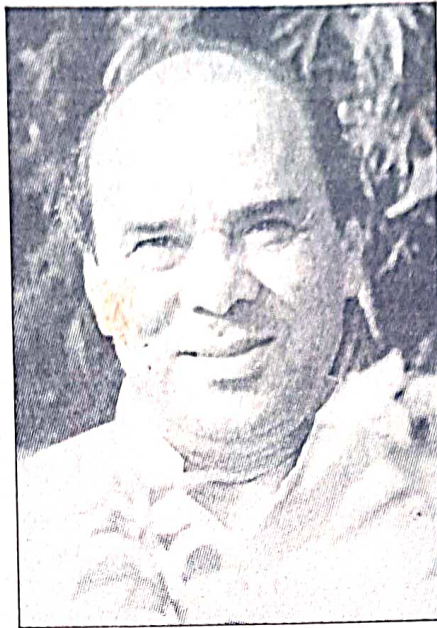
केवल एक या दो वर्ष नहीं, कई-कई जन्मों तक गुरुदेव गढ़ते रहते हैं अपने शिष्यों को कि वे उस ब्रह्मानन्द की अनुभूति कर सकें

गृहस्थ शिष्यों के साथ अहर्निश कर रहे हैं। जबकि व्यक्ति को जन्म देने वाले माता- पिता भी बीस-पच्चीस वर्ष बाद पालन - पोषण करने में थक जाते हैं, वे युगों-युगों तक अपने शिष्य को गढ़ते ही रहते हैं कि वह पूर्ण हो सके, उस सत्य का साक्षात्कार कर सके जिसे परमानन्द कहा गया है। वास्तव में उनके प्रति कोई विचार व्यक्त करना ही उनकी उच्चता पर एक आघात है क्योंकि यह मेरी या किसी भी शिष्य की सामर्थ्य ही नहीं कि उनका मूल्यांकन कर सके। वे मूर्त रूप में गुरुपद की इस धरा पर एक सजीव प्रस्तुति हैं।

मैं अपना सब कुछ छोड़कर उनके समक्ष एक शिशु के समान ही अबोध बन गया या यों कहूं कि उनका मातृत्व ही इतना प्रबल था जिससे मेरे अन्दर एक शिशुत्व आ गया। शेष रह गयी साधनाएं तो कौतुक मात्र रह गयीं, फिर आया वह १२ जनवरी का चिर प्रतीक्षित दिन!

. . . .१२ जनवरी, प्रातः से ही पूज्य गुरुदेव का दैदीप्यमान मुखमण्डल अतिरिक्त स्नेह की ओस से भीगा - भीगा, तृप्ति से रसमय था, जब उन्होंने मुझे अपने समीप बुलाया और कहा कि -- **"बस आज. . . आज रात्रि में ही!"** मैं उनका संकेत समझ गया और मेरे मन में भी कोई उद्वेलन शेष नहीं रह गया था। यह नगण्य सा जीवन जिन पर आश्रित हो चुका था और जिनकी इच्छा ही शेष रह गयी थी कि वे कहां रखें, कैसे रखें, उसमें उद्वेलन या उछाल जैसी स्थिति ही कहां? फिर भी मन में एक असीम शान्ति छा गयी कि आज तक जिन पुण्य विभूतियों का केवल नाम पढ़ा था, जिनके बिम्बवत् दर्शन प्राप्त हुए -- **परमहंस स्वामी त्रिजटा अघोरी जी, किंकर स्वामी जी, स्वामी निर्भयानन्द जी,परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द जी** उनका साक्षात् कर सकूंगा, देवताओं को भी अप्राप्य जिन अप्सराओं का नाम भी कोई नहीं जानता, उनके अनिन्द्य सौन्दर्य को परख सकूंगा और उस सिद्धयोगा के जल में स्नान कर सकूंगा जिसका स्पर्श मात्र ही वृद्ध से वृद्ध व्यक्ति को चिरयौवनवान, वेगवान बना देता है। इन सभी से ऊपर उठ **पूज्यपाद परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी** का दर्शन कर सकूंगा जो इस ब्रह्माण्ड में देवत्व के आधार हैं, करुणा का अजस्र प्रवाह हैं, तप की साक्षात् मूर्ति हैं, पूर्ण चन्द्र की भांति शीतल हैं और मां भगवती जगदम्बा के समान स्मित हास्य से निरन्तर

आपूरित हैं, जिनकी स्तुति में तो कुछ कहा ही नहीं जा सकता।

पूरे दिन निराहार रहते हुए एक गोपनीय मंत्र का जप करने की पूज्य गुरुदेव की आज्ञा का पालन कर सायंकाल का झुटपुटा हो जाने पर मैं स्नान एवं सायंकालीन संध्या कर गुरुदेव के पास गया। उनका सारा शरीर और रोम - रोम अनिवर्चनीय आनन्द से भर गया था क्योंकि शिष्य से भी ज्यादा यह गुरुदेव के हर्ष का विषय जो था। उन्होंने मुझे एक हिरण चर्म पर बैठ ध्यानस्थ होने की आज्ञा दी और **अपने अंगूठे का स्पर्श मेरे आज्ञा चक्र पर किया, अगले ही पल मेरा शरीर रूई सा होकर कहीं तैर गया। मैं अपनी आंख खोलने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था और उस दिव्य आनन्द के समक्ष ऐसा करना भी नहीं चाह रहा था।** मैं एक पंख की ही भांति अपने- आप को हवा में तिरता पा रहा था और पूज्यपाद गुरुदेव का स्पर्श मुझे आश्वस्त कर रहा था।

जब मेरी आंख खुली तो जौलजीवि का स्थान नहीं अपितु राक्षस ताल का स्थान था। मैंने कभी चित्रों में राक्षस ताल को देखा था, इसी से मुझे उसे पहचानने में कोई त्रुटि नहीं हुई। राक्षस ताल से ही सिद्धाश्रम में प्रवेश का द्वार है, जिसे मैं गुरु आज्ञा से बद्ध होने के कारण अधिक स्पष्ट नहीं कर सकता। कुछ अत्यन्त उच्च कोटि की साधनाएं सम्पन्न करने के बाद ही यह मार्ग स्पष्ट हो सकता है और वास्तव में इसको वही देख सकते हैं जिनका सहस्रार पूर्ण रूप से जाग्रत हो। पूज्यपाद गुरुदेव को निरन्तर सिद्धाश्रम आते- जाते रहने के कारण वह मार्ग भली-भांति स्पष्ट था ही, क्योंकि सिद्धाश्रम की ही यह व्यवस्था है कि कुछ अत्यन्त उच्च कोटि के योगी समय - समय पर समाज के बीच में आते रहते हैं, जिससे भौतिकता और आध्यात्मिकता का एक सन्तुलन बना रहे। **ये व्यक्तित्व समाज में ठीक उन्हीं की भांति घुल-मिल जाते हैं, किन्तु जिनके अन्दर वास्तव में साधना के प्रति ललक और अपने जीवन को उच्चता तक ले जाने का आग्रह होता है, वे उनकी दिव्यता को पहचानते हुए, उनसे एकाकार होते हुए अपना जीवन सफल बना लेते हैं।**

राक्षस ताल. . .

यहीं से है सिद्धाश्रम में प्रवेश का मार्ग किन्तु उसे इन नेत्रों से नहीं वरन सहस्रार जागरण के बाद ही देखा जा सकता है, ज्ञान चक्षुओं व दिव्य चक्षुओं से. . .

राक्षस ताल के अन्दर से एक गुह्य मार्ग से निकलने के बाद पूज्य गुरुदेव एक स्थान पर ठिठक गए जहां सामने बर्फ से ढकी चट्टानों के सिवा कुछ भी तो नहीं था और एक प्रकार से मार्ग बन्द हो गया था, पूज्यपाद गुरुदेव के अस्फुट मंत्रोच्चार के बाद धीमे- धीमे एक प्रकाश का पुंज प्रकट हुआ और देखते ही देखते उस बर्फीले और उजाड़ पठारी क्षेत्र में आंखों के सामने एक सुरम्य स्थली दृष्टि गोचर हो उठी और एक पगडण्डी स्पष्ट हुई, जिसके बांयी ओर समुद्र की भांति अपार जल राशि लहरा रही थी। सारी धरती पर कोमल घास का मखमली गलीचा बिछा था और उस प्रकाश पुंज को पार करते ही ऐसा लगने लगा मानों बर्फीले प्रदेश की तीक्ष्णता से निकल किसी एयरकन्डीशन्ड बंद कमरे में आ गए हों। चारों ओर अत्यन्त मृदु प्रकाश दूधिया रंग में बिखरा था। इस प्रवेश द्वार के पास ही लक्षमुण्डी आश्रम है जिसके बारे में मुझे बाद में पता चला कि इसकी स्थापना पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा ही हुई थी। मेरा सारा शरीर रोमांच और एक विचित्र से आह्लाद से भर गया कि जिस स्थली का दर्शन करने के लिए देवगण भी व्यग्र रहते हैं और जिसमें प्रवेश पाने के लिए अत्यन्त कठोर नियम हैं, आज मैं उस स्थली में सशरीर हूं।

अपार जल राशि को देखकर मैं समझ गया था कि यह वही परम पवित्र सिद्धयोगा झील है जिसका स्पर्श तक सिद्धाश्रम वासियों को भी वर्जित था, किन्तु पूज्यपाद गुरुदेव के अथक प्रयासों से सभी को न केवल प्रवेश करने और स्नान करने की छूट मिली वरन अब तो देवांगनाएं और अप्सराएं इसी जल में जलपरी की भांति किलोलें करने के लिए भी स्वतंत्र हैं। पूज्य गुरुदेव ने आगे बढ़ने से पूर्व मुझे स्नान कर पवित्र व चैतन्य होने की आज्ञा दी और तैरने का अभ्यास न होते हुए भी उसमें प्रवेश कर मैं अपने- आप को इस प्रकार का अनुभव करने लगा ज्यों हवा से भरे नर्म गद्दों पर तैर रहा हूं। **मेरी जड़ता, अशक्तता और साधना काल में आ गई शरीर की शिथिलता, सब कुछ समाप्त हो गई। ऐसी स्फूर्ति तो मैंने जीवन में कभी अनुभव की ही नहीं थी।** यही नहीं मेरी त्वचा की रंगत बदल गयी और सफेद बाल भी

देखते ही देखते काले हो गए जिसका अनुभव मैंने पारदर्शी और शीशे की भांति स्वच्छ जल में अपना चेहरा देख कर किया।

मेरा आन्तरिक और बाह्य रूप से कायाकल्प हो गया था। मैं अपने- आप को पुनः सत्रह - अट्ठराह वर्ष की युवावस्था में पा रहा था। ठीक वैसा ही जोश और उमंग जो उन दिनों में होता था। जैसी मस्ती और गुनगुनाहट तब मेरे अन्दर थी, वैसी ही सारे तन और मन में एक झटके से आकर छलछला उठी। **स्फटिक जैसे शुभ्र पत्थर की नाव पर कुछ देवांगनाएं थोड़ी दूर पर जल उछालते हुए मधुर घण्टियों जैसे खिलखिलाहट से सारे वातावरण को गुंजरित कर रही थीं,** किन्तु अवसर की न्यूनता होने के कारण मैं पूज्य गुरुदेव के साथ बाहर निकल कर वस्त्र बदल आगे चल दिया।

सम्पूर्ण सिद्धाश्रम में पग-पग पर प्रकृति साधक की सहायक बनकर खड़ी रहती है और वह जिस वस्तु की कामना करता है वह उसे तत्क्षण शून्य से प्राप्त हो जाती है। मैंने अपने जीर्ण वस्त्र को त्याग शून्य से प्राप्त नवीन शुभ्र गैरिक वस्त्र धारण कर लिए।

कुछ और आगे बढ़ने पर जन शून्यता समाप्त होने लगी थी, और इक्का - दुक्का साधक योगीजन आते - जाते दिखने लगे थे। **लम्बा कद, गठा शरीर और अजानु बाहु, चेहरे पर असीम शान्ति तथा तन पर पड़े गैरिक वस्त्र** ज्यों वैदिक काल का वातावरण ही मैं अपनी आंखों से देख रहा होऊं। आश्चर्य में भरकर वे सभी एक क्षण ठिठक कर देखते और देखते ही देखते पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में साष्टांग बिछ जाते। पूज्यपाद गुरुदेव को प्रत्येक साधक और योगी का नाम याद था, और वे किसी के सिर पर हाथ फेर देते, किसी से दो क्षण उसका हाल पूछ लेते और वे कृत - कृत्य हो जाते। जाते - जाते अपनी स्नेहमयी मूक दृष्टि से वे अपना स्पर्श और आशीर्वाद मुझे दे जाते। ऐसा लग रहा था मैं अपने ही परिवार में आ गया हूं और परिवार में जिस प्रकार स्वागत से भी अधिक प्रेम दिया जाता है वही मेरे सारे तन-मन में समाता जा रहा था।

प्रकृति जहां कदम-कदम पर साधक की सहायक बनकर खड़ी है . . .

मन में कामना करते ही शून्य से सब कुछ प्राप्त है. . .

प्रकृति के रंग धीरे-धीरे अद्भुत होते जा रहे थे, न तो कहीं फूल मुरझा रहा था, न टूट कर गिरा दिख रहा था क्योंकि मृत्यु, वृद्धता, रोग का आक्रमण जिस प्रकार से सिद्धाश्रम स्थित योगियों के शरीर पर नहीं है उसी प्रकार वहां की प्रकृति और पशु - पक्षी के शरीर पर भी नहीं है। कभी कोई हिरन दिखाई पड़ जाता और कभी कोई अद्भुत सा पक्षी, जिनकी मधुर ध्वनियों से प्रकृति में अतिरिक्त सौन्दर्य घुला था।

आगे बढ़ने के साथ - साथ साधकों और योगियों का बाहुल्य होता जा रहा था और जैसा कि मुझे बाद में ज्ञात हुआ कि सिद्धाश्रम के प्रत्येक योगी ने अपने साधनात्मक जीवन में पूज्यपाद गुरुदेव से कभी न कभी मार्ग दर्शन लिया ही है, साधना के सूत्र प्राप्त किए ही हैं, और इसी से वे उन्हें देखते ही प्रणाम की मुद्रा में नत हो जाने लगे थे।

कुछ और आगे बढ़ने पर साधकों और साधिकाओं की कुटिया दिखाई देने लगी थी। पूज्य गुरुदेव को देखते ही वहां हलचल मच गयी। जो जिस हाल में था वैसे ही सब कुछ छोड़-छाड़ कर दौड़ पड़ा और आगे बढ़कर प्रणाम करने के लिए होड़ लग गयी। साधिकाएं तो भाव-विह्वलता से कुछ बोल ही नहीं पा रही थीं, और श्री चरणों से लिपट जाने के लिए व्यग्र हो उठी थीं किन्तु पूज्य गुरुदेव सभी को संक्षिप्त रूप से आशीर्वचन एवं सांत्वना देकर निरन्तर आगे बढ़ते ही रहे।

उन्होंने आगे चलने पर एक सन्यासी साधक को संकेत से अपने पास बुलाया और मुझे उनके साथ रहने को कहकर उस ओर अग्रसर हो गए जहां पूज्यपाद दादा गुरुदेव प्रातः स्मरणीय परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी की पर्ण कुटी है। सिद्धाश्रम के भी योगियों की स्पृहा और दर्शन की कामना की वह दिव्यतम स्थली जहां से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में आध्यात्मिकता का संचरण सम्भव हो सका है।

सन्यासी साधक जिनका नाम स्वामी कैवल्यानन्द था, उनके साथ मैं सिद्धाश्रम में विचरण करने लगा। सर्वत्र एक खुलापन, मौन और शान्ति! जब अन्य साधकों को ज्ञात हुआ कि मैं पूज्य गुरुदेव के साथ आया हूं तो वे कुछ कौतूहल से मेरे समीप आ गए। उनकी उत्कण्ठा और आग्रह को देखकर ही मैं सिद्धाश्रम में जाकर अनुभव कर सका कि वहां पर अन्य साधक इस बात से भी हतप्रभ और आश्चर्य चकित नहीं होते कि किसने कितनी. आयु में सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त कर लिया है या उसके पास क्या सिद्धियां

हैं, किन्तु जो साधक पूज्य गुरुदेव के संस्पर्श से वहां तक पहुंचता है, वे अवश्य ही उसके प्रति जिज्ञासु हो जाते हैं कि आखिर इसने क्या किया है, ऐसी कौन सी क्रिया सम्पन्न की है जो **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** का न केवल शिष्य बना वरन उनका साहचर्य प्राप्त कर इस दिव्य स्थली तक आ सका। पूज्यपाद गुरुदेव की उच्चता, दिव्यता और तेजस्विता ऐसी ही दिव्य स्थली पर, दिव्य साधकों के बीच जाकर समझी जा सकती है।

प्रत्येक साधक अपने-आप में पूर्ण स्वस्थ, चैतन्य और प्रेम में आकण्ठ डूबा हुआ, साथ ही उनकी देह से ऐसी मादक गंध निःसृत हो रही थी जिससे मन में अद्भुत सौन्दर्य का स्फुरण होने लग गया था। सारे वातावरण में मंगल ध्वनि की मन्द लहरियां स्वतः प्रवहित थीं और जिसे मैं धूल कहने की धृष्टता कर रहा हूं, वह हल्की स्वर्णिम और वास्तव में अष्टगंध ही थी। **विविध पुष्प, पक्षी, प्रकृति को पूर्ण यौवनवान बनाती हुई और इन सभी से भी ज्यादा मन को स्पन्दित करने वाली देवांगनाएं. . . प्रत्येक सौन्दर्यवती दूसरे से कुछ भिन्नता लिए हुए और इतनी कोमलगात मानों छूते ही बिखर जाएगी। अनिन्द्य सौन्दर्य और यौवन का ऐसा संगम जैसा कि न कभी देखा हो न कभी सुना** हो और मैंने देखा कि पूज्य गुरुदेव को देखकर उनकी आंखों में आंसू की बूंदें छल-छला उठी थीं, जैसे इतने दिनों की विरह पीड़ा और नहीं दबाई जा सकी। उनका प्रत्येक रोम-रोम आमंत्रण की ध्वनि दे रहा था. . . कुछ लज्जा से भरकर, तो कहीं कोई देवांगना किसी दूसरी देवांगना के पीछे से झांकती हुई, कोई किसी वृक्ष के पीछे से कनखियों से निहारती हुई

एक से अधिक सौन्दर्यवती दूसरी अप्सरा. . .

इतनी कोमलता मानो छूते ही बिखर जाएगी।

देह - सौन्दर्य को व्यर्थ में ही सजाने संवारने का प्रयास करती. . .

क्योंकि प्रकृति ने स्वयं ही उनको इतना उत्तेजक व मादक जो गढ़ा है!

और कोई - कोई शर्म को छोड़कर बीच राह हाथों को बांध दृष्टि को झुका कर अंगूठे से भूमि को कुरेदती हुई मौन कुछ कहने लगीं। इसमें कुछ आश्चर्य भी तो नहीं! पूज्यपाद गुरुदेव जैसा बलिष्ठ और यौवन से भरपूर शरीर किसी अन्य योगी और सन्यासी का सिद्धाश्रम में है भी तो नहीं। **असीम तप के कारण जिस प्रकार की मधुर देह गंध उनके रोम - रोम से निःसृत होती है, जैसा वेग और आनन्द का प्रवाह उनके रग- रग में है, जैसी प्रकृति से एकरसता उनकी आंखों में रंग बनकर समाई है उससे तो साधिकाएं और अप्सराएं ही नहीं साधक भी ठिठक कर खड़े हो जाते हैं।** मैंने अनुभव किया कि पूज्यपाद गुरुदेव का सम्पूर्ण शरीर ही इस प्रकार सम्मोहनमय है कि कोई भी व्यक्ति उनके शरीर का कोई एक भाग देखकर भी सम्मोहित होने की स्थिति में आ जाता है।

स्वामी कैवल्यानन्द जी के साथ मैं सिद्धाश्रम की पावन धरती का स्पर्श करता रहा। **वहां के कण- कण में बिखरी ऊर्जा और प्राणों के संगीत का अनुभव करता रहा, आनन्द के अतिरेक से मेरी आंखें बन्द हो जा रही थीं।** पृथ्वी के छल- कपट, व्यभिचार, सन्देह और ऐसी ही प्रवृत्तियों का यहां कोई प्रवेश ही नहीं। साधक और साधिकाएं परस्पर बैठे बातचीत कर रहे थे, लेकिन किसी की दृष्टि में कोई ओछापन या छिछलापन नहीं। काम, क्रोध जैसे विकारों का यहां कोई प्रवेश ही नहीं। प्रत्येक साधक अपने ढंग से जीवन जीने के लिए स्वतन्त्र होते हुए भी अपने- आप को अनुशासन में बांध कर रखता है। इसी से यहां प्रेम और आनन्द की छलछलाहट कभी भी कम नहीं होती। परिचय- अपरिचय जैसी यहां कोई स्थिति ही नहीं। प्रत्येक साधक किसी दूसरे साधक या साधिका को देखकर नेत्रों के माध्यम से ही एक क्षण में परिचय और प्रेम का आदान-प्रदान कर देता है और सदैव एक अनोखे से आनन्द में लीन रहता है बिना किसी तनाव व चिन्ता के. . .

फिर आज तो उत्सव का दिन था! पूज्यपाद गुरुदेव के सिद्धाश्रम में पधारने पर सायं मंगल उत्सव का आयोजन था जिसमें प्रमुख देवांगना उर्वशी व मेनका का नृत्य सम्पन्न होना था। उन्होंने स्वेच्छा से ऐसा करने के लिए आयोजक मण्डल के सामने प्रस्ताव रखा था और ऐसा भी अनुमान था कि पूज्यपाद दादा गुरुदेव परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी भी इस आयोजन में पधारने की कृपा करेंगे। ये सब बातें मुझे रास्ते में चलते हुए स्वामी कैवल्यानन्द जी से ज्ञात होती रहीं।

मधुर गुनगुनाहटों के साथ ही उतने ही सुन्दर पुष्पों को लेकर साधिकाएं ज्यों अपने प्रेम के धागे में ही पुष्पों को नहीं अपने मन के भावों की मालाएं बना रही थीं और देवांगनाएं अपने अंग - अंग को ही पुष्प माला के रूप में सजाने - संवारने में व्यस्त थीं। आभूषणों और लज्जा से अपने सम्पूर्ण नारीत्व को झलकाने का प्रयास कर रही थीं। प्रत्येक एक दूसरे से कुछ आगे बढ़ जाने की चेष्टा में संलग्न होती हुई अपने को अधिक से अधिक मादक व उत्तेजक दिखाने के प्रयास में संलग्न थी। श्रृंगार से उनके क्षीण कटि और उन्नत वक्ष स्थलों का सौन्दर्य खिलता ही जा रहा था। **प्रकृति प्रदत्त सरस देह को वे एक प्रकार से व्यर्थ में ही संवारने का प्रयास कर रही थीं, क्योंकि प्रकृति ने स्वयं ही उनकी देहयष्टि इतनी मादक और उत्तेजक गढ़ी है कि वे अपने कटाक्षों व मुख मुद्रा से ही किसी भी पुरुष का संयम भंग कर देने में समर्थ हैं।**

स्वामी कैवल्यानन्द जी के साथ ऐसी रूपसी, यौवनवती अप्सराओं का सौन्दर्य निहारता हुआ मैं वहां तक जा पहुंचा जहां ताम्र वर्णीय आभा से युक्त एक अत्यन्त विशाल वृक्ष स्थित था। स्वामी कैवल्यानन्द जी ने मुझे बताया कि **यह वही मूल कल्पवृक्ष है जिसकी चर्चा पुराणों में मिलती है,** और जिसके नीचे खड़े होकर जो भी कामना की जाए वह उसी क्षण पूर्ण हो जाती है। मेरे जीवन की समस्त इच्छाएं तो गुरुदेव सदृश्य कल्पवृक्ष के नीचे पूर्ण हो चुकी थीं, फिर भी मैंने मन में एक इच्छा की, कि गुरुदेव को शास्त्रों में ब्रह्म कहा गया है, क्या वह ब्रह्म इस प्रकट स्वरूप से कुछ भिन्नता लिए हुए होता है? **ठीक उसी क्षण मेरे समक्ष पूज्यपाद गुरुदेव का वह रूप झिलमिला उठा जो उनका ब्रह्म स्वरूप है, असीम सौन्दर्य युक्त, तप की पराकाष्ठा , पितृत्व व मातृत्व का ऐसा अनोखा संगम जिसके लिए कोई उपमा ही नहीं , असीम करुणा से निहारती ऐसी दृष्टि जिसे याद करके जब - तब मेरी आंखों में आंसू छल-छला आते हैं।** मेरी आंखों से अविरल अश्रु धारा वह उठी और मैं पता नहीं कब तक उसी अवस्था में समाधिस्थ रहा।

जब मेरी आंख खुली तो दिन का तीसरा प्रहर समाप्ति की ओर अग्रसर था। स्वामी जी मेरे बगल में मन्द-मन्द मुस्कराते हुए आसन पर स्थित थे।

सिद्धाश्रम प्राप्ति सम्भव है. . . यदि सद्गुरुदेव की विशेष कृपा हो और शिष्य का भी पूर्ण समर्पण हो . . . जिससे वह कुतर्क छोड़ गुरुचरणों में लीन हो सके . . .

अब मंगल उत्सव के प्रारम्भ होने में थोड़ी ही देर रह गयी थी और वे मुझे आयोजन स्थल की ओर ले बढ़ चले। सामने विशाल मंच पर शुभ्र श्वेत चादर बिछी हुई थी और उसके ऊपर सुनहरे तारों से श्रृंगारित चन्दोवा तना हुआ था। पूरे मंच का श्रृंगार विविध पुष्पों से किया गया था। मध्य में पूज्यपाद दादा गुरुदेव का स्थान था, तथा उससे कुछ नीचे सिद्धाश्रम के चयन मण्डल के समस्त महायोगियों का आसन लगा था। स्वामी विज्ञानानन्द जी, त्रिजटा अघोरी जी सहित पूज्यपाद गुरुदेव का आसन भी उसी मण्डल में था।

धीरे - धीरे रात हुई और समस्त सिद्धाश्रम के वन्दनीय व पुण्य स्मरणीय व्यक्तित्व एकत्र हुए। पूज्यपाद गुरुदेव एवं पूज्यपाद दादा गुरुदेव भी इस विशेष अवसर पर पधारे। समस्त ऋषि मण्डल ने अपना स्थान ग्रहण किया तथा उर्वशी व मेनका द्वारा मंगलाचरण व अभ्यर्थना से समारोह का प्रारम्भ हुआ। संक्षिप्त आशीर्वचन हुए और सिद्धाश्रम में एक नए प्रवेश को लेकर हर्ष व्यक्त किया गया। पूज्यपाद गुरुदेव एवं समस्त ऋषि मण्डल ने मुझे अपने आशीर्वाद और कृपा से आपूरित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए और धीरे- धीरे करके रात्रि का समापन निकट आ गया। पूज्यपाद गुरुदेव केवल चौबीस घण्टे के लिए ही अपने भौतिक जगत के कार्यों को छोड़कर आए थे, और अब उन्हें अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए, इस धरा पर अध्यात्म के प्रसार तथा भारतीय विद्याओं की पुनर्स्थापना के लिए वापस उसी झुलसते हुए संसार में जाना था। साधक और साधिकाओं की आंखें बिछोह की कल्पना करके भर आयीं।

प्रातः हुई और मैंने भी पूज्यपाद गुरुदेव के साथ उस दिव्य स्थली से विदा ली, किन्तु इसे विदा न कह कर एक प्रारम्भ ही कहना चाहिए, क्योंकि अपने चर्म चक्षुओं से ऐसी दिव्य स्थली को देखने के बाद ही मेरे मानस में स्पष्ट हो सका कि पूज्यपाद गुरुदेव का व्यक्तित्व और स्थान कितना उच्च है, हमारे जीवन में आध्यात्मिकता का क्या महत्व है, इस मल - मूत्र और भोग - विलास से उठकर सिद्धाश्रम तक पहुंचने में जीवन की क्या श्रेयता है। **बाद में पूज्यपाद गुरुदेव को दादा गुरुदेव की आज्ञा से गृहस्थ में जाना पड़ा और भौतिक जगत में वे डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के रूप में जाने गए, किन्तु वे हम अकिंचन शिष्यों को आनन्द और दिव्यता की ऐसी पूंजी सौंप कर गए, जिससे हम सभी चिर ऋणी और कृतज्ञ हैं।** ★

योगी तो ऐसे ही होते हैं

हवा के झोकों की तरह ही उड़ते-फिरते योगी भी क्या कभी कहीं टिक सके हैं? क्या बांध सका है उनको, और कहां नहीं जा सकते उनके कदम . . . लेकिन यहां . . . यहां कुछ ऐसा था जो बांध ले गया उस विलक्षण योगी को . . . छोटी-सी कुटिया जिसे सिर पर छाई एक छत कहना ही ज्यादा ठीक रहेगा, क्योंकि उसमें दरवाजे जैसी कोई आड़ या बाधा ही नहीं **. . . हवा के झोकों, कुत्ते, सियार किसी के लिए भी कोई प्रतिबन्ध नहीं . . .** दूर से आती विलाप की करुण ध्वनि और भयावहता से सहम कर दीपक भी बुझने-बुझने को हो गया, मध्यम पड़ती जा रही दीपक की लौ से अंधेरा धना होते हुए भी मन में अपूर्व शान्ति देता जा रहा था, मानों सारे विषाद, ताप और वेदनाएं उसी अंधकार में, दीपक की शान्त होती हुई लौ में सिमट कर धुल-मिल जा रही हों, और पीछे रह जाने वाला एक शून्य . . . ठीक इसी अंधकार की ही भांति शान्त और निःशब्द!

योगी और श्मशान– कोई नई बात नहीं। मन का एकान्त जब बहुत धना हो जाता है तब साधक श्मशानों में ही जीने का मन बना लेता है। छोटे-मोटे जीवन के नृत्य देख लेने के बाद ही वह देखने की इच्छा होती है जो महारास हो, जहां जीवन का हाथ पकड़ कर मृत्यु प्रतिक्षण प्रचण्ड वेग से नाच रही हो, बिना रुके, बिना थके, चिता की लपलपाती जिह्वाओं से जीवन को आत्मसात कर लेने के लिए व्यग्र और ऐसा नित्य सम्भव होता है महाश्मशान में।

मां तारा का स्थान! फिर वामाखेपा का चैतन्य किया अद्‌भुत और अलौकिक दिव्य स्थान, सियार, कुत्तों, गिद्धों और ब्रह्म राक्षसों, भूत-प्रेतों से भरा महास्थल . . . **जीवन भर जिसे कहीं आराम न मिला हो मानों वह यहीं चला आया हो . . .** एक-एक शव के लिए लड़ते और बोटियां लेकर भागते कुत्तों का कलरव ही जहां संगीत की तरह बज रहा हो। भारी पंखों से वृक्षों पर फड़फड़ाते गिद्ध और ठण्डी हो गई चिता से उठती धूम्र की अन्तिम नीली रेखा शून्य में जाकर विलीन होती हुई ज्यों कह रही हो कि वस अव इस मृतक का जो शेष रह गया था उसे लेकर मैं ऊपर आकाश तत्व में मिलाने ले जा रही हूं . . . किसी के लिए वीभत्सता से भरा दृश्य और किसी के लिए अपूर्व शान्तिदायक!

मां तारा और वामाखेपा . . . पूर्वी भारत का एक ऐसा व्यक्तित्व जिसकी अचरज भरी कथाएं आज तक बंगाल और बिहार के बीच मां तारा के स्नेह और अपने अधपगले शिशु के प्रति व्यक्त किए गए दुलार की फैली हुई हैं, और उस महायोगी को स्थान भी रास आया तो कौन-सा . . . किसी वृक्ष का छांव नहीं, शीतल और आनन्द से भरी कोई सुरम्य स्थली नहीं, प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा कोई पर्वत शिखर नहीं, वरन् एक महाश्मशान . . .

♦ ♦ ♦

फिर भी यह एक पूजा की ही वेदी है। अधजले शव के शरीर से उठती धूप की सुगन्ध, रक्त का कुंकुम और भस्म का श्रृंगार पुष्पों के स्थान पर बिखरी हुई हड्डियां . . . क्या पता यहां किस की नित्य आराधना होती है? महाकाल की या महाकाल पर भी आरूढ़ होने वाली तारा की, या फिर उस साधक की ही जो जीवन के द्वन्द्वों और उलझावों से निकल कर इस चिरशांति में आ जाए **. . . खेपा अर्थात् विक्षिप्त-**ऐसी संज्ञा मिली वामाचरण को, जन्म से ही अल्पबुद्धि

हुए भी अपने-आप में खोए-खोए रहने के कारण . . . किसे पता था कि आगे चलकर ये ही वामाखेपा के नाम से अपनी धरती के गौरव और एक अजर-अमर योगी सिद्ध होंगे . . . 'अबे हट साले'! सुनने के लिए दूर-दूर से लोग उमड़ते हुए आएंगे।

उमड़ते हुए साधक ही नहीं मां तारा भी कहां छोड़ सकी अपने इस अबोध शिशु को, वामाखेपा के साथ उन्हें भी तो आकर बसना पड़ा उसी महाश्मशान में। बंगाल की धरती पर दो महापुरुष हुए और प्रायः समकालीन — एक श्री रामकृष्ण परमहंस और दूसरे वामाखेपा।

दोनों के जीवन-चरित्र और शैली में भी विचित्र साम्य रहा। दोनों ही मां के भक्त, दोनों ही अपनी आराध्या मां से लड़ने-झगड़ने और रूठने-मनाने वाले और दोनों ही नितान्त वीतरागी। कहते हैं कि अपनी मस्ती में डूबा यह अधपगला साधु अपनी इच्छा की पूर्ति में देर होते देख कर मां तारा के विग्रह पर हाथ छोड़ दिया करता था -- "जब तू जानती है कि मैं तेरे बिना नहीं खाता तो तू देर क्यों करती है।" यह कहते हुए कई-कई बार लोगों ने वामाखेपा को मां तारा के विग्रह पर हाथ छोड़ते हुए देखा, और तब मां तारा के उस विग्रह को चैतन्य होकर प्रसाद ग्रहण करना ही पड़ता था।

पूजन का कोई समय निर्धारित नहीं, वह रात में दो बजे भी हो सकता था और दिन के तीन बजे भी! **दो फूल मां को चढ़ाए और बाकी खुद को, तिलक किया तो अपना, माला डाली तो अपने गले में, प्रसाद ग्रहण कराया तो अपने ही मुख में . . . उन्हें भान ही कहां रहता था कि वे और तारा दो हैं, और तारा ने तो उन्हें कभी अपने से अलग शायद ही समझा हो।**

जिस प्रकार दक्षिण काली को पूर्ण रूप से श्री रामकृष्ण परमहंस ने अपने शरीर में समाहित कर लिया उसी प्रकार की भाव-भूमि पर पहुंच गए थे वामाखेपा और इष्ट की पूजा करते-करते इष्ट का आवेश हो जाने पर अपने ही पूजन में लीन हो जाते थे।

ऐसा नहीं कि सदैव मां के स्नेह के पात्र बनते रहे हों उन्हें भी प्रताड़ित होते हुए और मार खाते हुए देखने की घटनाएं भी मिलती हैं। कई-कई बार देखा गया कि वामाखेपा मंदिर के गर्भ-गृह में उछल रहे हैं . . . और चीख रहे हैं, नहीं अगली बार से नहीं करूंगा, और उनके शरीर पर छड़ी

"जब तू जानती है कि मैं तेरे बिना नहीं खाता तो तू देर क्यों करती है?" और यह कहते-कहते हाथ छोड़ दिया उस अध पगले साधु ने तारा की मूर्ति पर और विग्रह चैतन्य होकर प्रसाद ग्रहण करता भी था. . .

के निशान पड़ते जा रहे हैं।

रूठ गए तो श्मशान की कुटी तो थी ही जो आज नरमुंडों से स्थापित है, जिसे बांधने के लिए मनुष्य की अंतड़ियों की रस्सी बनाई गई है। मां तारा के इस चैतन्य पीठ में शायद ही कोई साधक होगा जो उग्र तारा की साधना सम्पन्न कर सके। वशिष्ठ जैसे महायोगियों की भी साधना स्थली रही है रामपुर का यह शक्तिपीठ। महर्षि वशिष्ठ द्वारा स्थापति पंचमुण्डी आश्रम को वामाखेपा ने अपने प्रयासों द्वारा लक्षमुण्डी में परिवर्तित किया था।

अधपगला चरित्र रहा हो या अपनी मस्ती में डूबा रहने वाला या मां तारा के प्रति नितांत शिशुवत लेकिन ऐसे ही योगी युगों-युगों तक के लिए किंवदन्ती बनकर रह जाते हैं, और अपने स्पर्श से इस धरा को चैतन्य कर जाते हैं। जनमानस के हृदय में बस जाते हैं, उनके आत्मीय और अविभाज्य बन जाते हैं, कितने ही कितनों के मन पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं, **और जाने के बाद भी वास्तव में जाते नहीं, रह जाते हैं सदा-सदा के लिए।**

भारत के अद्भुत योगियों में वामाखेपा का सरल चरित्र और विलक्षण सिद्धियां ऐसी ही घटना है, कहते हैं कि वे पूर्वजन्म के एक उच्चकोटि के साधक थे तभी इस जन्म में योग की ऐसी ऊंचाई प्राप्त कर सके। श्मशान को ही अपना वास बनाया और कुत्ते, बिल्ली, सियार, गिद्ध को ही अपना साथी समझा। कुत्ते के मुंह से लेकर रोटी खा लेना और अपनी थाली में कुत्तों को बैठा कर खिलाना, यह उनका सबसे प्रिय कार्य था . . . देखने वाले का मन घृणा से भर जाता था लेकिन वही व्यक्तित्व जब उन्हें उपदेश देता था तो उससे ज्यादा सुखद भी कुछ नहीं लगता था।

इसी से वामाखेपा अपने जीवन काल में ही एक किंवदन्ती बन गए थे।

'श्रीविद्या'
महत्व और रहस्य

● डॉ. रामदास शर्मा
रायपुर

संसार की समस्त विद्याओं का सार "श्री विद्या" में संनिहित है। सृष्टि के मूल में यही श्री विद्या है। ऋग्वेद के श्री सूक्त में इस विद्या की अधिष्ठात्री देवी को "हिरण्यवर्णा" निरूपित किया गया है। "हरिण" की भांति सुन्दर उनकी आंखें हैं। पीताभ-रंजित वे श्रीदेवी ब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति हैं। आह्लाद को, आनन्द को श्रीदेवी का स्वरूप ही माना गया है, सृष्टि के मूल में यही आनन्द का भाव है। वे स्पृहणीय श्रीदेवी सम्पूर्ण प्राणी समुदाय को दिव्य कल्याण पथ पर अग्रसर करती है।

श्रीदेवी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की जननी है और सम्पूर्ण प्राणी-जगत के द्वारा सेवित है। वे सतत् अपने ईश्वर की सेवा करती है तथा अपने आश्रितों की प्रार्थनाएं उस ईश्वर तक संवाहित करती है। वे अपने भक्तों के दोषों का मार्जन करती है और उनके भीतर दिव्य शक्ति का संचार करती है।

ईश्वर की लीलाओं का आधार श्रीदेवी ही हैं, बिना उनके सम्पर्क के भगवान लीला कर ही नहीं सकते। वे निर्गुण है। विष्णु-पुराण में बतलाया गया है कि श्रीदेवी भगवान विष्णु की आह्लादिनी शक्ति है, यह उनका स्वरूपगत प्रथम प्रभेद है। श्रीदेवी विच्छेद रहित है और विद्या शक्ति के रूप में भगवान से सदैव अभिन्न रहती है। श्रीदेवी भोग और मोक्ष की देवी है। विष्णु-पुराण में उनकी स्तुति करते हुए कहा गया है:-

"स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः,
स कुलिनः स बुद्धिमान्।
स शूरः स च विक्रान्तो
यस्त्वया देवि वीक्षितः।।
सद्यो वैगुण्य मायान्ति-
शीलाद्या सकला गुणाः
पराङ् मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्ले!!

"– हे देवी! जिस पर तुम्हारी कृपादृष्टि है वही प्रशंसनीय, गुणी और भाग्यवान है, वही कुलीन और बुद्धिमान है, शूरवीर और पराक्रमी है, हे विष्णुप्रिये! हे जगज्जननी।। तुम जिससे विमुख हो, उसके शील-गुण अवगुण हो जाते हैं।"

वैदिक ऋचाओं और पुराण साहित्य में श्री तत्व श्री भगवत-तत्व से भिन्न नहीं है– अर्थात् शक्ति ही भगवान है, भगवान से भिन्न भगवान की भी कल्पना नहीं की जा सकती। "सर्वभूतस्थं" कहकर यदि श्री विष्णु तत्व को समस्त चेतन प्राणियों के अंतर्यामी रूप की संज्ञा दी जाती है तो "सैषा सर्वात्मिका" कहकर श्रीदेवी को और उनकी - शक्ति को सबकी आत्मा में स्थित निरूपित किया जाता है। वृहदारण्यक उपनिषद में अत्यंत रोचक किन्तु रहस्यमय शैली में कहा गया है– "स एवात्मानं द्वेधापातयत् ततः पतिश्च पतनी चा भवताम।" उस एक ब्रह्म ने पति और पत्नी – दो रूपों में अपने-आप को अवतरित किया। आर्य-मनीषा का यह सृष्टि सिद्धान्त है।

श्री विद्या की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी के रूप में आद्याशक्ति मानी जाती है। आद्याशक्ति के रूप में वे सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति की मूल कारण है, वे सृष्टि को संरक्षित भी करती है और सचेतन गति भी प्रदान करती है, तथा अंत में सब कुछ अपने ही भीतर विलय भी कर देती है। 'सहस्रनाम' सूक्तों में लक्ष्मी को मूल प्रकृति, प्रधाना, अव्यक्ता आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। ये सभी शब्द रहस्यवाची हैं। मूल प्रकृति उसे कहते हैं, जिससे सम्पूर्ण पदार्थ जगत उत्पन्न होता है। सांख्यमत उसे प्रधाना भी कहता है। सृष्टि में वह "प्रधान" है उसी से सब उत्पन्न होते हैं, और उसी में सब का लय हो जाता है। जगत की उत्पत्ति के पूर्व वह अव्यक्त रहती है, जगत के रूप में वही व्यक्त हो जाती है। यह एक अत्यंत रहस्यमयी दार्शनिक पहेली है, जिसका हल खोजना बड़ा कठिन है। यह जगत तो जड़ है। हम स्पष्टतः देखते हैं– जड़ और चेतन इस सम्पूर्ण सृष्टि में अलग-अलग दिखलाई देते हैं। द्वैतवादी सिद्धान्त में यह प्रकृति और पुरुष हैं। प्रकृति जड़ है, पुरुष चेतन है, दोनों के संयोग से सृष्टि होती है।

"श्री विद्या" के संदर्भ में हमें यह जान लेना आवश्यक है, वह जड़ प्रकृति मात्र नहीं है– वह "ब्रह्म" की माया शक्ति भी है। इसी माया शक्ति के कारण वेदान्तियों को वह संसार मिथ्या प्रतीत होता है। वहीं माया भगवान की योगनिद्रा बनकर उन्हें भी अपने वश में किए रहती है। अलग-अलग धार्मिक एवं दार्शनिक मतों में

विचार– वैभिन्नय लक्षित तो होता है, किन्तु वास्तविकता यह है कि श्री तत्व को हम भगवत रूप से अलग नहीं कर सकते। देवी सूक्तों में "अहं ब्रह्म रूपिणी" कह आद्याशक्ति स्वयं को ब्रह्म सत्ता भी निरूपित करती है। श्री तत्व के रूप में वही परम-तत्व है, उनके अतिरिक्त भगवान भी कुछ नहीं है। परंब्रह्म जब अपनी लीला के लिए प्रकट होता है तो श्री तत्व के रूप में ही प्रकट होता है। पुराणों में कहा गया है कि दैत्यों को मोहित करने के लिए भगवान ने मोहिनी का रूप धारण किया था। संसार को मोहित करने के लिए वे ही "श्री" के रूप में प्रकट हुए हैं। **विष्णु-पुराण** और विभिन्न संहिताओं में निर्दिष्ट किया गया है कि जिस तरह "विष्णु" तत्व सर्वव्यापक है, "श्री" तत्व भी सर्वव्यापक है। नारायण और लक्ष्मी सारे जगत में निष्कल स्वरूप से व्याप्त हैं।

दार्शनिक दृष्टि से पुराण-कथाओं में गहन रहस्यों का समावेश है। पुराणों में विष्णु और लक्ष्मी की दाम्पत्य चर्चाओं का वर्णन किया गया है। इस ब्रह्माण्ड में जीवात्मा की लीलाओं का जो विस्तार है, वह विष्णु और लक्ष्मी की दाम्पत्य चर्चाओं का पर्याय है। इससे सिद्ध यही होता है कि जीवात्मा ईश्वर के आश्रित होती है– लक्ष्मी की ही तरह, जो माया भी है, प्रकृति भी और शक्ति भी। वह अणु नहीं, विभु है, इसलिए उसे भी सर्वव्यापक कहा जाता है। केवल स्वरूप ही नहीं, गुण, वैभव, ऐश्वर्य, शीलादि में भी श्री तत्व और विष्णु-तत्व में सादृश्य है।

"लक्ष्मी तंत्र" में बतलाया गया है कि लक्ष्मी नित्य निर्दोष और निस्सीम कल्याण गुणों से संयुक्त होती है। वे समस्त ऐश्वर्यों की नियामिका है। ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति और तेज को धारण करने के कारण उन्हें "भगवती" कहा जाता है। पुराण-कथाएं निरर्थक नहीं हैं, उनके पीछे विज्ञान है, उसके व्यापक अन्वेषण की आवश्यकता है। विष्णु और लक्ष्मी का आसन शेष और शेष के फणों पर पृथ्वी की स्थिति पुराणों में बतलायी जाती है। वेदों में विष्णु, रुद्र, अग्नि पर्यायवाची प्रयुक्त हुए हैं। अग्नि में ऊष्मा या ऊर्जा होती है, यही उसकी शक्ति होती है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यही विष्णु और लक्ष्मी का रूप है। शेष नाग के सहस्रोंमुखों से विष की ज्वालाएं निकला करती हैं जो चतुर्दिक ब्रह्माण्ड में व्याप्त होती हैं। निश्चित रूप से यह उन जहरीले गैसों के आवरणों की ओर संकेत करता है जो प्रत्येक ग्रह या उपग्रह के चारों ओर फैले होते हैं। **आश्चर्यजनक तो यह है कि ब्रह्माण्ड के चारों ओर फैले जहरीले गैस के कणों में सृष्टि- उत्पत्ति की शक्ति होती है।** ★

सिद्धाश्रम साधक परिवार के तत्वाधान में महत्वपूर्ण

भोपाल शिविर

का सफल आयोजन

भारत के हृदय प्रान्त मध्य प्रदेश में जिस प्रकार से साधना शिविरों की अटूट कड़ी निरन्तर बनी हुई है उसके लिए वहां के सजग साधक प्रशंसा व साधुवाद के पात्र हैं, साथ ही सभी साधकों को अपने अथक परिश्रम द्वारा जिस अकेले व्यक्तित्व ने निरन्तर सूत्र बद्ध किया है उनका नाम है **श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव।**

मध्य प्रदेश की अति व्यस्त राजधानी **भोपाल में दिनांक २३.०१.९४** को साधना शिविर व दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन रख पूज्यपाद गुरुदेव का सादर निमंत्रण किया गया तथा भोपाल सक्रिय कार्यकर्त्ताओं द्वारा इस प्रयास से सैकड़ों लोग लाभान्वित हो सके। महत्वपूर्ण दीक्षाओं के अतिरिक्त इस एक दिवसीय शिविर में पूज्यपाद गुरुदेव ने सभी साधकों को **सहस्र लक्ष्मी प्रयोग** व **मनोकामना पूर्ति प्रयोग** भी सम्पन्न कराया। समाचार पत्रों एवं जन सामान्य के मध्य इसकी विशेष चर्चा रही तथा मध्य प्रदेश के प्रमुख अखबारों में इसके सचित्र विवरण प्रकाशित हुए।

श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव जी के साथ भोपाल के ही सर्व श्री टी. सुब्बा राव (तथा उनका सम्पूर्ण परिवार), कैलाश सोनी, आर. सोनी, बाल सुब्रह्मण्यम, शंकर, अमित सक्सेना, आई. एस. पद्म, साहेब लाल धुवे, गार्गव, सुनील, प्रवीन पटेल, पवन खेतान, आनन्द जेटली, वरुण तथा इंस्पेक्टर पाण्डे ने अति विशिष्ट सहयोग प्रदान किया।

यह आयोजन **टी.टी. नगर, भोपाल के कम्युनिटी हॉल** में सम्पन्न हुआ। **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की दिल्ली शाखा से श्री वासुदेव पाण्डे, रविन्द्र पाल शर्मा एवं निर्मल मेहता(बंटी) ने पूज्यपाद गुरुदेव के साथ पहुंच कर समारोह के संचालन में सक्रिय भाग लिया।

इस आयोजन की व्यवस्था एवं मध्य प्रदेश के साधकों के उत्साह को देखते हुए स्पष्ट हो गया है कि इस हीरक जयन्ती वर्ष में निश्चय ही सर्वाधिक साधना शिविरों की कड़ी मध्य प्रदेश में ही सम्पन्न होगी, जिस अनुरूप पूज्यपाद गुरुदेव ने पिछले वर्ष भिलाई में नवरात्रि के अवसर पर अपनी कृपा स्वीकृति और आशीर्वाद प्रदान किया था। ★

(पृष्ठ २३ का शेष)

पारिवारिक उन्नति के साथ-साथ, व्यक्ति का सामाजिक जीवन भी समानान्तर रूप से चलता रहता है। उस पर गृहस्थ का दोहरा दायित्व होता है। वह जितने अंशों में पारिवारिक होता है, उतने ही अंशों में उसे सामाजिक भी होना ही पड़ता है। सामाजिक जीवन में अनावश्यक विवाद, शत्रु-बाधा, सहयोगियों से तनाव जैसी कई समस्याओं से उसको नित्य-प्रति के जीवन में उलझना पड़ता है। यह माला ऐसे अवसरों के लिए भी पूर्ण रूप से सफलतादायक है, क्योंकि जिस व्यक्ति में लक्ष्मी-तत्व समाहित हो जाता है, उसे स्वतः ही **यश-लक्ष्मी** प्राप्त होती है, उसे **राज्य-लक्ष्मी** भी प्राप्त होती है, और लक्ष्मी के इन श्रेष्ठ स्वरूपों के रहते व्यक्ति के सामाजिक जीवन में फिर बाधाएं उपस्थित हो ही नहीं सकतीं। यदि कोई विरोध करता भी है तो स्वतः ही वह निस्तेज हो उठता है। **घोर से घोर विरोधी भी ऐसी माला धारण करने वाले के सामने हकलाने से लग गए देखे गए हैं।**

व्यक्ति के सम्पूर्ण क्रिया-कलापों को किसी परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता। यह नहीं कहा जा सकता कि व्यक्ति को जीवन में केवल इतने-इतने कार्यों, इतनी-इतनी बाधाओं से ही निपटना होगा। नित्य जटिल होते जा रहे पारिवारिक व सामाजिक जीवन में एक के बाद एक नित्य नए पहलू प्रकट हो रहे हैं, किन्तु इनका निदान तो एक उपाय से किया जा सकता है और उसका उपाय है जीवन में ऐसे श्रेष्ठ देवी बल का प्रवेश, जो सभी बाधाओं को एक ओर झटक दे। **लक्ष्मी वर-वरद माल्य** शरीर व मानस में निरन्तर ऐसी ही दैवी ऊर्जा प्रवाहित करने की क्रिया है।

व्यापार वृद्धि के क्षेत्र में भी इस माला का अद्‌भुत प्रभाव देखा गया है। अनुभव में आया है कि व्यापारी बन्धुओं ने (अथवा जिन साधकों एवं शिष्यों का जीवनयापन किसी व्यवसाय से होता है उन्होंने) इस माला को धारण करने के पश्चात् न केवल अपने-आप में सम्मोहन सा भर लिया, वरन् ऐसा लगता है कि उन्होंने मनकों के रूप में लक्ष्मी को भी अपनी दुकान में बांध सा लिया है। जो प्रभाव उन्हें श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र, कुबेर यंत्र स्थापित करने से मिले थे, उससे भी कहीं अधिक तीव्र प्रभाव इस माला के धारण करने से प्राप्त हुए हैं। **गुड़गांव** के एक प्रमुख उद्योगपति ने पूज्य गुरुदेव के निर्देश पर यह माला यों ही धारण कर ली, और एक सप्ताह के भीतर-भीतर स्वतः ही उसकी फैक्टरी में चली आ रही श्रमिक समस्या हल हो गई।

इस माला के अनेक लाभ सम्भव हैं, जिनसे व्यक्ति का जीवन सुखी एवं सफल हो उठता है। ऐसी माला का नित्य दर्शन और धारण अपने-आप में पुण्यदायी कार्य है, जिसमें न किसी लम्बी-चौड़ी साधना की आवश्यकता है और न किसी आडम्बर की। यह तो एक ऐसी विशिष्ट माला है कि इसे घर का प्रत्येक सदस्य धारण कर सकता है। घर के मुखिया के साथ-साथ उसकी पत्नी को भी यही माला धारण करना अति-आवश्यक रहता है क्योंकि लक्ष्मी स्त्री स्वरूपा है और इसी से वह घर की स्वामिनी में सहज रूप से समाकर घर का सर्वांगीण विकास करती है। यह माला न केवल व्यक्ति को धन-धान्य और लक्ष्मी के विविध स्वरूपों में लाभदायक सिद्ध होती है वरन् ऐसी माला का निरन्तर वक्षस्थल पर स्पर्श उसे नव-जीवन-प्रदाता और रोगों से मुक्ति के साथ ही साथ आध्यात्मिक लाभ भी देने वाला है। भारतीय चिन्तन के अनुसार *नाभि से लेकर कंठ प्रदेश तक का सारा शरीर, भगवान विष्णु का क्षेत्र है अतः इस स्थान पर निरन्तर लक्ष्मी का,* ***वर-वरद माल्य*** *का सुखद व पवित्र स्पर्श, व्यक्ति के जीवन में, लक्ष्मी-नारायण की संयुक्ति का पुण्य देता है।* वक्षस्थल का प्रदेश न केवल भगवान विष्णु का क्षेत्र है, वरन् इसी प्रदेश में ही समस्त देवी-देवताओं का भी निवास है।

सिद्ध सफल प्रयोग

विश्व की अलौकिक और सुन्दरतम मालाओं में से **स्फटिक मणि माला** भी एक माल्य है। केवल स्वयं के सौन्दर्य से ही नहीं अथवा व्यक्ति के शारीरिक सौन्दर्य को भी बढ़ाने के दृष्टि से ही नहीं वरन इसी पर कई अचूक प्रयोग भी आजमाए जा सकते हैं और यह माल्य भी न केवल लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों को प्रदान करने वाली है वरन जीवन की कई समस्याओं में भी वरदायक है और सही अर्थों में वर - वरद भी है। गृहस्थ के लिए तो माल्य से भी अधिक सहयोगिनी है।

इसी एक **स्फटिक माल्य** पर जो प्रयोग सम्पन्न किए जा सकते हैं वे हैं —

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए –

मंत्र –

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।।

व्यापार वृद्धि के लिए–

मंत्र –

ॐ क्लीं व्यापारोन्नति ह्रीं नमः।।

शत्रु नाश के लिए –

मंत्र –

ॐ क्लीं हुं मम(अमुक) शत्रुन्नाशयति हुं फट्।।

रोग मुक्ति के लिए –

मंत्र –

ॐ वं मम देह चैतन्य जाग्रय ह्रीं हुं नमः।।

गड़ा हुआ धन प्राप्त करने के लिए –

मंत्र –

ॐ हां शतपत्रिके हां ह्रीं श्रीं स्वाहा।।

उपरोक्त सभी प्रयोगों में मंत्र भिन्न हैं किन्तु साधना विधि समान ही है जिन्हें स्थापन के साथ उचित दिवस पर जप करने से अनुकूल लाभ प्राप्त होता है।

होली विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
लघु मोती शंख	५	१२०/-
मूंगे की माला	६	१५०/-
तांत्रोक्त नारियल	६	१५०/-
दस तांत्रोक्त फल	६	२१०/-
काली हकीक माला	६	१५०/-
जड़ावुल गुटिका	८	१२०/-
वैधृतिनाथ गुटिका	९	१५०/-
सफेद हकीक माला	९	१५०/-
चौरंगीनाथ गुटिका	९	१२०/-
कापालिक ताबीज	९	२१०/-
उड्डीश गुटिका	१६	१२०/-
लक्ष्मी वर वरद माल्य	२३	२४०/-
विश्वावसु मणि मुद्रिका	३०	१२०/-
लघु भुवनेश्वरी यंत्र	३०	२४०/-
दस महाविद्या यंत्र	३२	५००/-
शक्ति माला	३२	२४०/-
गुरु यंत्र	३३	३३०/-
सिद्धाश्रम गुटिका	३५	६०/-
कल्पवृक्ष गुटिका	३५	१२०/-
सिद्धिप्रद गुटिका	३५	१००/-
रश्मि माल्य	३८	२४०/-
तारा महायंत्र	३९	३३०/-
तारा माला	३९	१५०/-
बीसा यंत्र मुद्रिका	४४	६०/-
विक्री वर्धक यंत्र	४४	२४०/-
गर्भ रक्षा यंत्र	४४	२४०/-
रोगहरण यंत्र	४४	२४०/-
नेत्र रोग निवारण यंत्र	४४	२४०/-
सर्वकार्य सिद्धि यंत्र	४४	२४०/-
भागे व्यक्ति को लौटाने का यंत्र	४४	२४०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
जैवेह ताबीज	४४	१५०/-
श्री यंत्र	४६	३००/-
श्री चक्र	४७	२४०/-
लघु चरण पादुका यंत्र	४८	१५०/-
कामकला माला	४८	१५०/-
पांच तांत्रोक्त फल	४९	१०५/-
एक वज्रधारिणी	४९	५१/-
नीली हकीक माला	४९	१५०/-
नवकूटा गुटिका	४९	१२०/-
कराला	४९	१२०/-
लघु दक्षिणावर्ती शंख	५०	२१०/-
ग्यारह गोमती चक्र	५०	१२१/-
वार्ताली चैतन्य	५०	१२०/-
१६ कमल गट्टा बीज	५१	४५/-
लघु मातंगी यंत्र	५१	१२०/-
राजराजेश्वरी माला	५१	३००/-
एक भैरव गुटिका	५६	१५०/-
एक मधुरूपेण रुद्राक्ष	५६	१००/-
दस हकीक पत्थर	५६	११०/-
रुद्राक्ष माला	५६	३००/-
शत्रु बाधा निवारण यंत्र	५६	२४०/-
हकीक माला	५६	१५०/-
पांच सिद्धि फल	५६	१०५/-
स्फटिक माला	५७	२१०/-
लक्ष्मी प्राकाम्य	५७	२४/-
कमल गट्टा माला	५७	१५०/-
एक चित्रित	५७	१००/-
अक्षय पात्र	६८	१५०/-
स्फटिक मणि माला	७९	३००/-

दीक्षा	
सामान्य दीक्षा	४८०/-
शाम्भवी दीक्षा	१५००/-
सम्मोहन दीक्षा	३०००/-
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा	३५००/-
राजयोग दीक्षा	६०००/-
क्रिया योग दीक्षा	६०००/-
मनोवांछा पूर्ति दीक्षा	२४००/-
चैतन्य दीक्षा	२१००/-
गुरु प्राण स्थापन दीक्षा	१५००/-
रसेश्वरी दीक्षा	२१००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	३१००/-
षट्चक्र भेदन	३६००/-
भविष्य सिद्धि दीक्षा	५१००/-
रोग मुक्ति दीक्षा	२१००/-
कायाकल्प दीक्षा	५१००/-
मानसिक शारीरिक रोग मुक्ति दीक्षा	३१००/-
जीवन मार्ग दीक्षा	६००/-
ज्ञान दीक्षा	६००/-
सर्व साधना सिद्धि दीक्षा	३१००/-
अप्सरा दीक्षा	२४००/-
यक्षिणी दीक्षा	२४००/-
प्रिय/प्रिया वशीकरण दीक्षा	२४००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	१५००/-
ऋण मुक्ति दीक्षा	५१००/-
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा	३५००/-
मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा	३१००/-
गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा	३६००/-
सिद्धाश्रम प्राप्ति दीक्षा	३५००/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पताः-

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१(राज.), टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६, कोहाट इन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

पुण्यभागी होंगे वे :

ऐसे सभी सक्रिय साधक और शिष्य पुण्य भागी हैं और उनका मानव जीवन निश्चित रूप से ऐसे चिरस्मरणीय उत्सव में संलग्न होकर सफल होने जा रहा है। वे सभी गुरु आशीर्वाद के सुपात्र होंगे जिनके दिन-रात अथक परिश्रम से एक विशाल साधना शिविर आयोजित होने जा रहा है, क्योंकि यह तो शिष्यों का राष्ट्रीय स्तर पर महापर्व है।

यह महोत्सव का अवसर भी है, साथ ही साधना शिविर भी। सजग शिष्यों और आयोजकों को इस बात का भी श्रेय जाता है कि उन्होंने पूज्यपाद गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना कर उनकी कृपा स्वीकृति भी ले ली है कि साधक वे सभी दीक्षाएं प्राप्त कर सकेंगें जिनकी उन्हें अपने जीवन में लालसा है और जिन्हें वे पिछले वर्ष या इस वर्ष सिद्ध मुहूर्तों पर उपस्थित नहीं होने के कारण लेने में अक्षम रहे **क्योंकि गुरु जन्मदिन से बड़ा सिद्ध मुहूर्त और हो भी क्या सकता है?**

और ये दुर्लभ दीक्षाएं:

गुरु पूर्णिमा के समान ही पावन दिवस इस **सिद्धिप्रद मुहूर्त** जन्म दिन पर जो दीक्षाएं साधक प्राप्त कर सकेंगे, उनमें से कुछ हैं –

ज्ञान दीक्षा, जीवन मार्ग दीक्षा, शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, शाम्भवी दीक्षा, मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, गुरु प्राण स्थापन दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, धनवन्तरी दीक्षा अथवा साधक की मनोवाछित कोई भी दीक्षा।

महोत्सव का उल्लास:

प्रारम्भ के तो पूरे तीन दिन एक अजीब सी मस्ती और खुमारी में भरे होंगे। जिनमें साधना की गरिमा होगी, उत्सव के रंग होंगे और इन सभी से बढ़कर पूज्यपाद गुरुदेव की साक्षात् उपस्थिति का अनोखा रस होगा। ये सभी दिन एक - एक क्षण जीते हुए साधक के उस आनन्द को प्राप्त कर सकेगा जिसे प्राप्त करने के लिए ही पूज्यपाद गुरुदेव ने इस वर्ष को **उत्सव वर्ष** की संज्ञा दी है।

गुरु कृपा का अवसर है यह:

इस गुरु - कृपा में ही वह मूक आमंत्रण छुपा है जिसमें पूज्यपाद गुरुदेव अपने जन्म दिन का बहाना बनाकर अपने शिष्यों के जीवन को संवारने का क्रम करने जा रहे हैं, जब समुद्र ने आगे बढ़कर नदियों को गले से लगाना चाहा है, शिष्यों के हृदय में जो आनन्द की पवन बही है उसमें सुगन्ध ने अपना प्रभाव घोलना चाहा है, जो कदम थक गए हैं उनको त्वरा देना चाहा है, क्योंकि यह बस एक साधना शिविर या एक विशाल आयोजन मात्र ही नहीं है, परिवार के उत्सव के क्षण हैं और **सिद्धाश्रम साधक परिवार के प्रत्येक सदस्य के चेहरे पर मुस्कराहट लाना ही सही उद्देश्य है,** तभी तो इस महोत्सव की सार्थकता होगी, तभी तो हम सभी मिलकर आनन्द में झूमते हुए, नृत्य व संगीत में खोते हुए रंगों में अपने-आप को रंगते हुए अपने पूज्य गुरुदेव के इस धरा पर आगमन का दिवस उल्लासमय बना सकेंगे।

इसी शुभ कामना और इसी आशा के साथ हम सभी आपको इस महोत्सव में आने का हृदय से निमन्त्रण दे रहे हैं।

सम्पर्क

डॉ.एस.के. बनर्जी, आनन्द होम्यो हाल, फैजाबाद(उ.प्र.), फोनः(०५२७) ८१२५६५, ८१४०५२
श्री एस.के. मिश्रा, ३१७, मधवापुर, इलाहाबाद (उ.प्र.)
श्री. एस.पी.बंगर, १००, एच.आई.जी., प्रीतम नगर, इलाहाबाद (उ.प्र.), फोनः०५३२-६३३५६०
श्री एस.सी. कालरा, अमेठी टेक्सटाइल, जगदीशपुर, सुल्तानपुर (उ.प्र.), फोनः(०५३६) ७२१६,७२३७
श्री वेद प्रकाश शर्मा, सी-२१/११, पेपर मिल कॉलोनी, निशातगंज, लखनऊ (उ.प्र.)
श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह, द्वारा- ए.डी.ओ. पंचायत, विकास खण्ड, भावल खेड़ा, शाहजहांपुर (उ.प्र.)
श्री एल. डी. सिंह, १२८, डी. ८०, किदवई नगर, कानपुर (उ.प्र.), फोनः(०५१२) २७१०८५,२६८५७५

शिविर शुल्क - ६६०/-

आयोजन स्थल : मिन्टो पार्क, इलाहाबाद

जीवन का षटचक्र भेदन
इन्हीं छः दिनों में!

मानव शरीर की ही तरह इस जीवन रूपी शरीर के भी एक चक्र विकसित होने की क्रिया
जिससे आन्तरिक और बाह्य जीवन खिल सके

(०३.०४.९४) कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, षटचक्र भेदन एवं भविष्य सिद्धि दीक्षा

ये दीक्षाएं - आध्यात्मिक जीवन को संवारने तथा
भविष्य- ज्ञान व भविष्य- कथन की विद्या प्राप्त करने के लिए

(०४.०४.९४) रोग मुक्ति दीक्षा, कायाकल्प दीक्षा, मानसिक शारीरिक रोग मुक्ति दीक्षा

शारीरिक सौन्दर्य, सुरक्षा व निरोगी काया के लिए
अलग-अलग परिस्थितियों के अनुरूप तीन प्रकार की दुर्लभ दीक्षाएं

(०५.०४.९४) जीवन मार्ग दीक्षा, ज्ञान दीक्षा, सर्वसाधना सिद्धि दीक्षा

साधनाओं में तीर की तरह गति प्राप्त करने के लिए, सिद्धियां और सफलता
प्राप्त करने के लिए साधक के विवेकानुसार तीन दीक्षाएं एक ही दिवस में

(०६.०४.९४) अप्सरा दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा, प्रिय / प्रिया वशीकरण दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा, आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा

सौन्दर्य, प्रेम में सफलता, अनुकूल विवाह, सफल गृहस्थ जीवन, सुख- समृद्धि
एवं किसी विशिष्ट अप्सरा/ यक्षिणी की सिद्धि प्राप्त करने का दुर्लभ अवसर

(०७.०४.९४) मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा

जब कोई कार्य विशेष हो तो, उसे सफल किया जा सकता है
केवल इसी दीक्षा से अपनी गुप्त इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए

(०८.०४.९४) गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा, सिद्धाश्रम प्राप्ति दीक्षा

सर्वाधिक दुर्लभ व अतिविशिष्ट दिवस, इस विशेष
हीरक जयन्ती वर्ष पर पूज्यपाद गुरुदेव का आशीर्वाद युक्त उपहार

ये छः साधारण दिवस ही नहीं, जीवन के चक्र में एक-एक पद्म खिलाने की विधि है। पूज्यपाद गुरुदेव के जन्मोत्सव में प्राप्त होने वाली विशिष्ट तंत्र दीक्षा की प्रारम्भिक स्थिति है, जिससे साधक इस वर्ष विशेष में अपनी मनोवांछित सफलता निश्चित रूप से प्राप्त कर ही ले।

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६,कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८

नोट : ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम"
दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों पर प्रदान करेंगे।